ने (जोकि ग्वालियर का रहने वालाथा) बनाई, इसमें ७०० दोहे व्रजभाषा में लिखे हैं।

प्रा० सतहत्तर—(सं० सप्तसप्तति, सप्त=सात, सप्तति=सत्तर) गु० सत्तर और सात।

प्रा० सताना—(सं० सन्तापन, सम्=साथ, तप्=तपाना) क्रि० स० दुःखदेना, छेड़ना, खिजाना, तकलीफ देना।

प्रा० सतानन्द—(सं०शतानन्द)पु० गौतम ऋषि का बेटा और जनक राजा का पुरोहित।

सं० सती—(सत्) स्त्री० पतिव्रता स्त्री धर्मात्मा स्त्री, २ वह स्त्री जो अपने पति की लाश के साथ जलजाती है, ३ दक्ष की बेटी और महादेव की पत्नी जो अपने बाप के अपमान करने से उसके यज्ञकुंड में गिर कर जल मरी और कहते हैं कि वही सती फिर हिमाचल के घर में पार्वती होकर जन्मी।

प्रा० सतुआ | **सत्तू** (सं०शक्तु या सक्तु) पु० भूंजे अनाज का चून, सातू।

सं०सत्कर्म—(सत्=सच्चा या अच्छा कर्म=काम) पु० भलाकाम, अच्छा काम, पुण्य, पवित्र काम, नेककाम, सच्चाकाम।

सं० सत्कार—(सत्=आदर, कृ=करना) पु०आदर,सन्मान,खातिर।

सं० सत्क्रिया—(सत्=अच्छा, कृ=करना) स्त्री० सत्कार, सन्मान, पूजन, उत्तम काम।

प्रा० सत्तर—(सं० सप्तति) गु० दश गुना सात,सात दहाई। [सीधा।

सं० सत्तम—गु० बड़ा साधु, अति

सं० सत्र—(सद्=चल) पु०स्थान, यज्ञ, सदा दान,आच्छादन,ढांपना, अरण्य, कैतव, कपट, धन, गृह,सर, तालाब।

सं० सत्रशाला—स्त्री० अन्नजलादि के देनेका स्थान, धर्मशाला।

सं० सत्राजित—पु० श्रीकृष्ण का श्वशुर, सत्यभामा का पिता।

सं० सत्रिन्—पु० गृहस्थ, यजमान, दानी।

प्रा०सत्ता[1]—(अस्=होना) स्त्री०होना विद्यमानता,२ बल, पराक्रम, जोर, ३ भलाई, उत्तमता।

प्रा० सत्ताईस—(सं०सप्तविंशति) गु० बीस और सात।

प्रा० सत्तानबे—(सं०सप्तनवति)गु० नब्बे और सात।

प्रा० सत्तावन—(सं० सप्तपञ्चाशत्) गु० पचास और सात।

प्रा० सत्तासी—(सं० सप्ताशीति) गु०

१ अस्तीतिसत्सतोभावःसत्ता=आत्मधारणानुकूलव्यापारः॥

अस्सी और सात ।

सं० सत्त्व-(सत्) पु० सतोगुण, २ अतिबल, जोर, ३ चीज़ वस्तु, ४ सार, ५ प्राण, ६ व्यवसाय, उद्यम, ७ हृदय, ८ सांख्य, नेचर ।

सं० सत्यपुरुष-(सत्=सच्चा, पुरुष=आदमी) पु० साधु, सज्जन, भला आदमी ।

सं० सत्य-(सत्) गु० सच, ठीक, सही, यथार्थ, निश्चय, २ सच्चा, खरा, ईमान्दार, पु० सांच, सचाई, सचौट, २ सत्ययुग, पहलायुग, ३ शपथ, ४ ब्रह्मलोक ।

सं० सत्यता-(सत्य) भा० स्त्री० सचाई, सचौटी ।

सं० सत्यभामा-(सत्य=सच, भामा=क्रोधिनी स्त्री) स्त्री० श्रीकृष्ण की एकपत्नी और सत्राजितकीबेटी ।

सं० सत्ययुग-(सत्य+युग) पु० पहला युग (युग शब्द को देखो)।

सं० सत्यलोक-(सत्य+लोक)पु० ब्रह्मलोक, ऊपर का सातवां लोक ।

सं० सत्यवादी-(सत्य=सच, वादी=बोलनेवाला) क० पु० सच बोलनेवाला, रास्तगो ।

सं० सत्यव्रत-गु० सत्य=संकल्प, सत्यप्रतिज्ञ, पु० त्रिशंकुराजा ।

सं० सत्यसन्ध-गु० सत्य=वादी, सादिक़, सच्चा ।

सं०सत्यानाश-(सं० सत्य=सच, नाश=बरबादी) पु० नाश, विनाश, बरबादी ।

प्रा० सत्यानाशकरना-बोल० नष्ट करना, बरबाद करना, खराब करना, बिगाड़ डालना ।

प्रा० सत्यानाशजाना, सत्यानाशहोना } बोल० नष्ट होना, बरबाद होना, खराब होना बिगड़ जाना ।

सं० सत्वर-(स=साथ, त्वरा=जल्दी, गु० जल्द, उतावला, क्रि० वि० शीघ्र, तुरन्त, झटपट, जल्दी से ।

सं० सत्सङ्ग-पु०, सत्सङ्गति-स्त्री० } (सत्=अच्छा, संग या संगति साथ) अच्छी संगत भले आदमीका साथ अच्छी सोहबत ।

सं० सदन-(सद्=जाना, या बैठना जिस में) पु० घर, स्थान, जगह, २ पानी ।

सं० सदनुमति-(सत्+अनुमति) स्त्री०अच्छीसम्मति, अच्छी सलाह ।

सं० सदय-(स=साथ+दया=कृपा) गु० दयालु, दयासहित, कोमल ।

सं० सदसत् (सत्+असत्) गु० सच झूठ, रास्तदरोग़ ।

सं० सदा-क्रि० वि० नित, हमेशह, नित्य, रोज़ रोज़ ।

सं० सदाचार-(सत्+आचार) पु० सनातन धर्म्म, उत्तमाचरण, नेकचलन ।

सं० सदानन्द-(सदा+नन्द) पु० सदाशिव, महादेव, २ गु० हमेशह, प्रसन्न ।

सं० सदाव्रत-(सदा+व्रत) पु० खाना जो भूखों को सदा दियाजाय ।

सं० सदाशिव-(सदा+शिव)पु० महादेव, शम्भु, शिव, शंकर ।

सं० सदृश } **सदृक्ष** } (स=बराबर, दृश्=देखना) गु० बराबर, समान, तुल्य, एकसा ।

सं० सद्गति-(सत्=अच्छी, गति=दशा) स्त्री० उत्तम गति, मुक्ति, मोक्ष, निस्तार, छुटकारा, २ धर्म्म, नेकी, ३ सम्पदा, सम्पत्ति ।

सं० सद्भाव-गु० प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता, निष्कपटता, बेमक्र ।

सं० सद्म-गु० गृह, मकान ।

सं० सद्यः-(स=साथ, दिव्=चमकना) क्रि० वि० तुरन्त, फ़ौरन्, उसीदम, तत्काल, तत्क्षण ।

सं० सधना-(सं० सान) क्रि० अ० बनना, खूब सिखाया जाना, अच्छी तरह से शिक्षा पाना ।

सं० सधवा-(स=साथ, धव=पति) स्त्री० वह लुगाई जिसका पति जीता हो, सुहागिन ।

प्रा० सधाना-(सं० साधन) क्रि० स० सिखाना, २ बनाना, ३ हिलाना ।

सं० सध्र्यच-क० पु० सहचर ।

सं० सध्रीची-क० स्त्री० सहचरी ।

प्रा० सन-(सं० शण, शण्=देना) स्त्री० एक पौधा जिस के तारों की रस्सी बनती है ।

प्रा० सन=से, साथ ।

सं० सनक-(सन्=सेवाकरना, देना) पु० एक मुनि का नाम, ब्रह्मा का बेटा, जो सदा बालक रूप रहता है ।

सं० सनत्कुमार-(सनत्=सदा, या ब्रह्मा, कुमार=बालक) पु० ब्रह्मा का बेटा, एक मुनि, जो सदा बालक रूप रहता है ।

सं० सनन्द } **सनन्दन** } (स=साथ, नन्द=आनन्द) पु० ब्रह्मा का बेटा, एक मुनि, जो सदा बालक रूप रहता है ।

प्रा० सनसनाना-क्रि० अ० सनसन ऐसा शब्द करना ।

सं० सनातन-(सना=सदा) पु० ब्रह्मा का बेटा, एकमुनि, जो सदा बालक रूप रहता है, गु० नित, सदा हमेशह, अनादि, सदा का, हमेशह का, परम्परा ।

सं० सनाथ-(स+नाथ) गु० जिसके मालिक और सहायक हो, सपक्ष ।

प्रा० सनाह—(सं० सन्नाह, सम्=अच्छी तरह से, नह्=बांधना) पु० बख़्तर जिरह, कवच।

प्रा०सनीचर—(सं० शनैश्चर) पु० सातवां ग्रह, २ शनिवार। [गा।

प्रा०सनीचरा—(सनीचर) गु० अभा-

प्रा० सनेह—(सं० स्नेह) पु० प्यार, प्रीति, नेह, छोह, मोह, प्रेम।

सं० सन्त—(सत्) पु० साधु, सत्पुरुष, सज्जन, धर्म्मात्मा।

सं० सन्तत—(सम्=साथ, तन्=फैलना) क्रि० वि० लगातार, निरन्तर, सदा, नित, हमेशह, गु० विस्तीर्ण, फैला हुआ।

सं० संतति—(सम्=साथ, तन्=फैलना) स्त्री० लड़का बाला, बेटा पोता, सन्तान, वंश।

सं० सन्तप्त—(सम्=अच्छी तरह से तप्=तपना या तपाना) र्म्म० पु० तपाहुआ, श्रान्त, थका हुआ, गर्म, २ दुःखी।

सं०सन्तान—(सम्=साथ, तन्=फैलना) पु० लड़काबाला, वंश, कुटुम्ब।

सं०सन्तापक—क० पु० दुःखदाता।

सं०सन्ताप—(सम्=अच्छी तरहसे तप्=तपना) पु० शोक, शोच, फ़िक्र, चिन्ता, पीड़ा, दुःख।

सं०सन्तुष्ट—(सम्=अच्छी तरहसे, तुष्=प्रसन्न होना) क० पु० प्रसन्न, तृप्त, हर्षित, मनभरा, सन्तोषके साथ।

सं० सन्तुष्टि—(सम्+तुष्+ति) भा० स्त्री० सन्तोष, प्रसन्नता, सब्र, क़नाअत। [कर।

सं०सन्तोषक—क० पु० तुष्टिकर, तृप्ति

सं०सन्तोष—(सम्=अच्छी भांति से, तुष्=प्रसन्न होना) भा० पु० सब्र, तृप्ति, आनन्द, सुख। [न्दित।

सं० सन्तोषित—र्म्म० हर्षित, आन-

सं० सन्तोषी—(सन्तोष) क० पु० सन्तोष रखनेवाला, सब्रवाला।

सं०सन्था—(सं० संस्था सम्=अच्छी तरह से, स्था=ठहरना) स्त्री० पाठ, सबक़, पढ़ना।

सं० सन्दर्भ—(सम्=अच्छी तरहसे, दृभ्=बनाना) पु० रचना, प्रबन्ध, गुहना, इन्तिज़ाम, गूढ़ार्थप्रकाश।

सं० सन्दिग्ध—सम्=साथ, दिह्=बढ़ना) क० सन्देहयुक्त, जिसमें सन्देह पाया जाय।

सं० सन्देश—(सम्=साथ, दिश्=देना) पु० संदेशा, समाचार, ख़बर, वृत्तान्त।

सं०सन्देह—(सम्=साथ, दिह्=बढ़ना, या इकट्ठा करना) पु० शक, संशय, शुबहा, शंका।

सं० सन्देहक—क० पु० शक्की, शुबही, संशयी, सन्देही।

सं० सन्दोह—(सम्, दुह्=दुहना, पर सम् उपसर्ग के साथ आने से इकट्ठा होना अर्थ होजाता है) पु० समूह, बहुत गिरोह, मजमुआ ।

सं० सन्ध—(सम्+धा=रखना) स्त्री० प्रतिज्ञा, मर्यादा, स्थिति, गु० उपविष्ट बैठा हुआ, मिलित, युक्त ।

सं० सन्धान—(सम्=अच्छी, भांतिसे, धा=रखना) भा० पु० भेद लेना, खोज, अन्वेषण, पता, २ जोड़ना मिलाना, ३ युक्ति, ४ परामर्श, ५ कार्य्यप्रवृत्ति, ६ आचरण ।

सं० सन्धि—(सम्=साथ, धा=रखना) स्त्री० मेल, मिलाव, व्याकरण में दो अक्षरों का मिलाव, २ सुलह, मेल करना, दो राजाओं के आपस में मेल होना, ३ शरीर में दो हड्डियोंका जोड़, ४ सेंध, ५ दरार, छेद ।

सं० सन्ध्या—(सम्=अच्छी तरह से, ध्यै=ध्यान करना) स्त्री० सांझ, सायङ्काल, शाम, २ प्रभात, दोपहर, और सांझ इन तीन समय की पूजा जप ध्यान आदि ।

सं० सन्नद्ध—गु० लगाहुआ, तय्यार ।

प्रा० सन्ना—(सं० सन्धान) क्रि० अ० मिलना, जुड़ना, सटना ।

प्रा० सन्नाटा—पु० पानी या हवा से जो शब्द होता है

सं० सन्नाह—पु० कवच, बख्तर ।

सं० सन्निधान—(सं०+निधान) पु० समीप, निकट ।

सं० सन्निधि—पु० समीप, निकट, नजदीक, पास ।

सं० सन्निपात—(सन्=साथ, नि= नीचे, पत्=गिरना) पु० एकतरह का रोग जो कफ, वात, और पित्त के बिगड़ने से होता है, सन्निपात, त्रिदोष, सरसाम ।

सं० संन्यास—(सम्, नि, अस=फेंकना) पु० चौथा आश्रम, संन्यासी का धर्म, संसारकी चीजों का त्याग ।

सं० संन्यासी—(संन्यास) पु० चौथा आश्रमी जो संसार को छोड़ देता है परमहंस ।

प्रा० सन्मान—(सं० सम्मान, सम्= साथ, मान=आदर) पु० आदर, सत्कार ।

प्रा० सन्मुख—(सं० सम्मुख, सम्= साथ, या साम्हने, मुख=मुंह) गु० साम्हने, आगे, प्रत्यक्ष ।

सं० सपक्ष—(स=साथ, पक्ष=पांख, या सहायता) गु० सहायक, साथी, २ पाँखोंवाला, पाँखों के साथ ।

सं० सपदि—(स=साथ, पद्=जाना) क्रि० वि० तुरंत, झटपट, शीघ्र ।

प्रा० सपना—(सं० स्वप्न) पु० नींद में जो कुछ देखा जाय, नींद में जो कुछ खयाल उपजे, जागने में जो

देखते सुनते मन में चिन्ता करते हैं उन्हीं खयालातको सोतेमें देखना।

सं० सपल्लव—(स+पल्लव) गु० नये २ पत्ते टहनी के साथ।

प्रा० सपुत्र, सपूत (सं० सुपुत्र) गु० अच्छा लड़का, सुशील बेटा, २ बेटेके साथ, पुत्रसहित।

प्रा० सपोला, सपोलिया (सं० सर्पपोत, सर्प=सांप, पोत=बच्चा) पु० सांप का बच्चा।

सं० सप्त—(सप्=मिलना) गु० सात, ७।

सं० सप्तचत्वारिंशत्-(सप्त+चत्वारिंशत्) गु० सात और चालीस, सैंतालीस।

सं० सप्तमी—(सप्त) स्त्री० सत्तमी, सातवीं तिथि। [सत्रह।

सं० सप्तदश— (सप्त+दश) गु०

सं० सप्तर्षि—(सप्त+ऋषि) पु० १ कश्यप, २ अत्रि, ३ भरद्वाज, ४ विश्वामित्र, ५ गौतम, ६ जमदग्नि, ७ वशिष्ठ।

सं० सप्तसागर—पु० सातसमुद्र, क्षार अर्थात् लवण २ इक्षु, ३ दधि, ४ क्षीर अर्थात् दूध, ५ मधु, ६ मदिरा, ७ घृत।

सं० सप्ताह-(सप्त=सात, अहन्=दिन) पु० सात दिन, हफ़्ता, अठवाड़ा।

सं० सप्रीति—(स+प्रीति) गु० प्यारसे, प्यारसहित, प्यार के साथ।

सं० सप्रेम—(स+प्रेम) गु० प्यार, प्यार के साथ।

सं० सफर-पु०, सफरी-स्त्री० } मत्स्य, मछरी, पुँठी।

सं० सफल—(स+फल) गु० फल सहित, सिद्ध, फल देनेवाला, कृतार्थ, सार्थक, कामयाब।

प्रा० सब—(सं० सर्व) गु० सर्वना० सारा, पूरा, समूचा, संपूर्ण, समस्त।

सं० सबल—(स=साथी, बल=ज़ोर या सेना) गु० बलवान्, ज़ोरावर, सामर्थी, प्रौढ़, २ सेना के साथ।

प्रा० सबेरा, सुबेरा (सं० सुवेला, सु=अच्छा, वेला=समय) पु० भोर, बिहान, पोह, तड़का, प्रभात, प्रातःकाल।

सं० सभय—(स=साथ, भय=डर) गु० डरा हुआ, डर के साथ, सशंक, भीतियुक्त।

सं० सभा—(स=साथ, भा=चमकना) धि० स्त्री० समाज, मंडली, २ राजदरबार, दरबार, ३ पंचायत, ४ मजलिस, जलसह।

सं० सभापति—(सभा+पति) पु० सभा का मालिक, मीरमजलिस, प्रेसीडेंट, चेयरम्यन।

सं० सभासद्—(सभा=समाज, सद्=बैठना) क० पु० सभा में बैठनेवाला, सभा का मेम्बर, दरबारी।

सं० सभिक—क० पु० मजलिसी, सभ्य, स्यम्बर।

सं० सभ्य—(सभा) गु० सभा के योग्य, चतुर, बुद्धिमान्।

सं० सभीत—(स + भीत) कर्म० डरा हुआ, सभय।

सं० सम्—उपस० अच्छी तरह से, भले प्रकार से, सुन्दरता से, भली भांति से, २ साथ से, ३ बहुत, ४ सब तरह से, ५ पास, सामहने ६ शुद्ध।

सं० सम—गु० बराबर, तुल्य, समान, सदृश, २ सब, पूरा, ३ साधु, ४ दो, चार, छः आदि की संख्या।

सं० समक्ष—अव्य० समीप गु० सम्मुख, प्रत्यक्ष, नेत्रगोचर, सामहने।

सं० समग्र—(सम्=सब तरहसे, अग्र =आगे या सम=सब, ग्रह्=लेना) गु० सब, सारा, पूरा, सम्पूर्ण।

सं० समज्या—(सम्=सब, अज्= जाना) त्रि० स्त्री० सभा, २ कीर्ति।

प्रा० समझ—स्त्री० बुद्धि, ज्ञान, अकल, बूझ, २ सम्मति, राय, विचार, ध्यान।

प्रा० समझना—क्रि० स० जानना, बूझना, विचारना।

सं० समता—(सम) भा० स्त्री० बराबरी, तुल्यता, सादृश्य, मुताबिकत।

सं० समदर्शी—(सम्=बराबर, दर्शी देखनेवाला, दृश=देखना) गु० दोनों ओर बराबर देखनेवाला, पक्षपात नहीं करनेवाला, पक्ष नहीं करनेवाला, अपक्षपाती, बेतअस्सुब।

प्रा० समधन—(समधी) स्त्री० बेटे की या बेटी की सास।

प्रा० समधियाना—(समधी) पु० समधी का घराना।

प्रा० समधी—(सं० सम्बन्धी) पु० बेटे का या बेटी का ससुर, सगा, नातेदार। [चारों ओर।

सं० समन्तात्—अव्य० सब, सर्वत्र,

सं० समन्वित—गु० संयुक्त, समेत, सहित, साथ।

सं० समबल—गु० बराबरबलवाला।

सं० समय—(सम्=साथ, या सबतरफ़ से, इण्=जाना) पु० काल, वक्त, बेला, सर्मा, २ अवसर, फुर्सत।

सं० समर—(सम्=साथ, ऋ=जाना) पु० लड़ाई, युद्ध, रण।

सं० समर्थ—(सम्=साथ, अर्थ=धन) गु० बलवान्, योग्य, लायक।

सं० समर्थन—(सम्=सब, अर्थन= मांगना, याचना) पु० प्रमाण करना, ताईद करना।

सं० समर्थना—स्त्री० सिफ़ारिश करना।

सं० समर्थाधिकारी—क० पु० हाकिम मजाज़।

प्रा० समर्पना-(सं० समर्पण, सम्+ऋ+इ+अन, सम्=साथ, अर्पण=भेंट देना) क्रि० स० देवताको भेंट देना, सौंपना, अर्पण करना ।

सं० समवाय-(सम्+अव+इण् =जाना) पु० मिलावट, मेल, इत्तिफ़ाक़, सम्बन्ध ।

सं० समस्त-(सम्=साथ, अस्=फेंकना, या होना) गु० सब, सारा, सम्पूर्ण, पूरा, तमाम ।

सं० समस्या-(सम्, अस्=फेंकना परसम् उपसर्गकेसाथ आनेसे मिलना या संक्षेप होना अर्थ होता है) स्त्री० श्लोक या दोहे चौपाई आदि संस्कृत और हिंदी छन्दोंका एक पद जो उस छन्द को पूरा करने के लिये दिया जाता है, तर्ज़, तरह, इशारा ।

प्रा० समा, समाँ (सं० समय) पु० समय, वक्त, २ बहुतात, ३ दशा, अवस्था, ४ एक ताल, एक लय, एक स्वर, ५ शोभा,—समा बंधना, बोल० राग छाना ।

प्रा० समाई-(समाना) भा० स्त्री० समाव, फैलाव, चौड़ाई, गुंजायश, २ सं० शाक्य, सन्तोष, धीरज ।

सं० समाकुल-(सम्=सब प्रकार से, आकुल=परेशान) गु० व्याकुल, दुःखी, परेशान ।

सं० समागम-(सम्=साथ+आगम =आना) पु० आगमन, आना, अवाई, २ मिलना, मुलाक़ात, मिलाप, संयोग, मजमा, भीड़भाड़, मेला ।

सं० समाचार-(सम्=साथ, आ=चारों ओर से, चर्=चलना) पु० सन्देशा, ख़बर, वृत्तान्त, हाल ।

सं० समाकर्षण-(सम्+आकर्षण, कृष=खींचना) पु० सञ्चय, तहसील ।

सं० समाज-(सम्=साथ, अज्=जाना) पु० सभा, साथ, समूह, झुंड ।

प्रा० समाजी-(सं० समाजीय) पु० बजंत्री, तबलची, जो नाचमें तबला बजाता है, २ सभासद ।

सं० समाधान-(सम्, आ, धा=रखना) पु० किसी शङ्का अर्थात् दलील का ठीक उत्तर, दो आदमी जो किसी बात पर बाद करते हों उनका निबेड़ा करना, शक रफ़ा करना, २ दमदिलासा, ढारस, इत्मीनान, धीरज, शान्ति, परमेश्वर का ध्यान ।

सं० समाधि-(सम्, आ, धा=रखना) स्त्री० गहरा और मन से ध्यान, योगाभ्यास, हब्सदम करना, इन्द्रियों को रोकना और मन को परमेश्वर के ध्यान में लगाना, २ वह जगह जहां योगी संन्यासियों को गाड़तेहैं ।

सं० समान-(स=बराबर, मा=नापना) गु० बराबर, तुल्य, एकसा, सदृश, एकही, २ (सम्=अच्छी तरह से, अन्=जीना) पु० पांच प्राणों में एक प्राण।

प्रा० समाना-(सं० सम्मान, सम्=अच्छी तरह से, मा=नापना) क्रि० अ० अटना, अमाना, भरना, पूरना।

सं० समाप्त-(सम्=साथ, आप्=पाना, या फैलना)गु० पूरा, सम्पूर्ण, होचुका, सिद्ध, इति, खत्म, तमाम, अन्त, आखिर।

सं० समाप्ति-स्त्री० अवसान, पूर्ति, पूर्णता, खातमा।

सं० समाप्य-कर्म० खातमा किया, पूर्ण किया, पूरा करके।

सं० समारोह- (सम्+आ+रुह=चढ़ना) पु० भीड़भाड़, धूम धाम, जमाव, मेला।

सं० समास-(सम्, अस=फेंकना, पर सम् उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ मिलना, या संक्षेप होना होता है) पु० संक्षेप, अविग्रह, २ व्याकरण में दो तीन आदि पदोंका मेल, व्याकरणमें समास छः हैं (१ तत्पुरुष, २ कर्मधारय, ३ द्विगु, ४ बहुव्रीही, ५ अव्ययीभाव, ६ द्वन्द्व)।

सं० समाहित-(सम्+आ+धा=रखना) स्त्री० स्थिर, अचल, मुतमैअन, समाधिस्थ।

सं० समाह्वान-भा० पु० बुलाना [पुकारना

सं० समिध-(सम्, इन्ध्=जलना, या चमकना) स्त्री० होमकी लकड़ी।

सं० समीकरण-(सम्=बराबर, कृ=करना) पु० बराबर करना, बीजगणित में एकतरह का गणित जिस में दो राशि बराबर होती हैं।

सं० समीचीन-(सम्=अच्छीभांति से, अञ्च्=जाना) गु० सच, यथार्थ, ठीक, उत्तम, योग्य, बहुत अच्छा।

सं० समीप-(सम्=साथ, आप्=फैलना) गु० पास, नगीच, निकट।

सं० समीर-(सम्=अच्छी भांति से, ईर्=जाना)पु० हवा, पवन, वायु।

सं० समीहा-(सम्+ईह=चेष्टा करना) स्त्री० लज्जा, शर्म।

सं० समुच्चय-(सम्=साथ, उत्=ऊपर, चि=इकट्ठा करना) पु० इकट्ठा, ढेर, राशि, संग्रह, समूह, २ वाक्यों का मेल, अत्क।

सं०समुज्झित-(सम्+उज्झ्=त्यागना) कर्म० त्यक्त, छोड़ा हुआ।

सं० समुदाय-(सम्=उत,इण्=जाना) पु० ढेर, समूह, इकट्ठा, राशि, सब, गिरोह।

सं० समुद्र-(सम्=सबतरहसे, उन्द्=भिगोना, या सम् सब तरह से उद्=ऊपर अथवा बहुत, दा=देना)पु०

सागर, समंदर, जलनिधि (सागर शब्द को देखो) ।

प्रा० समूचा-(सं० समुच्चय) गु० सारा, पूरा, सब का सब, तमाम ।

सं० समूह-(सम्, ऊह्=तर्क करना पर सम् उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ इकट्ठा होना होता है) पु० भीड़ भाड़, झुण्ड, थोक, समुदाय, ढेर गिरोह ।

सं० समृद्ध-(सम्=सब तरह से ऋध्=बढ़ना) गु० भागवान्, संपदा वाला, धनवान्, समर्थ, दौलतमन्द ।

सं० समृद्धि-स्त्री० बड़ी उन्नति, बड़ी बढ़ती, बड़ी तरक्की ।

प्रा० समै, समैं, समैया } (सं० समय) पु० समय, वक्त, २ अवकाश, फ़ुर्सत, अवसर, मौक़ा ।

प्रा० समेटना-क्रि० स० इकट्ठा करना, बटोरना, २ सकोड़ना ।

सं० समेत-(सम्, आ, इण्=जाना) क्रि० वि० साथ, सहित, संयुक्त, मये ।

प्रा० समोना-(सं० शमन, शम्=ठंढा करना) क्रि० स० गर्म पानी में ठंढा पानी डालकर कुछ ठंढा करना ।

सं० सम्पत्ति-(सम्=अच्छी तरह से, पद्=जाना) स्त्री० धन, दौलत, सुख, संपदा सुभाग, बढ़ती, न्यामत ।

सं० सम्पद्, सम्पदा } (सम्=अच्छी तरह से, पद्=जाना) स्त्री० संपत्ति, धन, दौलत, विभव, न्यामत, अशिया ।

सं० सम्पन्न-(सम्, पद्=जाना) कृ० युक्त, शामिल, पूरा, परिपूर्ण, सम्पूर्ण, सिद्धि, भागवान, संपदावाला ।

सं० सम्पर्क-(सम्+पृच्=मेल) पु० संसर्ग, लगाव, सम्बन्ध ।

सं० सम्पात-(सम्, पत्=गिरना) पु० गिरना, २ रेखागणित में छूती लकीर जो चक्करके घेरे को छूनेपर बढ़ानेसे उसको काटे नहीं, खतममास ।

सं० सम्पाति-(सम्, पत्=गिरना) पु० जटायु गीध का भाई, जिसकी कथा रामायण में है ।

सं० सम्पादक-(सम्=अच्छी तरह से, पद्=चलना अर्थात् किसी काम को चलानेवाला, या पूरा करनेवाला) कृ० पु० पूरा करनेवाला, प्रबन्ध करनेवाला, पानेवाला, कार्य वाहक, निरूपक, समापक, कहने वाला, बयान करने वाला ।

सं० सम्पादन-भा० पु० निरूपण, कथन, समाप्ति करना, निष्पादन ।

सं० सम्पुट-(सम्=साथ, पुट्=मिलना) पु० डब्बा, २ मिलना ।

सं० सम्पुटक-कृ० पु० पिटारा, डब्बा ।

सं० सम्पूर्ण-(सम्=सब तरह से पूर्ण=पूरा) गु० पूरा, परिपूर्ण सब, सारा, समाप्त ।

सं० सम्प्रति–क्रि० वि० इदानीं, अब, अभी ।

सं० सम्प्रदान–(सम्=अच्छीतरह से, प्र=बहुत, दा=देना) पु० दान देना, व्याकरण में चौथा कारक, मफ़ऊललहू ।

सं० सम्प्रदाय(सम्,प्र+दा=देना) स्त्री० परम्परा का धर्म, कुल धर्म, परिपाटी, रसूमातक़दीम ।

सं० सम्प्रेषित–(सम्+प्र+इष्=जाना) कर्म० पठया गया, खारिज हुआ, भेजागया ।

सं० सम्बन्ध–(सम्=साथ, बंध्=बांधना) पु०मेल, लगाव योग, नाता. रिश्ता. २ व्याकरण में छठा कारक या विभक्ति ।

सं० सम्बन्धी–(सम्बन्ध)क्र० सम्बन्ध रखनेवाला, समधी, नातेदार, रिश्तेदार, मुज़ाफ़ ।

सं० सम्बल–(सम्ब्=जाना, या सम्=से, बल्=जीना) पु० रस्ता खर्च, २ तोशाराह, मार्गव्यय, ३ पानी ।

सं० सम्बलित-(सम्+बल्=जाना) क्र० समेत, सहित, मये ।

सं०सम्बुद्ध–(सम्+बुध्=समझाना) कर्म० समझायागया ।

सं० सम्बोधक-(सम्+बुध्=जतलाना) क०पु०जतानेवाला, मुनादी ।

सं० सम्बोधन–(सम्, बोधन=जतलाना, बुध्=जानना) पु० जतलाना, चिताना, साम्हने करना, पुकारना, व्याकरण में आठवां कारक या विभक्ति, हर्फ़ेनिदा ।

सं० सम्बोधित–कर्म० पुकारागया, जताया गया, मुनादा ।

सं०सम्भव–(सम्, भू=होना) पु० उत्पत्ति, पैदा होना, हो सकना, २ कारण, ३ मिलना, गु० होनहार, होने योग्य, २ उचित योग्य ।

सं०सम्भावना (सम्, भू=होना) स्त्री० संभव होना, इच्छा, चाह, ३ संदेह, ४ दुविधा, वह फ़ेल जिससे वर्तमान और भविष्यत् काल जाना जाय ।

सं० सम्भाषण-(सम्=अच्छीतरह से, भाष्=कहना) पु० बोलचाल, बात चीत ।

सं० सम्भोग-(सम्+भुज्=जाना) पु० हर्ष, सुख, सुरति, मैथुन, शृङ्गार भेद ।

सं० सम्भ्रम–(सम्=साथ, भ्रम् घूमना) पु० घबराहट, हड़बड़ी, वेग, उतावली, घूमना, डर, २[1] आदर सन्मान, खातिरदारी ।

सं० सम्मत– सम्=सबतरह से, मन्=समझाना) कर्म० अनुमत, स्वीकृत, राय के मुवाफ़िक़ ।

सं० सम्मति-(सम्=अच्छीभाँतिसे, मन्=जानना) स्त्री० सलाह, विचार, राय, २ चाह, इच्छा ।

---

१ संभ्रमंत्रयमिच्छन्ति भयमुद्वेगमादरम् ।

सं०सम्मतिपत्र–पु० राजीनामा, सुलहनामा।

सं०सम्मार्जनी–(सम्, मृज्=साफ करना) ग० स्त्री० बढ़नी, झाड़ू, कूंची, बुर्स, कुचरा।

सं०सम्यक्–(सम्=अच्छी भांति से अञ्च्=जाना) क्रि० वि० अच्छी भांति से, भले प्रकार से, ठीक, योग्यता से, २ सब तरहसे, सबभांति से, लियाकत के साथ।

सं०संरंभ–प्रारम्भ, क्रोध।

सं०सम्राज् } (राज्=शोभादेना)
सम्राट् } पु० सब भूमि का मालिक, राजसूययज्ञ कर्ता, सर्वभूमीश्वर, चक्रवर्तीराजा।

प्रा०सयाना } (सं० सज्ञान) गु०
सियाना } समझवान्, चतुर,
स्याना } प्रवीण, निपुण, बुद्धिमान्, पक्का।

सं०सर–(सृ=जाना) पु० सरोवर, तालाब, झील, २ तीर, बाण, ३ पानी, जल।

प्रा०सरकंडा–(सं०शरकाण्ड) पु० नरकट, नरसल।

प्रा०सरकना–(सं० सृ=जाना) क्रि० अ० हटना, टलना, चलना, भागना, खिसकना।

सं०सरघा–(सर=रस, हन्=जाना मारना) स्त्री० मधुमक्षिका, शहद की मक्खी। [गिरगिट।

सं०सरट–(सृ=जाना) पु०

प्रा०सरदा–पु० खर्बूजा।

प्रा०सरन } (सं० शरण) पु०
सरना } आसरे की जगह, बचाव की जगह, बचाव, पनाह।

प्रा०सरना–क्रि० अ० बनना, चलना, निकलना, पूरा होना, २ सड़जाना।

प्रा०सरपट–स्त्री० बगछूट दौड़, घोड़े की बड़ी दौड़।

प्रा०सरपटफेंकना–बोल० घोड़ेको बगछूट दौड़ाना।

प्रा०सरबरि } स्त्री० बराबरी।
सरवरि }

सं०सरयु } (सृ=जाना) स्त्री०
सरयू } एकनदी जो अयोध्या के पास बहती है और उसको घाघरा, घर्घरा, देविका और देवा भी कहते हैं।

सं०सरल–(सृ=जाना) गु० सीधा, सोझा, २ सच्चा, ईमान्दार, धर्मात्मा, ३ भोला, जो छल कपट न जानताहो, निष्कपट, सीधा, सादा, पु० एक पेड़ का नाम जिसको सरो कहते हैं।

प्रा०सरवर–(सं० सरोवर) पु० ताल, तलाब, झील, पोखरा, तालाब।

सं०सरस्–(सृ=जाना) पु० तलाव, सरोबर, २ पानी, जल।

प्रा०सरस } (सं० श्रेयस्) गु०
सरसा } श्रेष्ठ, उत्तम, बहुत अच्छा, २ अधिक, बहुत ।

सं०सरस—(सा=साथ, रस=स्वाद, या पानी) गु० रसीला, रसवाला, पु० सरोवर ।

प्रा०सरसाई—(सरस) भा० स्त्री० अधिकाई, बहुतायत, कसरत, २ उत्तमता।

सं०सरसिज—(सरसि=तलाव में जन्=पैदाहोना) पु० कमल, कँवल।

सं०सरसीरुह—(सरसी=तलाव, रुह् =पैदाहोना) पु० कमल, पद्म, कँवल ।

प्रा०सरसों—(सं०सर्षप, सृ=जाना) पु० राई के ऐसी चीज़ ।

सं०सरस्वती—(सरस्=पानी, वती =वाली, अथवा स=साथ, रस= स्वाद, या पानी, वती=वाली) स्त्री० एक नदी का नाम, २ वाणी, बोली, राग और विद्या गुणआदि की देवी, वागीश्वरी, शारदा, भारती, वाग्देवता ।

प्रा०सराप—(सं०शाप) पु० शाप, फिटकार, दुराशिष, बददुआ ।

प्रा०सरापना—(सं०शापन) क्रि० स० सराप देना, कोसना, बददुआ देना ।

प्रा०सरावक—(सं० श्रावक) पु० जैनी, जैन धर्म को मानने वाला ।

प्रा०सराह—स्त्री० बड़ाई, तारीफ़, स्तुति, प्रशंसा ।

प्रा०सराहना—क्रि०स० बड़ाई करना, स्तुति करना, तारीफ़ करना ।

सं०सरित् } (सृ=जाना, बहना)
सरिता } स्त्री० नदी, दरिया ।

सं०सरित्पति—पु० समुद्र ।

सं०सरित्सुत—पु० गंगापुत्र, भीष्म पितामह, २ घाटिया ।

प्रा०सरिस } (सं० सदृश या सदृक्ष)
सरीखा } गु० बराबर, समान ।

सं०सरीसृप—पु० सर्प, बिच्छू ।

सं०सरुज—(स=सहित, रुज्=रोग) गु० रोगी, बीमार, मरीज़ ।

सं०सरूप—(स=बराबर, रूप=डौल) गु० बराबर, समान ।

प्रा० सरूप—स्वरूप शब्दको देखो ।

प्रा०सरेखा—(सं० श्लेषा) स्त्री० नवां नक्षत्र ।

फ़ा०सरेश—(सरेस) पु० एक लसलसी चीज जिससे लकड़ीआदि की चीज़ें जोड़ते हैं सींग, और खुर के छीलन से बनता है ।

सं०सरोज—(सरस=तालाब, जन्= पैदाहोना) पु० कमल, कँवल, पद्म ।

सं०सरोजभव—(सरोज=कमल, भू=जन्मना) पु० ब्रह्मा ।

प्रा०सरौता—ण० पु० सुपारी काटने का औज़ार ।

सं० सरोरुह-(सरस्=तालाव, रुह=पैदा होना) पु० कमल, कँवल, पद्म।

सं० सरोवर-(सरस्=तालाब, वर=बड़ा) पु० बड़ा तालाब, सरवर झील। [कोपित, गुस्से में।

सं० सरोष-(स+रोष) गु० क्रोधित,

प्रा० सरौकरे-क्रि० स० दण्डकरना, कूदना, कला करना, उरझना, सुरझना।

सं० सर्ग-(सृज्=पैदा होना, या छोड़ना) पु० उत्पत्ति, सृष्टि, २ छोड़ना, ३ निश्चय, ४ अध्याय, बाग, चपट्टर, स्वभाव।

प्रा० सर्गुण-(सं० सगुण अथवा सर्व गुण) गु० सब गुणों समेत, २ सगुण ब्रह्म।

सं० सर्ज्जक-(सृज्+अक, सृज्=पैदाकरना, त्यागना) क० त्यागी, उत्पत्ति कारक, २ शालवृक्ष।

सं० सर्प-(सृप्=जाना) पु० सांप, नाग।

सं० सर्पराज-(सर्प+राजा) पु० सांपों का राजा, शेषजी, २ बासुकी।

सं० सर्पिष-(सृप्+इष) पु० घी, घृत, रोगनजर्द।

सं० सर्व-(सर्व् या सृ=जाना) गु० सर्व, सारा, सकल, समस्त, पु० शिव, विष्णु।

सं० सर्वग-(सर्व=सब जगह, गम्=जाना) गु० सब जगह जाने वाला, सब में जानेवाला, सब में फैलने वाला, सर्वव्यापी, पु० शिव, २ परमेश्वर, ३ पानी, ४ हवा, ५ आत्मा, जीव।

सं० सर्वज्ञ-(सर्व=सब, ज्ञा=जानना) क० सब जाननेवाला, पु० परमेश्वर, २ शिव।

सं० सर्वतोभद्र-पु० यज्ञ में प्रधान देवतों का आसन, सिंहासन २ विष्णु का रथ, मण्डल विशेष।

सं० सर्वत्र-(सर्व=सब, त्र=जगह अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० सब जगह, सब ठौर, सब स्थान में।

सं० सर्वथा-(सर्व=सब, था प्रकार अर्थमें प्रत्यय) क्रि० वि० सबप्रकार से सब भांति से सब तरह से, सब रीतिसे, २ निश्चय करके, निस्सन्देह, बिनचूक, सचमुच, अवश्य।

सं० सर्वदमन-(सर्व=सब, दम्=दबाना) पु० दुष्यन्त का पुत्र, भरतनृप।

सं० सर्वदा-(सर्व=सब, दा=समय अर्थमें प्रत्यय) क्रि० वि० सदा, सब समय में, नित्य, दिन दिन।

सं० सर्वनाम-(सर्व+नाम) पु० वह शब्द जो नाम के बदले में बोला-जाय, जैसे मैं, तू, वह, जमीर।

सं० सर्वभूत-पु० सब प्राणी, सब मनुष्य, सर्वजन।

सं० सर्वमङ्गला-(स्त्री०) पार्वती।

सं० सर्वरस–पु० राल, धूप, गन्धा।

प्रा० सर्वस, सर्वसु–(सं० सर्वस्व सर्व वसु सर्व=सब स्व वा वसु =धन) पु० सब धन, सब सम्पदा, सब चीज़, सबकुछ, कुल यश।

सं० सर्वेश, सर्वेश्वर–(सर्व=सब, ईश या ईश्वर=पालिक) पु० सबका मालिक, परमेश्वर, विष्णु, शिव, सब का ईश्वर।

सं० सर्वोपरि–(सर्व+उपरि) गु० सब से बड़ा।

प्रा० ससुराहट–स्त्री० खुजलाहट।

सं० सलज्ज–(स=साथ लज्जा=लाज) गु० लजालु, शर्मीला, लज्जावान्।

सं० सलभ–पु० पतंगा, टिड्डी, टीड़ी।

प्रा० सलाई–(सं० शलाका) स्त्री० पतले तारका टुकड़ा जिससे आंख में सुरमा डालते हैं, और सलाई उस लोहे के पतले तार के टुकड़े को भी कहते हैं जिसको आग में खूब लाल करके अपने वैरी की आंखों में डालते हैं जिस से आंख फूटकर अन्धा होजाता है, २ सुरमई पैंसिल।

सं० सलिल–(सल्=जाना) पु० पानी, जल, आप: आब, २ आसान, सहल।

प्रा० सलूना, सलोना–(सं० सलवण, स=साथ लवण=निमक) गु० नमकीन, नोन सहित, २ सुस्वाद, मज़ेदार, रोचक, स्वादिष्ट, ३ सुन्दर, सांवला-सुहावना, खूबसूरत।

प्रा० सलूनो–(सं० श्रावणी) स्त्री० राखीपूनौ, सावनकी पूनौ।

प्रा० सल्लू–पु० जूना सींनेका चाम।

सं० सवर्ण–गु० समानवर्ण, एकजाति वाले, सजातीय, हमजिन्स।

प्रा० सवा–(सं० सपाद, स=साथ, पाद=चौथा हिस्सा) गु० एक और चौथाई, १¼।

प्रा० सवाई–(सवा) पु० जैपुर के राजाओं की पदवी, गु० सवा, एक और चौथाई।

प्रा० सवांग, स्वांग–(सं० स्वाङ्ग, स्व=अपना, अङ्ग=शरीर, अर्थात् अपने शरीर को और तरह से बनाना) पु० भंडैती, नक़ल बनाना, भेषबदलना, २ खेल, तमाशा।

प्रा० सवांगलाना, स्वांगलाना–बोल० नक़ल बनाना, वेष बदलना।

प्रा० सवाद–(सं० स्वाद) पु० रस, मज़ा, लज़्ज़त, २ खुशी।

प्रा० सवाया, सवैया–(सवा) गु० एक और चौथाई, सवा,

सवाका पहाड़ा सवैया । [संख्या ।

सं० सविता—पु० सूर्य, बारह की

सं० सव्य—(सू=पैदा होना) गु० बायाँ, दहना, प्रतिकूल, विष्णु ।

सं० सव्यसाचिन्—पु० अर्जुन, पाण्डुसुत ।

सं०सशङ्क—(स=साथ, शङ्का=डर या सन्देह) गु० डराहुआ, सभय, २ जिसमें सन्देह हो ।

प्रा० सस्ता—गु० सौंघा, मन्दा अर्जा ।

प्रा० सस्ताई—भा० स्त्री० सौंघाई, अर्जानी ।

प्रा० ससा—(सं० शश) पु० खर्गोश ।

प्रा० ससुर—(सं० श्वशुर) पु० पति का या स्त्री का बाप ।

सं०सह—(सह = सहना) अव्य० साथ, सहित, संग, समेत, २ बराबर, एकही, वही । [सहायता ।

सं० सहकार—पु० सुगंधित आम,

सं०सहगामिनी—(सह=साथ, गामिनी जानेवाली, गम् = जाना) स्त्री० सती, अपने पति के साथ जलनेवाली स्त्री ।

सं० सहचर—(सह=साथ चर्=चलना) पु० साथी, हमराही ।

सं० सहचरी—(सह=साथ चरी=चलनेवाली, चर् = चलना) स्त्री० साथ रहनेवाली, साथनी, संगिनी, सहेली, २ स्त्री, पत्नी, अपनी लुगाई ।

सं०सहज—(सह=साथ, जन्=पैदा होना) गु० जो साथही पैदा हो, स्वाभाविक, जो स्वभावही से पैदा हो, २ सुगम, आसान, सहल ।

सं०सहदेव—(सह=साथ, दिव्=खेलना, या चमकना)पु० पांचपांडवों में सबसे छोटा जो पाण्डु राजाकी दूसरी रानी माद्री का बेटाथा ।

सं०सहन—(सह=सहना)गु० सहना, बर्दाश्त, सहिष्णुता, गमख़ारी, क्षमा, गु०सहनेवाला, सन्तोषी, सहनहार ।

प्रा०सहना—(सं० सहन) क्रि०स० भोगना, उठाना, पाना, भुगतना, सन्तोषकरना ।

प्रा०सहनाई—(फा०सहनाई) स्त्री० बांसुरी के ऐसा एक बाजा जिस को सुर्नाई भी कहते हैं ।

प्रा०सहमना—(फा० सहिम से बना है जिसका अर्थ डर है) क्रि०अ० डरना घबराना ।

सं०सहमरण—(सह=साथ, मरण=मरना) पु० पति की लाश के साथ जलना, सती होना । [हमसुर ।

सं०सहयोगी—गु० साथी, संगती,

प्रा०सहराना } क्रि० अ० सहलाना, चुलचुलाना, धीरे २ मलना ।
सहिरान। }

सं०सहवास—(सह=साथ, वस्=रहना) पु० पड़ोस, एकत्रवास ।

सं० सहवासी–क० पु० पड़ोसी, हमसाया ।

सं० सहसा–(सह=साथ, सो=नाश करना या सह=सहना) क्रि० वि० झटपट, बिना बिचारे, एकाएकी, उतावली से, दफ़अतन् ।

सं०सहस्र } गु० एक हज़ार, दश
प्रा०सहस } सौ, १००० ।

सं०सहस्रनयन } (सहस्र=हज़ार,
सहस्रनेत्र } नयन वा नेत्र, आंख)पु० देवताओंका राजा इन्द्र जिसके हजार आंखें हैं ।

सं०सहस्रपाद–पु० विष्णु, सूर्य ।

सं०सहस्रबाहु } (सहस्र=हज़ार,
प्रा०सहसबाहु } बाहु=भुजा) पु० एक राजा का नाम जिसके हज़ार हाथ थे जिसको परशुरामजीने मारा।

प्रा०सहसाखी–(सं० सहस्राक्ष) पु० इन्द्र, देवताओं का राजा, २ सहसाक्षी, गवाहों के साथ, थये गवाह ।

प्रा०सहसानन–(सं० सहस्रानन, सहस्र=हजार, आनन=मुंह) पु०शेष नाग जिसके हजार मुंह हैं ।

सं० सहस्राक्ष–(सहस्र=हजार, अक्ष =आंख) पु० इन्द्र, २ विष्णु, ईश्वर, गु० हजार आंखवाला ।

प्रा०सहाई–(सं०सहाय स्त्री०सहायता, मदद, गु०मदद करनेवाला ।

सं० सहानुभूति-स्त्री० अनुवेदना, हमदर्दी, दुःख सुख का साथी होना ।

सं० सहाय–(सह=साथ, इण्=जाना) पु० मदद, सहारा, सहाई, अनुकूल, क०पु०सहायक, मददगार, मदद करनेवाला ।

सं० सहायक–(सह=साथ, इण्=जाना) क०पु०मददेनेवाला, मददगार, रक्षक, उपकार करनेवाला ।

सं० सहायता–(सह=साथ, इण्=जाना) स्त्री० सहाय, मदद, सहारा ।

प्रा०सहारा–(सं० सहायता) पु० मदद, सहायता, आसरा ।

प्रा०सहित–(सह=साथ, इण्=जाना, अथवासह=सहना) नित्य सं०साथ, संग, समेत, संयुक्त, मेल ।

सं० सहिदानी-स्त्री० निशानी, चिह्न ।

सं० सहिष्णु–(सह+इष्णु, सह=सहना) क० पु० सहनशील, क्षमावान्, बरदाश्ती ।

प्रा० सही–(अरबी सहीह) क्रि० वि० सच, बहुत अच्छा, हां, निश्चय।

प्रा० सहेजना––क्रि० स० सौंप देना, सिपुर्दकरना, जाँचना, सैंतना, इकट्ठा करना, बटोरना ।

प्रा० सहेली–(स = साथ, आली= सखी) स्त्री० साथ रहनेवाली, सखी, सजनी ।

सं० सहोदर–(सह=एकही, उदर

पेट, जो एकही पेटसे पैदा हो) पु० एकही मासे पैदाहुआ, भाई, सगा भाई।

सं० सह्य–(सह्=सहना) म्पि० सहने योग्य, जो सहाजाय।

प्रा० सा–(सं० समान, या सदृश) बराबरी को जतलानेवाला, अव्यय, (जैसे तुमसा) २ कुछ, कुछेक, थोड़ा, (जैसे कालासा=कुछेक काला) ३ कभी २ इसका अर्थ कुछ नहीं दिखाई देता है पर कहीं कहीं जिस शब्द के साथ लगाया जाता है उसके अर्थ में अधिकता जतलाता है (जैसे 'बहुत सा')।

प्रा० सांई–(सं० स्वामी) पु० मालिक, नाथ, स्वामी, २ ईश्वर, परमेश्वर, प्रभु, ३ फ़क़ीर।

प्रा० सांई–पु० हवा के धीरे धीरे चलने का शब्द।

प्रा० सांकर / **सांकरी** (सं० शृङ्खला) स्त्री० सिकली, साँकल, २ करधनी, ३ (सं० सङ्कीर्ण) सँकड़ीगली, नाका, घाटा, कठिनता, दुःख, झंझट, ५ गु० संकड़ा, संकेत, तंग।

प्रा० साकल–(सं० शृङ्खला) स्त्री० सिकली, साँकली।

प्रा० साखू–पु० पुल, सेत, २ एक तरह की लकड़ी।

प्रा० सांग / **सांगी** (सं० शंकु, या शक्ति) स्त्री० बर्छी, सेल।

प्रा० सांग–सवांग शब्द को देखो।

प्रा० सांच–(सं० सत्य) स्त्री० सचाई, सचावट, सत्य, २ गु० ठीक, सही, सच।

प्रा० सांचा–पु० मिट्टी की एक चीज जिस में कोई चीज ढाली जाती है या उसका रूप बनाया जाता है।

प्रा० सांझ–(सं० सन्ध्या) स्त्री० शाम, सन्ध्या, सायंकाल।

प्रा० सांझा / **सांझी** (सं० सन्ध्या) स्त्री० गोबर की मूरतें जिनको लड़के लड़कियां आश्विन के कृष्णपक्ष में भीतों पर बनाते हैं।

प्रा० साड / **सांड़** (सं० षण्ड) पु० बैल।

प्रा० सांडनी–स्त्री० ऊंटनी, सांडनीसवार, ऊंट पर चढ़नेवाला।

प्रा० सांडा–पु० एक जानवर जो छिपकली सा होता है और कहते हैं कि उसके तेल में बहुत जोर होता है।

प्रा० सांप–(सं० सर्प) पु० सर्प, नाग, भुजंग।

प्रा० सांभर–(सं० शाकम्भरी) पु० एक शहर जो जैपुर और जोधपुर के राज में है और वहां एक भील या सर है जिसमें बहुत अच्छा

निमक पैदा होताहै, और उसके पास एक पहाड़ पर शाकम्भरी देवीका मन्दिर है ।

प्रा० सांवला–(सं० श्यामल) गु० कुछेक काला, श्यामवर्ण ।

प्रा० सांस–(सं० श्वास) पु० स्त्री० दम, प्राण ।

प्रा० सांसउलटीलेना-बोल० हांपना दम नाकमें आना (जैसे मरने के समय में होताहै) ।

प्रा० सांसना–क्रि० स० डाटना, धमकाना, ताड़ना ।

प्रा० सांसभरना–बोल० आहभरना, लम्बी सांस लेना, ठंढी सांस लेना, पछतावा करना ।

प्रा० सांसरुकना–बोल० दम बन्द होना, गला घुटना ।

प्रा० सांसरोकना–बोल० गलाघोटना, दम बन्द करना, गला दाबना ।

प्रा० सांसा–(सं० संशय) पु० सन्देह, शंका, डर, चिन्ता ।

सं० सांसारिक–(संसार) गु० संसारका, संसारी, दुनियावी ।

सं० साकं } अव्य० सह, साथ ।
साकम् }

प्रा० साकबनिक–(सं० शाकवणिक) पु० साग बेचनेवाला, कुंजड़ा ।

प्रा० साका–(सं० शाक) पु० संवत् ।

प्रा० साकाकरना–बो० नया संवत् चलाना, बहादुरी के काम करके नामी होना ।

प्रा० साकेबंध–बोल० वह राजा जो नया संवत् जारी करता है ।

सं० साकार–(स+आकार) गु० आकार सहित, मूर्त्तिमान्, जिस की मूरतहो ।

सं० साक्षात्-(स=साथ, या साम्हने, अक्ष=आंख) क्रि० वि० साम्हने, आंखों के आगे, प्रत्यक्ष, प्रकट, प्रसिद्ध, २ गु० आप, खुद, ३ बराबर, समान ।

सं० साक्षी-(स=साथ, या साम्हने, अक्षि=आंख) गु० गवाह, जिसने अपनी आंखों से देखाहो, साखी, शाहिद, २ स्त्री० गवाही, साख, शाहिदी ।

प्रा० साख–(सं० साक्ष्य, साक्षी) स्त्री० गवाही, शाहिदी, २ यश, धाक, कीर्ति, नाम, भरम, ३ (सं० शाखा) ऋतु, फस्ल, अनाज काटनेका समय ।

प्रा० साखी–(सं० साक्षी) स्त्री० गवाही, साख २ गु० गवाह, शाहिद ।

प्रा० साग–(सं० शाक) पु० हरी तरकारी, भाजी ।

प्रा० सागपात–बोल० तरकारी ।

सं० सागर–(सगर एक राजा का नाम) पु० समुद्र, समन्दर,—हिन्दू

सात समुद्र मानते हैं (१ निमक का, २ दूध का, ३ घीका, ४ दही का, ५ शराब का, ६ ऊखके रस का, ७ शहदका) ।

प्रा०सागू—पु० सागूदाना जो बहुत हलका होता है इस लिये बीमार को बहुत बार दूध में या पानी में पकाकर खिलाते हैं ।

सं०सागून—पु० एकतरहकीलकड़ी ।

सं० सांख्य—(संख्या, सम्=अच्छी तरह से, ख्या=प्रसिद्ध होना) गु० संख्या का, पु० कपिलमुनि का बनाया हुआ एक दर्शनशास्त्र, तत्त्वपरामर्शः ।

प्रा० साज—(सं० सज्ज, षसज्=जाना) पु०समान,तैयारी,सरंजाम ।

प्रा० साजन—(सं० सज्जन) पु० सजन, प्यारा, पति ।

प्रा० साजना—(सं० सज्जन, षसज्=जाना) क्रि० स० तैयार करना, सजाना, सँवारना, पहनाना ।

प्रा० साझा—(सं०साहाय्य,सहाय अथवा साह्य, सह्=सहना) पु० हिस्सा, शराकत, शामिलात ।

प्रा० साझी—(साझा) पु० साथी, हिस्सेदार, शरीक, संगी । [र्व्व ।

सं०साटोप—गु० विकट घमण्डी, सग-

प्रा० साठ—(सं० षष्टि) गु०छः गुना दश, ६० ।

प्रा० साठी—(साठ) पु० एक तरह के चावल जो बरसात के दिनों में पैदा होते हैं और बोने के ६० दिन पीछे पक जाते हैं इस लिये साठी कहलाते हैं ।

प्रा० साड़ी—(सं० साटी) स्त्री०लुगाइयों के ओढ़ने का कपड़ा ।

प्रा०साढ़ू—(सं०श्याली वोढ़ा,श्याली अपनी लुगाईकी बहन, वोढ़ा=पति, वह्=लेजाना) पु० सालीका पति, हमज़ुल्फ़ ।

प्रा० साढ़े—(सं० सार्द्ध स=साथ, अर्ध आधा, गु० आधा के साथ, (जैसे साढे तीन=तीन और आधा) ।

प्रा० सात—(सं० सप्त) गु० चार और तीन, ७—सात पांच करना, बोल० दुविधा में होना,—सात समुन्दर=एक खेलका नाम ।

प्रा०सात्विक—(सं०सत्त्व=सतोगुण) गु० सतोगुणी, साधु, सीधा, सच्चा, सरल ।

प्रा० साथ—(सं० सार्थ, अथवा सह) सङ्ग, सहित, समेत, २ पु० संग, संगति, सोहबत ।

प्रा० साथदेना—बोल० मिलना,मेल रखना, शामिल होना ।

प्रा० साथवाला—गु० साथी, सङ्गी ।

प्रा० साथरी—स्त्री० पत्तोंका बिछौना-चटाई, आसनी ।

प्रा० साथिन–स्त्री० संगिनी, सहेली, सखी ।

प्रा० साथी–(साथ) गु० सङ्गी, मेली। मिलापी, मित्र, दोस्त ।

प्रा०साद } (सं०श्रद्धा) स्त्री० इच्छा,
साध } चाह, अभिलाषा ।

सं० सादर–(स=साथ, आदर=सन्मान) क्रि० वि० आदरसे सन्मान से, खातिर से ।

सं० सादृश्य–(सदृश) भा० पु० बराबरी, समानता, तुल्यता ।

प्रा० साध–(सं० साधु) पु० सन्त, सत्यपुरुष, सज्जन, भला आदमी, २ वैरागी ।

सं० साधक–(साध् + अक, साध=सिद्धकरना, पूरा करना) क० पु० साधनेवाला, अभ्यास करनेवाला, मन्त्र साधनेवाला, तपस्वी, २ मददगार ।

सं० साधन–(साध=सिद्ध करना, पूरा करना) भा० पु० उपाय, यत्न, कामसिद्ध करनेकी तदबीर, २ अभ्यास, ३ व्याकरण में करणकारक ।

प्रा० साधना–(सं०साधन) क्रि० स० सिद्धकरना, पूरा करना, पक्का ठहराना, साबित करना, बनाना, ठीक ठाक करना, २ अभ्यास करना, स्वभाव डालना, बान डालना, सीखना ।

सं० साधनीय– (साध् + अनीय) कर्म० सिद्ध करने योग्य, पूरा करने लायक, निष्पाद्य ।

सं० साधारण–(स=साथ, धारण=रखना) गु० सामान्य, सहज, २ बराबर, समान, आम ।

सं० साधारणधर्म–पु० अहिंसासत्यमस्तेयंशौचमिन्द्रियनिग्रहः । दमक्षमार्जवं दानं धर्मं साधारणंविदुः १ अहिंसा, २ सत्य, ३ अस्तेय चोरी न करना, ४ शौच, पवित्र रहना, ५ इन्द्रियों को रोकना, ६ दम, मनको रोकना, ७ क्षमा, ८ आर्जव, कोमलता, ९ दान यह साधारण धर्म हैं ।

सं० साधित–कर्म० निष्पादित, सिद्ध किया गया, पूरा किया गया ।

सं० साधु–(साध=सिद्ध करना, पूरा करना) गु० जो शास्त्रविहित कर्मों को करता है या जो परके कार्यको सिद्ध करताहै वह साधुहै । सन्त, उत्तमजन, सत्य पुरुष, सज्जन, सीधा, सच्चा, २ पु० साध, वैरागी, भला आदमी ।

सं० साध्य–(साध=पूरा करना) कर्म० पूरा होने योग्य, सिद्ध होने के योग्य जो होसके, २ सुगम, सहज, आसान, ३ चंगा होने के योग्य, जिसका इलाज होसके, ४ पु० जो बात सिद्ध की जाय, जो बात पक्की ठहराईजाय ।

प्रा० सान–(सं० शाण, शान् या शो तीखा करना) स्त्री० सिल्ली, पथरी, लोहे के हथियारों पर धार चढ़ाने

का पत्थर, एक चक्राकार यन्त्र ।

सं० सानन्द–(स+आनन्द) गु० आनन्द के साथ, हर्षित, खुश ।

सं० सानुकूल–(स+अनुकूल) गु० कृपालु, दयालु, सहायक, मिहरबान ।

प्रा० सान्ना–(सं० सन्धान) क्रि० स० मिलाना, गूंदना, २ (सं० शानन, शान्=तीखा करना) चोखा करना, तीखा करना, तेज़ करना, सान लगाना ।

प्रा० साबर } (सं० शम्बर, या शा-
सांबर } म्बर, शम्ब्=जाना) पु० एक तरहका बारहसींगा, २ बारहसींगा का चमड़ा ।

सं० साम–(सो=नाश करना पापों का) पु० तीसरा वेद, जिसकी ऋचा गाई जाती हैं ।

सं० सामग्री–(सामग्र=सब) स्त्री० सामा, सामान, असबाब, चीज़वस्तु ।

सं० सामन्त–पु० वीर, बहादुर, पराक्रमी, योद्धा, मल्ल, २ उपराज, जमींदार, एक लाख रुपये साल की आमदनी जिसको है ।

सं० सामयिक–गु० समय पर, कालोचित, अवसर की, बेरापर की ।

सं० सामर्थ्य } (समर्थ) स्त्री० बल, शक्ति,
प्रा० सामर्थ } पराक्रम, योग्यता ।

प्रा० सामर्थी–(सं० समर्थ) क० बलवान्, पराक्रमी, प्रतापी, योग्य ।

प्रा० सामा–(सं० सामग्री) पु० स्त्री० नाना प्रकार के भोजन, सामान, सामग्री ।

सं० सामाजिक–पु० सभासद, सभ्य।

फ़ा० सामान–(सामान) पु० असबाब, असाला, सामा, सामग्री ।

सं० सामान्य–(समान) गु० मध्यम, साधारण, चलनसार, चलनीक, प्रचलित, आम ।

सं० सामान्यतः–गु० साधारण से आमतौर पर ।

सं० सामान्या–(सामान्य) स्त्री० साधारण नायिका, धन के लालच से पराये आदमी के पास जाने वाली, वेश्या, व्यभिचारिणी, सामान्या, नायिका तीन तरह की हैं, (१ अन्यसंभोगदुःखिता, २ वक्रोक्तिगर्विता, ३ मानवती) ।

सं० सामीप्य–(समीप) भा० पु० समीपता, सभीपी, नज़दीकी, निकटता, पड़ोस ।

सं० सामुद्रिक–(स=साथ, मुद्रा=चिह्न) भा० पु० एक विद्या जिससे स्त्री पुरुषके हाथ पैर के चिह्नों से उनके भले बुरे भागको बतलाते हैं ।

सं० साम्नाय–गुरुपरम्परागत सदुपदेश, सलाह ।

प्रा० साम्ना } (सं० सम्मुख) पु० सम्मु-
साम्हना } ख, आगा, अगवाड़ा।

सं० साम्प्रत—अव्य० अधुना, इदानीं, योग्य, उचित, अब ।

प्रा० साम्हनाकरना-बोल० लड़ाई करना, लड़ना, चढ़ाई करना, मुकाबिला करना ।

सं० सायङ्काल—(सायम्=सांझ, सो=नाश करना और काल=समय) पु० सांझ, सन्ध्या का समय, दिन का अन्त ।

सं० सायुज्य-(स=साथ, युज्=मिलना) पु० एक प्रकार की मुक्ति, परमेश्वर में मिल जाना, एक हो जाना, एकत्व, अभेद ।

सं० सार—(सृ=जाना) पु० गूदा, मज्जा, हीर, सत, सत्त्व, रस, जल मूल, २ बल, जोर, ३ मूलबात, असलमतलब, खुलासा, ४ क़ीमत, मोल, ५ खाद, खात, ६ लोहा, ७ धन, ८ लाभ, फ़ायदा, फल, ९ गु० बहुत अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ ।

प्रा० सार—(सं० शार, अथवा शारि शॄ=मारना) स्त्री० चौपड़कीगोटी ।

सं० सारङ्ग—(सृ=जाना) पु० एक राग का नाम, २ मोर, ३ सांप, ४ बादल, ५ मोरकी बोली, ६ हरिण, ७ पानी, ८ एक देश का नाम, ९ चातक, पपीहा, १० हाथी, ११ राजहंस, १२ सिंह, १३ कोकिला, १४ एक पेड़का नाम, १५ कामदेव, १६ कई प्रकार के रंग, १७ भौंरा, मधुमक्खी, १८ धनुष, १९ स्त्री, २० दीपक, २१ वस्त्र, २२ शंख, २३ चंदन, २४ कपूर, २५ कमल, २६ आभरण, शोभा, सुवर्ण, २७ केश, २८ पुष्प, २९ छत्र, ३० रात्रि ३१ भूमि, ३२ दीप्ति ।

“ सारँगने सारँग गह्यो ।
मोर साँप
“ सारँग बोल्यो आय ॥
बादल ।
“ जो सारँग सारँग कहे ।
मोर मोर की बोली ।
“ सारँग मुँहते जाय ॥
साँप ।

अर्थ—मोर ने सांपको पकड़ा और बादल गर्जा, जो मोर अपनी बोली बोले, तो सांप मुँह से निकल कर भागे । (कहते हैं कि मोर का यह स्वभाव है कि जब बादल को गर्जते सुनता है तो बहुत खुशी से बोलता है और नाचता है)।

सं० सारङ्गी—(सृ=जाना) स्त्री एक बाजेका नाम, किंगिरी ।

सं० सारण—(सृ=जाना) पु० रावण के एक मंत्रीका नाम, २ अतिसार रोग।

सं० सारथि—(सृ=जाना, या स+रथ) पु० रथवान्, रथके घोड़े हांकने वाला, यन्ता, सूत ।

सं० सारदा—(सार=तत्त्व, दा=देने वाली, दा=देना) स्त्री० सरस्वती, गु० सार देनेवाली।

प्रा० सारना—(सं० साधन) क्रि० स० बनाना, करना, पूरा करना, सिद्ध करना।

सं० सारस—(सरस्=तालाब) पु० एक तरह का पखेरु, २ चांद, ३ कमल, ४ कमर में पहनने का गहना, ५ गु० सरोवर की चीज।

सं० सारस्वत—(सरस्वती) पु० एक देश का नाम, २ उस देश का मनुष्य, पंचगौड़ (१ सारस्वत, २ कान्यकुब्ज, ३ गौड़ ४ उत्कल, ५ मैथिल) ये विन्ध्याचल के उत्तरवासी हैं पंचद्राविड़ (१ महाराष्ट्र २ कार्नाटक, ३ गुरजर, ४ द्राविड़, ५ तैलंग) ये विन्ध्याचल के दक्षिणवासी हैं, ब्राह्मणों में एक जात, गु० सरस्वती देवी का, सरस्वती नदी का।

प्रा० सारा—(सं० सर्व) गु० पूरा, सम्पूर्ण, सब, समस्त, २ (सं० श्याल, श्यै=जाना) पु० अपनी लुगाई का भाई, साला।

सं० सारिका—(सृ=जाना) स्त्री० मैना पखेरू।

प्रा० सारी—(सं० शाटी) स्त्री० साड़ी स्त्रियों के पहनने अथवा ओढ़ने का कपड़ा, २ (सं० सार) दूध का सार, मलाई।

सं० सार्थक—(स+अर्थ) गु० अर्थ सहित, २ सफल, सिद्ध, मौजूद।

सं० सावर्ण / सावर्णि—पु० सवर्णा, सूर्यपत्नी में जन्मा या सूर्य का पुत्र, १४ मनु में अष्टममनु।

सं० सार्धम्—अव्य० साकम्, साथ।

सं० सावित्र—पु० रुद्र, महादेव, सूर्य वसुदेवता, ब्राह्मण।

सं० सार्वभौम—(सर्वभूमि) पु० सब संसार का राजा, चक्रवर्त्ती राजा २ उत्तर दिशा का हाथी।

सं० साल-(सल्=जाना) पु० एक पेड़ और उसकी लकड़ी का नाम साखू।

प्रा० साल—(सं० शल्य, शल्=जाना) पु० गांसी, कांटा, शूल, २ छेद, ३ (सं० शाला) स्त्री० जगह, घर, ४ पाठशाला, स्कूल, ५ (सं० शृगाल) पु० सियार, गीदड़।

प्रा० सालन / सालना—पु० मांस, मांस की तरकारी, २ साग, तरकारी।

प्रा० सालना—(सं० शल्य, शल्=जाना) क्रि० स० छेदना, बेधना, धसाना, पैठाना, बर्मा से छेदकरना, बर्माना, पारकरना, चुभाना, २ क्रि० अ० दुखना, पिराना, खटकना, दुखपाना।

प्रा० सालसा—पु० एक तरह की औषध जिसका अर्क पीने से शरीर

का लोहू साफ़ होता है और इस को अरबी में 'उशबह और अंगरेजी में सार्सा पैरिल्ला' कहते हैं।

प्रा० साला—(सं० श्याल, श्यै=जाना) पु० स्त्री का भाई, २ (सं० शाला) स्त्री० जगह, घर।

प्रा० साली—(सं० श्याली) स्त्री० स्त्री की बहिन।

प्रा० सालूर—पु० एक तरह का लाल कपड़ा।

सं० सालू—(पु० मंडूक) मेढ़क।

प्रा० सालोतरी—(शालि=घोड़ा, होत्र=वैद्य पु० घोड़ों का वैद्य।

प्रा० सावक—(सं० शावक) पु० बच्चा, बालक।

प्रा० सावकरन—(सं० श्यामकर्ण) पु० काले कान का घोड़ा।

सं० सावकाश—(स=साथ, अवकाश=अवसर) पु० अवसर, अवकाश, समय, मौक़ा, फ़ुर्सत, सुभीता, काम से छुट्टी।

सं० सावधान—(स=साथ, अवधान=चौकसी, अव, धा=रखना) गु० चौकस, सचेत, ख़बरदार, सुचेत, अग्रशोची, होशियार, सजग।

सं० सावधानी—(सावधान) स्त्री० चौकसी, चौकसाई, सुचेती, सुरता, ख़बरदारी, होशियारी, चेतौनी, अग्रशोच।

प्रा० सावन—(सं० श्रावण) पु० चौथा हिन्दी महीना।

प्रा० सावनहरे न भादौं सूखे—बोल० सदा सरीखे, सदा एक से।

प्रा० सावन्त—(सं० सामन्त) गु० वीर, बहादुर, योद्धा, पराक्रमी।

प्रा० सास, सासू—(सं० श्वश्रू) स्त्री० पति या पत्नी की मा।

प्रा० साहु—(सं० साधु) पु० महाजन, बड़ा सौदागर, कोठीवाल, दूकानदार, भला आदमी।

सं० साहस—(सहसा) पु० बल, ज़ोर, वेग, २ ढारस, हिम्मत, वीरता, पराक्रम, जुरअत।

सं० साहसी—(साहस) गु० तेज़, प्रबल, २ हिम्मतवाला, निडर, पराक्रमी, वीर, ढीठ।

सं० साहित्य—(सहित=मेल) पु० मेल, मिलान, साथ, २ एक विद्या जिससे बोली के बोलने और लिखने की सुन्दरता जानी जाती है और इस विद्या के अंग अर्थात् हिस्से अलङ्कार, रस, छंद आदि हैं।—और कवियों के बनाये हुये काव्यों को भी साहित्य कहते हैं, जैसे भट्टि रघुवंश, कुमारसम्भव, माघ, किरातार्जुनीय, मेघदूत, विदग्धमुखमण्डन और शान्तिशतक आदि, इल्म अदब।

प्रा० साही } (शल्लकी,शल्ल्=जाना)
सेही } स्त्री० कंटकी, एकजानवर जिसकी पीठपर कांटे कांटे होते हैं ।

प्रा०साहूकार-(सं० साधुकार,साधु= सच्चा,कार=करनेवाला,कृ=करना) पु० महाजन, बैपारी, हुण्डीवाला, कोठीवाला,बड़ा दुकानदार, २ईमानदार, सच्चा और भलाआदमी ।

प्रा० साहूकारी –स्त्री० बैपारी, लेनदेन,सौदागरी, वणिज, व्यवहार, हुण्डी का व्यवहार ।

प्रा० सिंगा –(सं० शृङ्ग)पु० तुरई, रणसिंगा ।

प्रा० सिंगार –(सं० शृंगार) पु० शोभा, गहने कपड़ों की सजावट, २ नौरसों में का एक रस ।

प्रा० सिंगारना –(शृंगार) क्रि० स० सजाना, सवाँरना, शोभितकरना ।

प्रा० सिंघाड़ा –(सं० शृंगाट शृंग= बड़ाई, अट्=जाना) पु० एकतरह का फल जो पानी में पैदा होताहै, पानी फल ।

सं० सिंह –(हिंस्=मारना) पु०शेर, केशरी, मृगराज, मृगेन्द्र पशुओं का राजा, २ पांचवीं राशि, ३ हिंदुओं में एक पदवी, हिन्स् का वर्ण विपर्यय होने से सिंह बनगया ।

सं० सिंहद्वार –पु० पुरद्वार, फाटक।

सं०सिंहनाद –(सिंह+नाद) पु० शेर का गर्जना, २ लड़ाई का शब्द, सिंहके ऐसा शब्द, भयानक शब्द ।

सं० सिंहनी –(सिंह)स्त्री० शेरनी ।

प्रा० सिंहपौर –(सिंह+पौर)स्त्री० बड़ा दरवाज़ा अथवा फाटक जहां बहुत बार सिंह की मूरत रक्खी रहती है ।

सं०सिंहलद्वीप –पु०लङ्का,सीलोन।

सं० सिंहविक्रान्त –पु०घोड़ा,अश्व।

सं० सिंहासन –(सिंह+आसन) पु० राजा का आसन, तख्त, पाट ।

सं० सिंहिका –स्त्री० राहुकी माता, कश्यपपत्नी, २ सिंहनी ।

सं० सिकता –स्त्री० बालू, रेत ।

प्रा० सिकना –क्रि०अ०सेंकाजाना, भूना जाना ।

प्रा०सिकरी –(सं० शृङ्खला) स्त्री० सांकल, संकल, सिकली ।

सं० सिक्त –(सिच्=सींचना) कर्म० सींचा हुआ, कृतसेचन ।

प्रा० सिख –(सं० शिष्य) पु०चेला, २ नानकके मतको माननेवाला ।

प्रा० सिखर –(सं० शिखर) पु० पहाड़ की चोटी, २ मन्दिरों के ऊपर का गुम्बज़ ।

प्रा० सिखरन –(सं०शिखरिणी)पु० दही में चीनी और मिशमिश मिली हुई खाने की चीज़ ।

प्रा० सिखाई–(सिखाना) भा० स्त्री० पढ़ाई, शिक्षा।

प्रा० सिखाना, सिखलाना – (सं० शिक्षण, शिक्ष्=सिखाना) क्रि० स० पढ़ाना बतलाना, शिक्षा देना, उपदेश देना, २ डाटना, धमकाना, दंडदेना, ताड़ना करना।

प्रा० सिगरा, सिगरौ, सगरा – (सं० समग्र) गु० सब, सारा, संपूर्ण, हरएक।

प्रा० सिझाना–(सिद्ध) क्रि० स० पकाना, रींधना, उबालना, २ मारडालना। [मंदताई।

प्रा० सिठाई–(सीठा) स्त्री० फिकाई,

प्रा० सिड़–स्त्री० बौड़ाहट, बावलापन, पागलपन, उन्मत्तता।

अं० सिरिडकेट–थोड़े म्यम्बर जिनको सिनेट नियत करती है काम होने के लिये।

प्रा० सिड़ा, सिड़ी – गु० बावला, बौड़हा, पागल, उन्मत्त, मस्त।

सं० सित–(सो=नाश करना) गु० धौला, सफेद, श्वेत, शुक्लवर्ण।

सं० सिद्ध–(सिध्=सिद्ध करना, पूरा करना) पु० एक प्रकार के देवता, २ योगी, व्यासआदि मुनि, ऐसा मनुष्य जिसके वश में अष्ट सिद्धि हों और जिसको भूत, वर्त्तमान, भविष्यत् की बात मालूम हो, ज्ञानी, तपस्वी, सन्त, ३ ज्योतिष में एक योग का नाम, ४ गु० पूरा, समाप्त, पक्का, बना, तैयार, २ प्रसिद्ध विख्यात, जाहिर, ३ सफल, ४ साबित किया हुआ, पक्का ठहराया हुआ, सच्चा ठहराया हुआ, ५ निश्चय किया हुआ, निर्णय किया हुआ।

सं० सिद्धान्त–(सिद्ध+अन्त) पु० सच ठहराई हुई बात, सिद्ध की हुई बात, तर्क अर्थात् दलील से जो बात सच ठहराई जाय, फल, परिणाम, नतीजा, २ सूर्य सिद्धान्त आदि ज्योतिष के शास्त्र।

सं० सिद्धि–(सिध्=सिद्ध करना, पूरा करना) स्त्री० मन के मनोरथ का पूरा होना, मनवांछित फल का मिलना, मन चाही बात का पूरा होना, २ अणिमा आदि आठ सिद्धि (अष्टसिद्धि शब्द को देखो)

सं० सिद्धयोग–पु० कार्यसिद्धि हेतु योग, शुक्रेनन्दा बुधेभद्रा शनौरिक्ता कुजेजया। गुरौपूर्णाचसंयुक्ता सिद्धि योगः प्रकीर्तितः। अर्थ शुक्रवार परिवा, बुधवार दुइज, शनिवार चौथि, मंगल वार तीज, बृहस्पतिवार पंचमी, ज्योतिष मत से उक्तवारों में उक्त तिथि होवें तो सिद्धियोगकहलाते हैं।

प्रा० सिधारना–(सं० सिध्=जाना)

क्रि० अ० जाना, विदा होना, रवाने होना, चला जाना, क्रि० स० दुरुस्त करना, सवाँरना, ठीकठाक करना, तरतीब देना।

प्रा० सिनकना—क्रि० स० नाकभाड़ना, नाक साफ करना।

अं० सिनेट—युनीवरसिटीकेम्यम्बरों की मण्डली।

सं० सिन्दूर—(स्यन्द्=चूना, या टपकना) पु० एक तरह का लाल चूरण जिससे स्त्रियां मांग भरती हैं।

सं० सिन्धु-(स्यन्द्=चूना, या टपकना) पु० समुद्र, समंदर, सागर, २ एक नदी जिसको इंडस और अटक भी कहते हैं, ३ सिंधका देश, ४ हाथी का मद, ५ एक रागिणी का नाम।

सं० सिन्दुर, सिन्धुर—(सिन्ध्=हाथी का मद, अर्थात् मद वाला) पु० हाथी, हस्ती।

सं० सिन्धुरगामिनी—(सिन्धुर=हाथी, गामिनी=चलनेवाली, गम्=चलना) स्त्री० वह स्त्री जिसकी हाथी सी चाल हो, गजगामिनी।

सं० सिप्र—(सप्=मिलना) पु० निदाघजल, पसीना, चांद, घाम।

सं० सिप्रा—(सप्=मिलाना) स्त्री० एक नदी जो उज्जैन के पास है, २ महिषी, भैंस, कुट्टनी, कुटनी, रजस्वला, कपड़ों से हुई स्त्री।

प्रा० सिमटना—क्रि० अ० सिकुड़ना, इकट्ठा होना, बटुरना।

प्रा० सिय, सिया—(सं० सीता) स्त्री० सीता, जानकी, श्री रामचन्द्र की पत्नी और राजा जनक की बेटी।

प्रा० सियपी—(सं० सीताप्रिय) पु० सीतापति श्रीरामचन्द्र, रघुनाथ।

प्रा० सियार, सियाल—(सं० शृगाल) पु० गीदड़।

प्रा० सिर—(सं० शिर) पु० माथा, मस्तक।

प्रा० सिरउठाना—बोल० अपने मालिक से फिर जाना, बग़ावत करना।

प्रा० सिरकरना-बोल० शुरूअ करना।

प्रा० सिरकाढ़ना—बोल० नामी होना, प्रसिद्ध होना, मशहूर होना।

प्रा० सिरकेज़ोर-बोल० अपने जोरसे।

प्रा० सिरकेभल—बोल० औंधा सिर, मुंहभरा।

प्रा० सिरखुजलाना—बोल० मार खायाचाहना, सज़ाचाहना, पिटा चाहना।

प्रा० शिरचढ़ा—बोल० घमण्डी, अभिमानी।

प्रा० सिरचढ़ाना—बोल० बड़ाई करना, बड़ा जानना, माथे पर रखना, पवित्र समझना, २ इतराना, घमंडी-

निकलना, २ उबलना, गलना ।

प्रा० सीटी-स्त्री०मुंहसे सीसी ऐसी आवाज निकालना ।

प्रा० सीठा-गु०फीका,बेरस,असार।

प्रा० सीढ़ी (सं० श्रेणि) स्त्री० सोपान, नसेनी, जीना ।

प्रा० सीतला-(सं०शीतला, शीत=ठंढा, ला=लेना) स्त्री० माता, चेचक, गोटी ।

सं० सीता-(सि=बांधना) स्त्री० जानकी, वैदेही, मिथिला के राजा जनक की बेटी और श्रीरामचन्द्र की पत्नी, २ हलके नीचे एक लोहे का फल लगा रहता है उसे भी सीता कहते हैं-(और जब राजा जनक यज्ञ के लिये हल जोतकर धरती को साफ कर रहे थे तब धरती में से एक घड़ा निकला उसमें से एक लड़की निकली, इसीकारण से उसका नाम सीता रक्खा) ।

सं०सीतापति-(सीता+पति) पु० श्रीरामचन्द्र ।

प्रा० सीताफल-पु० सरीफा,खिरीसागर, कुम्हड़ा ।

प्रा० सीधा-(सं०साधु) गु० सोझा, सरल,२साम्हन, सन्मुख, ३ सादा, भोला, निष्कपट, शुद्ध, ४ सच्चा, साधु,खरा, साफ़दिल, धर्मी, ईमानदार, नेक,५दाहिना, ६ (सं०सिद्ध) पु० कोरा अन्न, बेपका खाना ।

प्रा० सीना-(सं० सीवन, सिव्=सीना)क्रि० स०टांकना, टांकालगाना, टांका मारना, गांठना ।

प्रा० सीप }
सीपी } स्त्री०समंदरके एकजानवरकी हड्डी जिसमें से मोती निकलता है, २ पक्काआम ।

सं० सीमन्त-पु० केश रचना, मांग काढ़ना, गर्भवती का छठे या आठवें महीने का संस्कार ।

सं० सीमा-(सि=बांधना) स्त्री० सिवाना,हद,सींव,२मर्यादा,अवधि।

सं०सीमाविवाद-पु० अठारह प्रकार के न्याय का एक न्याय, सरहद्दी झगड़ा ।

प्रा० सीय-(सं० सीता) स्त्री० जानकी, वैदेही ।

प्रा० सीरा-पु० मोहनभोग, हलुवा ।

प्रा० सीरा }
सीला } (सं० शीतल) गु० ठंढा, शीतल, गीला ।

प्रा० सीस=शीस शब्द को देखो ।

प्रा० सीसा-(सं०सीस, या सीसक, सि=बांधना) पु० एक धातुका नाम।

प्रा० सीसों-(सं० शिंशपा) पु० शीशम का पेड़ या उसका लकड़ी ।

सं० सु-गु० उपस० अच्छा, भला सुन्दर, उत्तम, बहुत, क्रि० वि० अच्छी तरह से, सुख से, सुन्दरता से, २ सुगमता से, सहज में, बे-

मिहनत, ३ कभी कभी, ४पूजा और आदर और संपदा आदि अर्थों में भी बोला जाता है।

प्रा० सुकचाना } (सं० सङ्कोच)
सुकुचाना } क्रि० अ० लजाना, शर्माना, २ डरना, क्रि० स० किसी को लजाना, चपाना।

प्रा० सुकड़ना-(सं० सङ्कोचन) क्रि० अ० सिमटना, इकट्ठा होना।

सं० सुकण्ठ-(सु=अच्छा,कण्ठ=गला) पु० वानरों का राजा सुग्रीव।

सं० सुकर्कश-स्त्री० कठोर मार्ग।

सं० सुकर्म्म-(कृ=करना) पु० उत्तम काम, सत्प्रयोग, विश्वकर्म्मा।

सं० सुकाल-(सु=अच्छा,काल=समय) पु० अच्छा समय, अच्छी ऋतु, २सँधाई,मस्ताई,३बहुतायत।

सं० सुकुमार-(सु=सुन्दर, कुमार=बालक) गु० कोमल, मनोहर, सुन्दर, नाजुक।

सं० सुकृत-(सु=भला कृ=करना) बोल०धर्म,पुण्य,अच्छाकाम,अच्छी करनी, गु० पुण्यात्मा, धर्मात्मा, सुशील, भाग्यवान्।

सं० सुकेत-(सु=अच्छा,केतु=झंडा) पु० एक राक्षस या यक्ष का नाम जो ताड़का का बाप था।

सं० सुकेतुसुता-(सुकेतु+सुता) स्त्री० ताड़का।

सं० सुख-(सुख=सुखी होना, अथवा सु=अच्छी तरह से, खन्=खोदना (दुःख को) पु० चैन, आनन्द, आराम, कल, शान्ति, हर्ष।

प्रा० सुखचैन— बोल० आराम, चैनचान।

प्रा० सुखपाना-बोल० आराम करना, चैन करना।

सं० सुखद-(सुख=चैन, द=देनेवाला,दा=देना) क० पु० सुखदायी, सुख देनेवाला, सुखदायक।

प्रा० सुखदाई } (सुख=चैन,दा=
सं० सुखदायक } देना) क० पु० सुख देनेवाला।

सं० सुखधाम-(सुख=चैन, धाम=घर) पु० सुख के घर, सुखदाई।

सं० सुखपाल-(सुख=चैन+पाल्=पालना) पु० पालकी, डोली।

सं० सुखमा-(सुख=चैन, मा=नापना) स्त्री० परमशोभा, बहुतही सुन्दरता। [सुखी।

प्रा० सुखारी (सं० सुख) गु०

सं० सुखावह-(सुख+वह=प्राप्त करना) क०पु०सुखजनक,सुखदाता।

सं० सुखी-(सुख) गु० सुखपानेवाला, सुखभोगनेवाला, सुखिया, सुखारी।

सं० सुगति—(सु=अच्छी,गति=चा

ल) स्त्री॰ अच्छीगति, मुक्ति, छुटकारा।

सं॰ सुगन्ध-(सु=अच्छी, गन्ध=बास) स्त्री॰ अच्छीबास, महक, खुशबू।

सं॰ सुगन्धित-(सुगन्ध) क॰ जिस में अच्छी बास हो, सुगन्ध वाला, खुशबूदार।

सं॰ सुगम-(सु=अच्छीतरहसे, गम्=जाना) गु॰ सहज, आसान, सरल।

सं॰ सुगमता-भा॰ स्त्री॰ सरलता, आसानी।

सं॰ सुग्रीव-(सु=सुन्दर, ग्रीवा=गरदन) पु॰ वानरों का राजा और सूर्य का बेटा जो किष्किन्धा पुरी का राजा और श्रीरामचन्द्रका मित्र और सहायक था, २ विष्णु के रथ का घोड़ा।

प्रा॰ सुघड़-(सुघट, सु=अच्छा, घट=बनाहुआ, घट्=बनाना) गु॰ सुन्दर, सुडौल, सुथरा, मनोहर, बहुत अच्छा।

सं॰ सुघटित-र्म्म॰ सुन्दर रचित।

प्रा॰ सुचकना-(सं॰ सुचकित) क्रि॰ अ॰ अचंभा करना।

सं॰ सुचरित-(चर=जाना, खाना) क॰ पु॰ श्रेष्ठाचार, शुभाचरण, नेकचलन।

सं॰ सुचित्-(सु=अच्छा, चित्=मन) गु॰ सुगम, आसान, २ निश्चिन्त, बेफिक्र, निर्चित, ३ चौकस, सावधान।

प्रा॰ सुचिताई भा॰ स्त्री॰ निश्चिन्ताई, सावधानी, बेफिक्री।

सं॰ सुचेत-(सु=अच्छी, चत=सुध गु॰ चौकस, सावधान, होशियार, सचेत।

सं॰ सुजन-(सु=अच्छा, जन=मनुष्य) गु॰ साधु, सज्जन, भला मानस, भलाआदमी।

सं॰ सुजनता-भा॰ स्त्री॰ सौम्यता, सौजन्यता, सीधापन, भलमनसई, भलमन्सी।

प्रा॰ सुजान-(सं॰ सज्ञानी, सु=अच्छा, ज्ञानी=जाननेवाला) गु॰ ज्ञानी, चतुर, प्रवीण, बहुत अच्छा जाननेवाला।

प्रा॰ सुझाना-क्रि॰ स॰ दिखाना, बताना, समझाना।

प्रा॰ सुठि-(सं॰ सुष्ठु सु=अच्छीतरह से, स्था=ठहरना) गु॰ सुन्दर, उत्तम, २ बहुत, अत्यन्त।

प्रा॰ सुडौल } (सु=अच्छा, डौल या सुढ़ब } ढब=रूप) गु॰ सुघड़, सुथरा, सुन्दर, मनोहर।

सं॰ सुत-(सु=पैदा होना, जन्मना) पु॰ बेटा, पुत्र, लड़का।

सं॰ सुता-(सुत) स्त्री॰ बेटी, पुत्री, कन्या, लड़की।

प्रा॰ सुतार-(सं॰ सूत) पु॰ बढ़ई, खाती (सं॰ सुतारा, सु=अच्छा,

तारा=नक्षत्र) अच्छा समय, अव-
काश, घात, दांव ।

प्रा० सुथरा—गु० अच्छा, सुन्दर, सुडौल, सुहावना । [फकीर ।

प्रा० सुथरासाही—पु० नानकसाही

सं० सुदर्शन—(सु=अच्छा,दर्शन= देखना जो अच्छा देखा जाता है) पु० विष्णु का चक्र,२गु०जो देखने में अच्छा हो सुन्दर, सुहावना ।

सं०सुदामा—(सु=अच्छा,दा=देना) पु० एक मालीका नाम जिसने मथुरा में जाते समय श्रीकृष्ण को माला पहनाई थी, २ श्रीकृष्णके साथी एक ग्वाल का नाम, ३ श्रीकृष्ण के एक गरीब मित्र का नाम जो जाति का ब्राह्मणथा जिसको फिर श्रीकृष्णने बहुतही धनवान् बनादिया,४ बादल ५ एक पहाड़ का नाम, ६ समुद्र ।

सं०सुदि—(सु=अच्छी तरहसे,दिव्= चमकना) अव्य० उजाला पाख, शुक्लपक्ष ।

सं०सुदिन—(सु+दिन) पु०अच्छा दिन, अच्छा समय ।

प्रा० सुध } (सं० सुधी, सु=अच्छी,
सुधि } धी=बुद्धि) स्त्री० चेत, याद, स्मरण, खबरदारी ।

प्रा० सुधबुध—(सं० शुद्धबुद्धि) स्त्री० समझ, बूझ, चेत, शुद्धज्ञान ।

प्रा०सुधलेना—बोल० खबर लेना ।

प्रा० सुधरना—(सं० सुधरण, सु= अच्छी तरह से, धृ=रखना) क्रि० अ० सही होना, अच्छा होना, २ बनना, सफल होना, ३ संभलना ।

सं०सुधा—(सु=अच्छी भांतिसे,धे= पीना,या धा=रखना) पु०अमृत,अमी, पीयूष, आबहयात, २ रस, जल ।

सं० सुधांशु—(सुधा=अमृत, अंशु= किरण, जिसकी किरणें अमृत के ऐसी आनन्द देनेवाली हैं) पु० चांद, चन्द्रमा, २ कपूर ।

सं० सुधाकर—(सुधा=अमृत, कर= किरण) पु० चांद, चंद्रमा, २ कपूर ।

प्रा०सुधारना—(सुधरना) क्रि०स० सँवारना,बनाना, अच्छा करना,सही करना, सजाना, ठीक ठाक करना ।

सं० सुधी—(सु=अच्छी, धी=बुद्धि जिसकी हो) पु० पण्डित, बुद्धि-मान्, विद्वान्, सुबुद्धि, विज्ञ ।

प्रा०सुन—(सं०शून्य) गु० बेहोश,मू-च्छित,शीतांगी,२खाली,छूछा,रीता ।

प्रा० सुनसान—बोल० उजाड़, २ चुपचाप, ३ एकान्त, निराला ।

प्रा०सुनना—(सं० श्रवण) क्रि० स० कान देना, श्रवण करना ।

सं० सुनयना—स्त्री० सुन्दर नेत्र वा-

ली, २ जनकपत्री ।

प्रा० सुनहरा } (सोना) क० सो-
सुनहरी } नहला, सोने का या सोना सा ।

प्रा० सुनार—(सं० स्वर्णकार, स्वर्ण =सोना, कार=करनेवाला, कृ= करना । अर्थात् जो सोने की चीज बनावे) क० पु० सोने चांदी की चीज बनानेवाला ।

प्रा० सुनारिन } स्त्री० सुनार की
सुनारनी } स्त्री० सुनार की लुगाई ।

प्रा० सुनारी—स्त्री० सुनार का काम ।

प्रा० सुनावनी—(सुनाना) स्त्री० मरने के समाचार, जो कोई आद-मी परदेश में मरजाय उसके मरने की खबर ।

सं०सुनासीर—(सु=अच्छा, नासीर =सेना का मुँह । अर्थात् जिसकी सेना अच्छी सजी हुई हो) पु० इन्द्र, देवताओं का राजा ।

सं० सुन्दर—(सु=अच्छी तरह से, दृ=आदरकरना) गु० मनोहर, सुरूप, बहुत अच्छा, सुडौल, खूबसूरत ।

सं० सुन्दरता—(सुन्दर) भा० स्त्री० मनोहरता, शोभा, छवि ।

सं०सुन्दरी—(सुन्दर) स्त्री० रूपवती, खूबसूरत स्त्री । [बिन्दी ।

प्रा०सुन्ना—(सं० शून्य) स्त्री० सिफर,

सं०सुपथ—(सु=अच्छा, पथ=रास्ता) पु० अच्छी रस्ता, सुमार्ग, अच्छी राह, २ अच्छा चलन ।

सं०सुपर्ण—(सु=अच्छा, पर्ण=पत्ता, या पर्ण) पु० गरुड़, २ गु० अच्छे पत्तोंवाला ।

सं०सुपात्र—(सु + पात्र) गु० योग्य, भलामानस, उत्तमजन, २ पु० अच्छा बरतन, शरीफ़ ।

प्रा० सुपारी—स्त्री० एक कड़ा फल जिसको पान के साथ खाते हैं, पूगीफल । [ता ।

प्रा० सुपास—पु० आराम, सुख, सुभी-

सं० सुपुत्र—(सु=अच्छा, पुत्र=बेटा) पु० सपूत, अच्छा लड़का ।

सं० सुप्त—(स्वप्=सोना) क० पु० निद्रित, सोयाहुआ ।

सं० सुप्ति—भा० स्त्री० नींद, निद्रा ।

सं० सुफल—(सु + फल) गु० सिद्ध, फलदायक, सफल, लाभकारी, २ पु० अच्छा फलवाला पेड़ ।

सं०सुबुद्धि—(सु+बुद्धि) गु० बुद्धि-मान्, अच्छी समझवाला, चतुर, प्रवीण ।

सं०सुभग-(सु=अच्छा, भग=ऐश्वर्य) गु० सुन्दर, मनोहर, प्यारा, सौभाग्य-वान्, ऐश्वर्य्यवान्, प्रतापी, भागवाला ।

सं० सुभगा—(सुभग) स्त्री० सौभा-

ग्यवती स्त्री, सुन्दर स्त्री, वह स्त्री जिसको उसका पति बहुत चाहे ।

सं० सुभगता-(सुभग)भा०स्त्री०उत्तमता, अच्छाई, भलाई ।

सं० सुभट-(सु=अच्छा, भट=लड़ाका) पु० वीर, बहादुर ।

सं० सुभद्रा-(सु=अच्छा, भद्र=कल्याणरूप) स्त्री० श्रीकृष्ण की बहन, जिसको संन्यासी का रूप धर अर्जुन हर लेगया था, २ श्रेष्ठ नारी ।

सं० सुभाव-(सु+भाव)पु० अच्छा सुभाव, सुशीलता ।

प्रा० सुभीता-(सं०शुभ+हित, शुभ=अच्छा, हित=जैसाचाहिये)पु० अवकाश, अवसर, फुर्सत ।

सं० सुभुज-(सु+भुज)पु०सुबाहु नाम दैत्य ।

सं० सुमति-(सु=अच्छी, मति=बुद्धि) स्त्री० अच्छीबुद्धि, सुमति, भलमनसाई ।

प्रा० सुमन-(सं०सुमनस्, सु=अच्छा, मनस्=मन । अर्थात् जिससे मन प्रसन्न होजाय) पु० फूल, पुष्प, २ गु० सुन्दर ।

सं० सुमना-स्त्री० चमेली, मालती ।

प्रा० सुमन्त-(सं०सुमन्त्र, सु=अच्छी, मंत्र्=सलाह देना) पु० राजादशरथ का सारथि और मन्त्री ।

सं० सुमन्त्रक- क० पु० वजीर, मुशीर, मन्त्री ।

प्रा० सुमरण, सुमिरण, सुमरन (सं० स्मरण) पु० याद, नाम लेना, स्मरण, २ (सं० स्मरणी) स्त्री० माला, जपमाला ।

प्रा० सुमरना, सुमिरना (सं०स्मरण) क्रि० स० याद करना, स्मरण करना, नाम लेना, २ (सं० स्मरणी) स्त्री० माला, जपमाला ।

सं० सुमित्रा-(सु=अच्छी तरह से, मिद्=प्यार करना) स्त्री० दशरथ राजाकी पत्नी और लक्ष्मणकी मा ।

सं० सुमुखी-(सु=सुन्दर, मुख=मुँह) स्त्री० सुन्दर मुँहवाली, सुन्दरी ।

सं० सुमेरु-(सु+मेरु) पु० मेरु पहाड़ जिसको हिंदू सोने का और रत्नों का बना हुआ कहते हैं और जहां देवता रहते हैं २ ज्योतिष में उत्तर ध्रुव, ३ जपमाला के सिरे पर का दाना या मनका । [ठसनी ।

प्रा० सुम्बा-पु० बन्दूकका, क़ाग़ज़,

सं० सुयश-(सु+यश) पु० अच्छायश, अच्छा नाम, नामवरी ।

सं० सुयोग-(सु+योग)पु० अच्छी संगत, सुसंगति ।

सं० सुर-(सु=अच्छा, रा=देना, अर्थात् मन चाही चीज को देने वाला, सुर=ऐश्वर्य्य रखना या चमकना अथवा सु=बहुत बल रखना) पु० देवता, देव, २ सूर्य ।

प्रा० सुर—(सं० स्वर) पु० ताल, तान, आवाज, राग, गान ।

प्रा० सुरमिलाना-बोल० एकसुर करना, अच्छे सुरसे गाना ।

सं० सुरगुरु-(सुर+गुरु)पु० देवताओं के गुरु, बृहस्पति ।

सं० सुरङ्ग-(सु+रङ्ग) पु० हिंगलू, २ स्त्री० जमीन के नीचे रस्ता, ३ गु० लाल या तेलिया रंग का (सुरङ्ग जैसे घोड़ा) ४ सुन्दर, जिसका रंग अच्छाहो, चमकीला ।

सं० सुरत-(सु=अच्छी तरह से, रम्=खेलना) पु० स्त्रीसंग, मैथुन, भोग, विलास ।

प्रा० सुरत, सुरता (सं० स्मृति) स्त्री० सुध, चेत, खबर, याद, ध्यान ।

सं० सुरतरु-(सुर+तरु) पु० देवताओं का वृक्ष, कल्पवृक्ष ।

प्रा० सुरता, सुरतीला (सं० स्मर्ता, स्मृ=याद करना) गु० सुचेत, सावधान ।

प्रा० सुरती-स्त्री० तमाकू, तम्बाकू ।

सं० सुरधेनु-(सुर+धेनु) स्त्री० कामधेनु, इन्द्र की गाय ।

सं० सुरनदी (सुर+नदी) स्त्री० वियत्‌गंगा, आकाशगंगा, मन्दाकिनी, सुरदीर्घिका ।

सं० सुरपति-(सुर+पति) पु० देवताओं का राजा, इन्द्र ।

सं० सुरपुर-पु०, सुरपुरी-स्त्री० (सुर+पुर,या पुरी)स्वर्ग,इन्द्रलोक,अमरावती ।

सं० सुरभि-(सु=अच्छी तरहसे, रभ्=बहुत चाहना, या शब्द करना) पु० सुगन्ध, २ वसन्तऋतु, ३ जायफल, ४ चैतका महीना, ५ सोना, ६ (सुरभी) स्त्री० कामधेनु, ७ गाय, ८ धरती, जमीन, गु० सुगन्धित, २ विख्यात, ३ अच्छा,सुन्दर,मनोहर ।

सं० सुरलोक-(सुर+लोक) पु० स्वर्ग, इन्द्रलोक, सुरपुरी ।

सं० सुरस-(सु=अच्छा,रस=स्वाद) गु० मीठा, सुस्वाद ।

प्रा० सुरसरि, सुरसरिता (सं० सुरसरित्, सुर=देवता, सरित्=नदी) स्त्री० गंगा ।

सं० सुरसा-(सुरस) स्त्री० नागों की मा, अहिनकी माता ।

सं० सुरसेनप-(सुर+सेन+पा=बचाना) पु० कार्त्तिकेय, कीर्त्तिमुख, षडानन ।

सं० सुरा (सुर्=चमकना, या बहुत बल रखना) स्त्री० मदिरा, मद=दारू, शराब ।

सं० सुराङ्गना-(सुर=देवता, अङ्गना=स्त्री) स्त्री० देवताओं की स्त्री, देवपत्नी, अप्सरा ।

सं० सुराचार्य-(सुर+आचार्य) पु० देवताओं के गुरु बृहस्पति ।

सं० सुरारि-(सुर+अरि) पु० देवताओं के वैरी, असुर, राक्षस, दैत्य ।

सं० सुरापगा-(सुर+आपगा) स्त्री० देवनदी, गंगा ।

सं० सुरूप-(सु+रूप) गु० सुन्दर, सुडौल, मनोहर ।

सं० सुरेन्द्र-(सुर+इन्द्र) पु० देवताओं का राजा, सुरपति, इन्द्र ।

सं० सुरेश } सुरेश्वर } (सुर+ईश, या ईश्वर) पु० इन्द्र, २ महादेव, शिव।

सं० सुरेश्वरी-(सुरेश्वर) स्त्री० देवी, दुर्गा, महामाया, योगमाया ।

प्रा० सुरैत } सुरैतिन } (सुरत) स्त्री० वह स्त्री जिसके साथ ब्याह नहीं हुआ हो और ऐसेही घर में डाल ली जाय, रखनी, उढ़री, उपपत्नी ।

प्रा० सुलगना } सिलगना } (सं० संलग्न) क्रि० अ० जल उठना, लहरना, बलना, धुआं निकलना ।

प्रा० सुलझना-क्रि० अ० खुलना, सुधरना ।

सं० सुलभ-(सु=अच्छीतरहसे, लभ्=पाना) गु० सहज, सुगम, आसान, सहल, २ जो सहजसे मिल जाय ।

सं० सुलोचना-(सु=अच्छी, लोचन=आंख, जिसकी हो) स्त्री० जिस स्त्रीकी आंखें अच्छी हों, सुन्दरी, मनोहर स्त्री, २ रावण के बेटे मेघनाद की स्त्री का नाम । [पुत्र, लड़का ।

प्रा० सुवन-(सं० सूनु) पु० बेटा,

सं० सुवर्ण-(सु+वर्ण) पु० सोना, २ हरिचंदन, ३ सोना गेरू मिट्टी, गु० सुजाति, अच्छी जात का, २ सुंदर, चमकीला, ३ सुरंग, अच्छेरंगका ।

सं० सुवास-(सु+वास) अच्छा घर, अच्छा मकान, २ स्त्री० सुगन्ध, खुशबू ।

सं० सुवासिनी-(सु=सुखसे, वस्=रहना) स्त्री० सुहागिन, २ अपने बाप के घर बहुत रहनेवाली स्त्री ।

सं० सुबाहु-(सु+बाहु) पु० एक राक्षस का नाम ।

सं० सुवेल-(सु=अच्छा, वेल=किनारा, जो समंदर के पास है) पु० समुद्रतट, त्रिकूट पहाड़ ।

सं० सुशील-(सु+शील) गु० सुस्वभाव, अच्छी चाल चलन वाला, सीधा, साधु ।

सं० सुषुप्त-(स्वप्=सोना) कृ० पु० सोनेवाला, ज्ञानशून्य ।

सं० सुषुप्ति-स्त्री० सुनिद्रा, नींद जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय, इन चार अवस्था[1] में से एक अवस्था का नाम ।

---

१ नेत्रस्थं जाग्रतंविद्यात्स्वप्नःकण्ठेसमाविशेत् । सुषुप्तिंहृदयेचैवतुरीयंमूर्ध्नि संस्थितम् ॥ १ ॥

प्रा० सुसकारना—क्रि० अ० फनफनाना, सिसकारी मारना ।

सं० सुसङ्ग—(सु+सङ्ग) पु० अच्छी संगत, सुसंगति, नेक सुहबत ।

प्रा० सुसताना—(सं० स्वस्थ, या सुस्थ) क्रि० अ० विश्रामलेना, ठहरना, सांसलेना, आरामकरना ।

प्रा० सुसर } सुसरा } (सं० श्वशुर) पु० पति या पत्नी का बाप ।

प्रा० सुसरार } सुसराल } (श्वशुरालय, श्वशुर=ससुर, आलय=घर) स्त्री० ससुरकाघर या घराना ।

सं० सुस्थ—(सु=अच्छी तरहसे, स्था=ठहरना) गु० भलाचंगा, निरोगी, २ सुखी, प्रसन्न, हर्षित ।

सं० सुस्थिर—(सु+स्थिर) गु० अटल, अचल, निश्चल, दृढ़, ठहराऊ ।

सं० सुस्वाद—(सु+स्वाद) गु० जिसमें अच्छा स्वाद हो, मजेदार, सुरस, मधुर, मीठा ।

प्रा० सुहाग—(सं० सौभाग्य) पु० अच्छा भाग, २ पति का प्यार, ३ पति के जीते रहने की दशा, ४ स्त्री का गहना अर्थात् काजल टीकीआदि जो पति के जीने का चिह्न है (यह शब्द 'रंडापा' का उलटा है) ।

प्रा० सुहागन } सुहागिन } (सं० सौभागिनी, सुभगा, अच्छेभाग वाली) स्त्री० वह लुगाई जिसका पति जीता हो, सधवा स्त्री, सपतिका ।

प्रा० सुहाना } सुहावना } (सं० शोभन) गु० सुंदर, मनभावन, मनोहर, २ क्रि० अ० अच्छालगना, मनभाना, फबना, रुचना ।

सं० सुहृद्—(सु=अच्छा, हृद्=मन) प्रत्युपकारकी इच्छारहित जो उपकारकरै उसका नाम सुहृद्है, गु० मित्र, दोस्त, हितू, सखा ।

प्रा० सुअर—(सं० सूकर, सू=ऐसाशब्द, कर=करनेवाला, कृ=करना) पु० एक जंगलीजानवरका नाम, वराह, शूकर ।

प्रा० सूआ } सूवा } सूगा } (सं० शुक) पु० तोता, सुग्गा ।

प्रा० सूआ } सूवा } पु० बड़ी सूई ।

प्रा० सूई—(सं० सूची) सूच=जताना, या सिव्=सीना) स्त्री० कपड़े सीने की चीज ।

प्रा० सूंघना—(सं० सुघ्राण, सु, घ्रा=सूंघना) क्रि० स० बास लेना, महक लेना, सुगंध लेना ।

प्रा० सूंट—स्त्री० चुप, मौन ।

प्रा० सूंटभरना, यामारना—बोल० चुपचाप रहना । [चला जाना ।

प्रा० सूंटमारेजाना—बोल० चुपचाप

प्रा० सूंड—(सं० शुण्ड, शुण्=जाना) स्त्री हाथी की नाक ।

प्रा० सूंतना } क्रि० स० तोड़ना
सूंथना } (जैसे पेड़ से पत्ते) २ खेंचना (जैसे तलवार)।

प्रा० सूकी—स्त्री० चौअन्नी।

सं० सूक्त—(सु=उक्त, सु=सुन्दर, उक्त=कहा, वच्=कहना) पु० सुन्दर, वार्ता, पुरुषसूक्त।

सं० सूक्ष्म—(सूच्=जतलाना) गु० थोड़ा, छोटा, पतला, महीन, बारीक, पतीला।

सं० सूक्ष्मता—(सूक्ष्म) भा० स्त्री० छोटापन, पतलाई, बारीकी, पतलापन।

सं० सूक्ष्मदर्शी—(सूक्ष्म+दर्शी=देखनेवाला, दृश्=देखना) गु० चतुर, प्रवीण, बुद्धिमान, तेज, २ जिसकी नजर तेज हो, बारीकबीं।

प्रा० सूखना } (सं० शोषण, शुष्=
सूकना } सूखना) क्रि० अ० शुष्कहोना, कड़ा होना, खुश्क होना, २ मरना, जलना, (जैसे पेड़ आदि) ३ उड़ना, हवा होना, (जैसे अर्क आदि) ४ पचकना, टूटना, (जैसे स्त्री का अथवा गाय आदिका दूध) ५ दुबला होना, ६ बिगड़ना, गलना, खराब होना, कुम्हलाना, मुरझाना, बेरस होना।

प्रा० सूखा—(सं० शुष्क) गु० बेरस, शुष्क, गला, सड़ा।

सं० सूचक-(सूच्+अक, सूच्=जतलाना) क० पु० जतलानेवाला, बतलानेवाला, सिखानेवाला, बोधक, पिशुन, चबाई।

प्रा० सूचना-(सूच्=जतलाना) स्त्री० जतलाना, चिताना, इत्तिला।

सं० सूचनापत्र—पु० इत्तिलानामा, नोटिस, इश्तिहार।

सं० सूचिक—क० पु० दरजी, खैयात।

सं० सूचित—र्म० जताया गया।

सं० सूचीपत्र-(सूची=जतलाना, पत्र=कागज) पु० फेहरिस्त, २ बीजक।

प्रा० सूजना-(सं० शोथ, या श्वयथु, श्वि=फूलना) क्रि० अ० फूलना, मोटा होना, बढ़ना, किसी रोग से देहका कोई अंग मोटा होजाना।

प्रा० सूजी-(सं० सूचिक) पु० दरजी, सीनेवाला, २ (सं० सूची) स्त्री० सूई।

प्रा० सूजी—स्त्री० मोटा आटा, दरदरा आटा।

प्रा० सूझना—क्रि० अ० दीखना, नजर आना, दीख पड़ना, दिखाई देना, मालूम होना, प्रकट होना, प्रत्यक्ष होना।

प्रा० सूत -(सं० सूत्र) पु० डोरा, तागा, धागा, रूई का डोरा।

सं० सूत—(सू=चलाना, बहुत बल रखना, या पैदा होना) पु० रथवान्

सारथि, २ बढ़ई, ३ भाट, ४ वर्ण-संकर, दोगला, जिसका बाप राजपूत और मा ब्राह्मणी हो, ५ पुराणों का जाननेवाला एक पंडित जिसका नाम लोमहर्षण था, जिसने नैमिषारण्य में बहुत से ऋषियों को पुराण और महाभारतकी कथा सुनाई थी और इसको बलदेव जीने मार डाला था।

सं० सूतक–(सू=पैदा होना) पु० लड़के के पैदा होने से, या गर्भ के गिरने से, या मौत होजाने से जो अपवित्रता होतीहै उसे सूतक कहतेहैं।

प्रा० सूतना–(सं० सुप्त) क्रि० अ० सोना।

प्रा० सूतली-(सूत्र) स्त्री० सन की [डोरी, रस्सी।

प्रा० सूती–(सं० सूत्रीय) गु० सूत से बना हुआ।

सं० सूत्र–(सूत्र्=गूंथना, या सिव्=सीना) पु० सूत, डोरा, धागा, तागा, २ रीति, क़ायदा, ३ ऐसा वाक्य जिस में संक्षेप से बहुत से अर्थ का ज्ञानहो, जैसे व्याकरणआदिके सूत्र।

सं० सूत्रधार–(धृ=धरना) पु० प्रधान नट, नाटकके खेलका मुखिया।

प्रा० सूथन–पु० पायजामा, पाजामा, जांघिया, सुथनी।

सं० सूदन–(सूद्=मारना) पु० मारना, गु० मारनेवाला।

प्रा० सूधा–(सं० शुद्ध) गु० सीधा, भोला, निष्कपट, शुद्ध।

सं० सूदशाला–स्त्री० पाकशाला, रसोई घर, बावरचीखाना, कुकिंरूम।

प्रा० सूना–(सं० शून्य) गु० ख़ाली, छूछा, रीता, २ उजाड़।

सं० सूनु–(सू=पैदा होना) पु० बेटा, पुत्र, लड़का।

प्रा० सूप–(सं० सूर्प, सूर्प्=नापना) पु० छाज, अनाज पछोरनेकी चीज़।

सं० सूपकार / सूपकारी –(सूप=रसोई, कार=करनेवाला) पु० पाचक, रसोईं बरदार।

प्रा० सूम–(अ० शूम) पु० कंजूस, मक्खीचूस, कृपण।

सं० सूर–(सू=चलाना) पु० सूय, २ सूरदास।

प्रा० सूर–(सं० शूर) पु० वीर, बहादुर।

प्रा० सूरज–(सं० सूर्य्य) पु० रवि, भानु, दिनकर, आफ़ताब, ख़ुर्शेद।

प्रा० सूरजगहन / सूरजग्रहण –(सं० सूर्य्यग्रहण) ० सूर्यका गहन।

प्रा० सूरजमुखी–(सं० सूर्य्यमुखी) पु० एक फूल का नाम।

प्रा० सूरन–(सं० सूरण) पु० ज़मींकंद, सूरन।

सं० सूरदास–पु० एक हिंदी कवि और गवैये का नाम जो अंधा था इस लिये अब हिंदुओं में अंधे का

सूरदास कहते हैं ।

प्रा० सूरबीर-(सं० शूरवीर) पु० वीर, बहादुर, सावन्त, योद्धा ।

प्रा० सूरमलार-पु० एक रागिणी का नाम ।

प्रा० सूरमा-(सं० शूर) पु० बहादुर, वीर, सामन्त, शूरवीर ।

प्रा० सूरमापन-भा० पु० बहादुरी वीरता ।

प्रा० सूरा-(सं० शूर) पु० बहादुर, शूरवीर, योद्धा, (एक आदमी लड़ाई में जाने के लिये तैयारी कररहाथा उससमय में उसकी स्त्रीने कहा कि)

"सूरा रणमें जायकै"
"लोहा करो निशंक ।
"ना मोहिं चढ़े रँडापरो
"ना तोहिं चढ़े कलंक" ॥

अर्थ-हे वीर! लड़ाईमें जाकर निडर होके लड़ो, जिससे न तो मैं रांडहोऊं, और न तुम्हारे नामको दागलगे।

सं० सूर्य्य-(सृ=चलना) पु० सूर्य ।

सं०सूर्य्यवंशी-(सूर्य=सूर्य, वंशी=घ-रानेके) पु० राजपूतों की एक जात जिनकी राजधानी अयोध्यापुरी थी।

सं० सूर्य्योदय-(सूर्य्य + उदय) पु० सूर्य का निकलना, दिन चढ़ना, सबेरा, तड़का, भोर, विहान, प्रभात ।

प्रा० सूल-(सं० शूल, शूल्=बीमार होना) पु० बावगोला, बावसूल, एक तरहकी बीमारी जिसके होने से पसलियों में और पेट में बहुत दर्द होता है, २ त्रिशूल, सेल, ३ भाले की नोक, ४ कांटा ।

प्रा० सूल-पु० दशा, हाल, हालत ।

प्रा० सूली-(सं०शूल) स्त्री० एक तरह का कांटा जिसपर अपराधी लटकाया जाताहै ।

प्रा० सूसी-स्त्री० एकतरहका कपड़ा ।

प्रा० सूहा-(सं० शोण, शोण्=लाल होना) पु० लाल, राता, किरमची, २ पु० एक रागका नाम ।

सं० सृष्ट-(सृज्=पैदा होना) कर्म० रचित, निर्म्मित ।

सं० सृष्टि-(सृज्=पैदा होना) स्त्री० उत्पत्ति, संसार, जगत्, दुनिया, स्वभाव, प्रकृति ।

सं० सृष्टि शिरोमणि-पु० स्त्री० संसार में श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, अशर्फुलमख़्लूकात, मनुष्य, इन्सान ।

प्रा० सेंकना-क्रि० स० गर्म करना, तत्ता करना, उष्ण, करना, भूनना-भूंजना, झुलसना ।

प्रा० सेंत, सेंतमेत-क्रि० वि० मुफ़्त, बिना मोल, बेदाम का ।

प्रा० सेंध (सं० सन्धि) पु० छेद जिसको चोर चोरी करने के समय दीवार में करते हैं ।

प्रा०सेंधा-(सं० सैन्धव) पु० ला-

होरी नमक, पहाड़ी नमक।

प्रा० सेंधिया-(सिन्ध) पु० ग्वालियर के महाराजा की जात जो शायद सिन्ध नदी के पास के देश से फैले हों, २ जहर, विष, ३ (सेंध) सेंध लगानेवाला, चोर, घर फोरनेवाला, सेंधमार, सेंधचोर।

सं० सेचन-(सिच्=सींचना) पु० सींचना, छिड़काव।

सं० सेचक-क० पु० सींचनेवाला, भिगोनेवाला।

सं० सेचित-कर्म० आर्द्रीकृत, तरकिया हुआ, सींचागया, भिगोयागया।

प्रा० सेज-(सं० शय्या) स्त्री० पलँग, बिछौना।

प्रा० सेठ-(सं० श्रेष्ठ) पु० साहूकार महाजन, हुण्डीवाल, धनवान्।

प्रा० सेत-(सं० श्वेत) गु० धौला, सफ़ेद, उजला।

सं० सेतु-(सि=बांधना) पु० स्त्री० पुल, बांध, बंध।

सं० सेतुबन्ध-(सेतु+बन्ध) पु० वह जगह जहां श्रीरामचन्द्रने लंका जानेकेलिये नल और नील वानर से पुल बँधवाया था।

सं० सेतुबन्धरामेश्वर-(सेतुबन्ध+रामेश्वर) पु० महादेव जिनको श्रीरामचन्द्र ने लंका जाने के समय सेतुबन्धपर स्थापन किये थे।

सं० सेना-(स=साथ, इन=मालिक या सि=बांधना) स्त्री० कटक, दल, फ़ौज, लश्कर, सिपाह।

सं० सेनानी-(सेना+नी=लेचलना) क० पु० सेनापति, सिपहसालार, कप्तान।

सं० सेनापति-(सेना+पति) पु० फ़ौज का सरदार।

प्रा० सेमल-(सं० शाल्मली) पु० एक पेड़का नाम।

प्रा० सेर-पु० सोलह छटांक की [तौल।

प्रा० सेल } (सं० शूल) पु० बर्छी,
सेला } बर्छा, बल्लप, भाला।

प्रा० सेला-पु० एक तरह की चद्दर, एक तरह का कपड़ा, २ एक तरह का बाघ।

प्रा० सेली-स्त्री० बद्धी या जाली जिसको फ़क़ीर गले में पहने रहते हैं।

प्रा० सेव-स्त्री० एक तरह का फल।

सं० सेवक-(सेव्=सेवाकरना) क० पु० सेवा करनेवाला, पूजा करनेवाला, पुजारी, नौकर, दास, चाकर।

प्रा० सेवकाई-(सेवक) भा० स्त्री० नौकरी, चाकरी, टहल, सेवा।

प्रा० सेवड़ा-पु० एक तरह के हिन्दू फ़क़ीर, २ जैनमत का भिखारी।

प्रा० सेवती-(सं० सेमन्ती, सिम्=नाश होना या तोड़ाजाना) स्त्री० एक फूल का नाम।

प्रा० सेवना-(सं० सेवन, सेव्=सेवा करना) क्रि० स० सेवा करना, २ पालना, अंडा सेना, अंडों को पकाना पोसना ।

सं० सेवा-(सेव्=सेवा करना) स्त्री० नौकरी, चाकरी, टहल, सेवकाई, २ पूजा, सत्कार ।

सं० सेवित-(सेव्=सेवा करना) स्म० उपासित, सेवा किया हुआ, पूजा किया हुआ ।

सं० सेवी-क० पु० पुजारी, नौकर, दास, चाकर ।

प्रा० सेवैं-(सं० समिता, सम्=साथ, इण्=जाना) स्त्री० बहु व० मैदा की बनी हुई खाने की चीज़, क्रि० सेवा करैं ।

सं० सेव्य-(सेव्=सेवा करना) स्म० सेवा करने योग्य, पूजा करने योग्य, उपास्य, सेवने योग्य, मखदूम ।

प्रा० सैंकड़ा-(सं० शतक) गु० शतकड़ा, १०० ।

प्रा० सैंतालीस-(सं० सप्तचत्वारिंशत्) गु० चालीस और सात ।

प्रा० सैंतीस-(सं० सप्तत्रिंशत्) गु० तीस और सात ।

प्रा० सैन, सेन (सं० संज्ञा) स्त्री० संकेत, इशारा, चिह्न, आंख का या अंगुली का इशारा, २ (सं० सैन्य) फ़ौज, कटक, सेना, ३ (सं० शयन) पु० सोना, नींद लेना ।

प्रा० सैनासैनी-बोल० आपस में आंखसे या अंगुली से इशारा करना ।

सं० सैन्धव-(सिंधु) गु० सिंधनदी के पास के देशों में पैदा होने वाला, २ पु० सेंधानिमक, लाहोरी निमक, ३ घोड़ा ।

सं० सैन्य-(सेना) स्त्री० फ़ौज, कटक, सेना, दल ।

सं० सैन्यनिकेत-पु० पदातिस्थान, सैन्यवास, छावनी ।

सं० सैन्यप्रदर्शनीय-स्त्री० फ़ौजी नुमायश, सेना की सजावट ।

प्रा० सोअर-(सं० सूतिका गृह, सूतिका=जचा (सू=पैदा होना) और (गृह=घर) पु० कोठरी जिस में जचा अर्थात् वह स्त्री जिस के बच्चा पैदा हुआ है, रहे ।

प्रा० सोआ-स्त्री० एक तरह का साग ।

प्रा० सोई-सर्वना० वही, आप ।

प्रा० सों, से, साथ ।

प्रा० सोंटा-पु० लाठी, लट्ठ ।

प्रा० सोंठ-(सं० शुण्ठि, शुण्ठ=सूखना) स्त्री० सूखा अदरक ।

सं० सोढ-(सह्=सहना) क० पु० शान्त, सहनशील ।

सं० सोढा-(सह्=सहना) क० पु० शान्त, सहनशील, मुतहम्मिल ।

सं० सौंधा-(सं० सुगन्ध) पु० सु-

गंधित मसाला जिससे बाल धोये जाते हैं, २ सुगन्ध, बास, बू, ३ ऐसी बू जैसी कि मिट्टी के कोरे बरतनों को भिगोने से या चने आदि के सेंकने से निकलती है।

प्रा० सोंपना / सौंपना (सं०समर्पण) क्रि० स० दे देना, हवाले करना, सुपुर्द करना।

प्रा० सोंह-(सं०शपथ) स्त्री०सौगंद, शपथ, किरिया, क़सम।

प्रा० सोंहीं-(सं० सम्मुख, सन्मुख) क्रि० वि० साम्हने, आगे, सन्मुख।

प्रा० सोखना-(सं० शोषण, शुष्= सूखना) क्रि० स० चूसना, पी-लेना, खींचना।

प्रा० सोग-(सं०शोक) पु० चिन्ता, फ़िक्र, शोच, उदासी, दुःख।

प्रा० सोच-(सोचना) पु० ध्यान, ख़याल, बिचार, २ चिन्ता, फ़िक्र।

प्रा० सोचना-(सं०शोचना, सुच्= सोचना) क्रि० ख़याल करना, समझना, बिचारना, ध्यानकरना।

प्रा० सोझा-गु० सीधा, खड़ा।

प्रा० सोत / सोता (सं० स्रोत) पु०धारा, चश्मा, झर्ना।

प्रा० सोध-(शोधना) स्त्री० शुद्ध करना, शोधन, २ खोज, पता, भेद, खबर।

प्रा० सोधना-(सं० शोधन) क्रि० स० सही करना, ग़लती निकालना, शुद्ध करना, जांचना, २ ऋण चुकाना, क़र्ज़ चुकाना, ३ धातु को साफ़ करना।

प्रा० सोन-(सं० शोण, शोण्= जाना) पु० स्त्री० एकनदीका नाम, २ रुधिर, रक्त, उदासी, ब्रह्मचारी।

प्रा० सोनहरा / सोनहला (सोना) गु० सुनहरा, सुनहरी, सोने का या सोने सा।

प्रा० सोना-(सं० स्वर्ण) पु० बहुत मोल की धातु, कंचन, कनक।

प्रा० सोना / सोवना (सं०शयन) क्रि०अ० नींद लेना, पौढ़ना, सूतना।

सं० सोपान-(स=साथ, उप=पास, अन्=जीना, पर उप उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ चढ़ना होजाता है) स्त्री० सीढ़ी, नसेनी।

प्रा० सोभना-(सं० शोभन) क्रि० अ० सोहना, अच्छा दिखाई देना।

सं० सोम-(सू=पैदाहोना, या फेंकना किरण को) पु० चांद, चन्द्रमा, २ अमृत, ३ देवताओं का खज़ानची कुबेर, ४ हवा, ५ यमराज, ६ कपूर, ७ सोमलतानाम जड़ी और उसका रस, ८ (स=साथ, उमा=पार्वती) शिव, महादेव, ९ वानरेश, सुग्रीव, १० हव्य, कव्य, ११ आकाश।

सं० सोमज-(सोम+जन्=पैदाहोना) पु० बुधग्रह, अमृत, दुग्ध ।

सं० सोमपा-(सोम+पा=पीना) क० पु० यज्ञवल्लीका पीनेवाला, याज्ञिक, यजमान ।

सं० सोमवार—(सोम=चांद, वार=दिन) पु० चांद का दिन, चंद्रवार ।

सं० सोमवल्क-पु० करञ्ज, कंजा, रीठी, श्वेतखदिर, सफ़ेद खैर, कैफरा ।

प्रा० सोरठ-स्त्री० एक रागिणी का नाम ।

प्रा० सोरठा—पु० हिंदी बोली में एक छंद जिसके पहले पद में ११ और दूसरे में १३ फिर तीसरे में ११ और चौथे में १३ मात्रा होती हैं और यह छंद दोहेका उलटा है ।

प्रा० सोरह / सोलह } (सं०षोडश) गु० दश और छः ।

अं० सोशलरिफ़ार्मिकमेटी-समाजिक संशोधन सभा, जलसारिफ़ाह आम ।

प्रा० सोहना-(सं० शोभन, शुभ्=चमकना) क्रि०अ०शोभना, अच्छा दिखाई देना, फबना, भला दीखना ।

प्रा० सौ-(सं०शत) गु० दशदहाई ।

प्रा० सौसिरकाहोना-बोल० बहुत बलवान, या मग़रा होना, २ बहुत सहना । [आन ।

प्रा० सौगन्द-पु० शपथ, किरिया,

सं० सौगन्ध-सुगन्ध, भा० पु० खुशबू, २ कपूर ।

प्रा० सौंघाई-(सं० स्वर्घता, सु=अच्छा, अर्घ=मोल) स्त्री० सस्ती, सस्ताई ।

प्रा० सौंफ-(सं० शतपुष्पा) स्त्री० एक ठंढी पाचक दवाई । [जीवी ।

सं० सौचि-भा० पु० दर्जी जीवन,

सं० सौजन्य / सौजन्यता } (सुजन) भा० पु० सुजनता, भलमनसात, साधुपन, सुशीलता, शराफ़त ।

प्रा० सौत / सौतन / सवति } (सं० सपत्नी स=एक ही, पति भर्त्ता है जिसका) स्त्री० एकही पति की दूसरी स्त्री, सौती ।

प्रा० सौतेला-(सौत) गु० सौतसे जनमा हुआ ।

सं० सौदामनी / सौदामिनी } (सुदामन्=बादल अर्थात् बादलों में रहनेवाली, सु=बहुत, दा=देना) स्त्री० बिजली, दामिनी ।

सं० सौध—(सुधा=पोतने की एक लाल चीज़, उससे रंगा हुआ, सु=अच्छी तरह से, धा=रखना) पु० महल, प्रासाद, राजमंदिर, देवमंदिर ।

सं० सौनिक—पु० व्याध, वधिक बहेलिया, हिंसक, क़साई जैसे "सौनिकेनयथापशुः" ।

सं० सौन्दर्य्य—(सुन्दर) भा० पु०

सुन्दरता, खूबसूरती, चमकदमक, रंगरूप ।

सं० सौभरि—पु० एक ऋषि का नाम जिसने मान्धाता राजाकी पचास लड़कियों से ब्याह किया था जिसकी कथा विष्णुपुराण में है ये ऋषि यमुना नदी तीर पर बैठे तप कर रहे थे, वहां गरुड़ ने जाय एक मछली मार कर खाई, तब ऋषि ने गरुड़ को शापदिया कि जो फिर इस जगह आवेगा जीता न बचेगा।

सं० सौभद्र—भा० पु० सुभद्रा का पुत्र, अभिमन्यु ।

सं० सौभाग्य-(सुभग) भा० पु० भागवानी, अच्छा भाग, २ ज्योतिष में चौथा योग ।

सं० सौमित्र-(सुमित्रा) भा० पु० सुमित्रा का बेटा, लछमण, श्रीरामचन्द्र का छोटा भाई ।

सं० सौम्य—पु० बुध, चन्द्र, गु० सुशील, सुन्दर, मनोहर, प्रियदर्शन, क्रोधरहित, मुतहम्मिल, बुर्दबार।

सं० सौम्यता-भा० स्त्री० सुशीलता, सीधापन, संजीदगी ।

सं० सौर-(सूर=सूर्य) गु० सूर्य संबंधी, सूरज का, (महीना दिन आदि) २ पु० शनीचर ।

सं० सौरभेय } सौरभेयी } भा० पु० सुरभीपुत्र, वृषभ, बैल व स्त्री० गौ, वशिष्ठ की धेनु, नन्दनी ।

प्रा० सौरज-(सं० शौर्य्य) भा० पु० शूरमापन, सूरवीरता, बहादुरी ।

सं० सौरभ-(सुरभि) पु० सुगन्ध, खुशबू, महक, २केशर, ३ आमकापेड़।

सं० सौरि -भा० पु० शनैश्चर, कृष्ण, वसुदेव ।

सं० सौवर्चल—पु० कालानमक ।

सं० सौहार्द-भा०पु०मित्रता, दोस्ती।

सं० स्कन्ध-(स्कन्द=ऊपर जाना) पु० कंधा, कांधा, २ पेड़ की धड़, मोटे गुद्दे, ३ पुस्तक का एक भाग जिसमें कई अध्याय हों, ४ बाणासुर का बेटा ५ व्यूह ६ युद्ध. समूह ।

सं० स्खलित-(स्खल्=गिरना) कृ० पु० चुत, गिरा, गिर पड़ा ।

सं० स्तन-(स्तन्=शब्द करना) पु० चूंची, छाती, पयोधर ।

सं० स्तनयित्नु-पु० गर्जना विद्युत्, बिजली, मृत्यु, रोग ।

सं० स्तब्ध-(स्तम्भ्=रोकना) गु० रुका हुआ, ठहराहुआ, मूर्ख, सुस्त, नम्रता रहित ।

सं० स्तब्धत्व-पु० अदब, दबाव ।

सं० स्तम्भ-(स्तम्भ=ठहरना, रोकना) पु० खंभा, थंभा, थंभ, थूनी, रुकाव, अटकाव ।

सं० स्तम्भन-भा० पु० रोकना, जड़ करना ।

सं० स्तव-(स्तु=सराहना) पु०स्तुति, बड़ाई, प्रशंसा, तारीफ़, सराह ।

सं० स्तवक-पु०गुच्छा, गुलदस्ता ।

सं० स्तवन-भा०पु०स्तुति, प्रशंसा ।

सं० स्तिमित-गु० अचल, स्थिर ।

सं० स्तुति-(स्तु=सराहना) स्त्री० सराह, बड़ाई, तारीफ़, प्रशंसा २ भजन।

सं० स्तुत्य-म्र्म० प्रशंसित स्तवनीय तारीफ़ के लायक़ ।

सं० स्तेन-(स्तेन=चोरी करना) पु० चोर, चौर, दुज़्द । [दुज़्दी ।

सं० स्तेय-पु० चौरकर्म, चोरी,

सं० स्तोता-क०पु० प्रशंसक, तारीफ़ करनेवाला ।

सं० स्तोत्र (स्तु=सराहना) पु० सराह, बड़ाई, स्तुति

सं० स्तोम-(पु० पुंज, समूह, २ यज्ञ, स्तुति, ३ मस्तक, ४ लोहदण्ड ।

सं० स्त्री-(स्त्यै=इकट्ठा होना) स्त्री० लुगाई, नारी, औरत ।

सं० स्त्रीधन-पु० दायज, महेर ।

सं०स्थपति-बृहस्पति, यज्ञकर्ता, शिल्पी।

सं० स्थल-(स्थल्=ठहरना) पु० सूखी धरती, खुश्की जगह ।

सं० स्थाणु-पु०शिव, २ पीपल, ३ गु०मोटा, ४ ठुंडावृक्ष, पत्ररहितवृक्ष।

सं०स्थान-(स्था=ठहरना)पु०जगह, घर, ठौर, ठांव, ठिकाना ।

सं० स्थानापन्न-(स्थान + आपन्न) क०पु० जगहपानेवाला, एवज़ी, कायममुक़ाम ।

सं० स्थापन-(स्था=ठहरना) पु० बैठाना, रखना, धरना, ठहराना, जमाना ।

सं० स्थापित-(स्था=ठहरना) म्र्म० बैठ याहुआ, ठहरायाहुआ, जमाया हुआ, स्थापन कियाहुआ ।

सं० स्थायिन्-क०पु० ठहरनेवाला ।

सं० स्थाल-पु० थाला, थारा ।

सं० स्थाली-स्त्री० बटलोई, पाक पात्र, हांडी ।

सं० स्थावर-(स्था=ठहरना) गु० अचल, अटल, ठहराहुआ, जो चले नहीं, जैसे पेड़, पत्थरआदि ।

सं० स्थिति-(स्था=ठहरना) भा० स्त्री० ठहराव, टिकाव, वास, रहना, पालन, आसन, मर्य्यादा, सीमा ।

सं० स्थिर-(स्था=ठहरना) गु० ठहरा हुआ, अचल, अटल, दृढ़, २ शान्त, ठंढा, कोमल ।

सं० स्थिरपूंजी-स्त्री० स्थिरधन, जायदाद ग़ैरमन्कूला ।

सं० स्थूल-(स्थूल्=मोटा होना) गु० मोटा, फूलाहुआ, बड़ा ।

सं० स्नातक-(स्ना=न्हाना)क०पु० गृहस्थब्राह्मण, व्रती, स्नानकारी ।

सं० स्नान-(स्ना=न्हाना) गु० न्हाना । [न्हानेवाला ।

सं० स्नायी-क० पु० स्नानकर्ता,

सं० स्नायु-स्त्री० नस, रग।

सं० स्निग्ध-गु० चिक्कण, चिकना, मेहरबान, दयालु।

सं० स्नेह-(स्निह्=प्यार करना, या चिकना होना) पु० प्यार, छोह, मोह, प्रेम, नेह, मिताई, २ तेल आदि चिकनी चीज़, ३ चिकनाई।

सं० स्पन्द-संकल्पविकल्प, आगापीछा पशोपेश।

सं० स्पर्द्धा-(स्पर्द्ध=डाहकरना) स्त्री० डाहजलन, हिसका, द्वेष, विरोध, वैर, ईर्षा।

सं० स्पर्श-(स्पृश्=छूना) पु० छूना, छुहावट, परसना, २ एकतरह की बीमारी जो छूने से लगती है।

सं० स्पष्ट-(स्पश्=देखना, या प्रकट होना) गु० साफ़, खुला खुल्ला, शुद्ध, सही, प्रकाशित, प्रकट।

सं० स्पृष्ट-(स्पृश्+त, स्पृश्=छूना) कर्म० छुआगया, कृतस्पर्श।

सं० स्पृहा-(स्पृह=चाहना) स्त्री० चाह, इच्छा, वाञ्छा, अभिलाष।

सं० स्पृही-क० इच्छान्वित, ख्वा-हिशमन्द।

सं० स्फटिक-(स्फट्=फटना, या खुलना) पु० बिल्लौर का पत्थर।

सं० स्फुटन-(स्फुट्=विकसना) भा० पु० खिलना, फूटना।

सं० स्फुटित-क० विकसित, प्रफुल्लित

सं० स्फोटक-(स्फुट्=फूटनिकलना) फोड़ा, चेचक।

सं० स्फूर्त्ति-(स्फुर्=हिलना) स्त्री० हिलाव, धड़धड़ाहट, स्फुरन।

सं० स्म-अव्य० पूर्वसमय, व्यतीत-काल, गुज़रगया।

सं० स्मर-(स्मृ=याद करना) पु० कामदेव, २ याद, स्मरण।

सं० स्मरण-(स्मृ=यादकरना) पु० चिंतन, याद, सुध, चेत, स्मृति।

सं० स्मरहर-(स्मर=कामदेव, हर=नाश करनेवाला, हृ=नाशकरना) पु० शिव, महादेव।

सं० स्मारक-(स्मृ+अक, स्मरण करना) क० पु० स्मृतिज्ञाता, स्मरण करानेवाला।

अं० स्मालकाज़कोर्ट-अल्पन्याया-लय, अदालतखफ़ीफ़ा।

सं० स्मित-(स्मि=थोड़ा हँसना) पु० ईषद्धास्य, थोड़ाहँसना, मुसक्याना, मुसकिराना, गु० विकसित, विस्मित।

सं० स्मृति-(स्मृ=याद करना) स्त्री० याद, सुमिरन, स्मरण, २ धर्मशास्त्र, जैसे मनुस्मृति, और याज्ञवल्क्यस्मृतिआदि।

सं० स्यन्दन-(स्यन्द्=जाना) पु० रथ, २ सारथी, ३ जल, ४ वृत्त।

सं० स्यात्-अव्य० विद्यमान, २ समी-चीन, ३ शायद।

प्रा० स्यानपन-(स्याना) भा० पु० स्त्री० बुद्धिमानी, चतुराई, निपुणता, प्रवीणता [देखो।

प्रा० स्याना-सियाना शब्द को

प्रा० स्यार } (सं० शृगाल) पु०
स्याल } गीदड़ ।

सं० स्रक्-(सृज्=बनाना) स्त्री० माला, पुष्पमाला ।

प्रा० स्रवना-(सं० स्रवण, स्रु=ब-हना)क्रि०अ० चूना,बहना,गिरना ।

सं० स्रोतः-(स्रु=बहना) पु० सोता, बहाव, धारा, नाला ।

सं० स्व—सर्वना० अपना,आप, आ-पका, निज, निजका, २ पु० धन, ३ जाति ।

सं० स्वकीय—पु० अपना, निजका ।

सं०स्वकीया-(स्व=अपना) स्त्री० अपनी ब्याही हुई स्त्री ।

सं० स्वच्छ-(सु=बहुत, अच्छ=साफ़) गु० निर्मल, शुद्ध, उज्ज्वल,साफ़ ।

सं० स्वच्छता-(स्वच्छ) भा०स्त्री० निर्मलता, सफ़ाई, उज्ज्वलता ।

सं० स्वच्छन्द-(स्व=अपनी, छन्द= इच्छा या मतलब)गु० अपनी चाह के अनुसार चलनेवाला, आप मौजी, स्वाधीन, इच्छानुसार ।

सं० स्वच्छन्दता-स्त्री० स्वतन्त्रता, स्वेच्छाचारिता, खुद मुख़्तारी ।

सं० स्वतन्त्र-(स्व=अपने तन्त्र=वश) गु० स्वाधीनता, अपने वश ।

सं० स्वतन्त्रता-(स्वतन्त्र) स्त्री० स्वाधीनता ।

सं० स्वतः-(स्व) क्रि० वि० आपसे, आपसे आप, आपही, स्वभाव से ।

सं० स्वत्वस्थापितकरना- कबजा करना, दखल करना । [खली ।

सं० स्वत्वापहरण-भा० पु० बेद-

सं० स्वधर्म-(स्व+धर्म) पु०अपना धर्म, अपना काम, (जैसे=वेदशास्त्र पढ़ना पढ़ाना ब्राह्मणों का धर्म,देश का प्रबन्ध करना राजपूतों का धर्म, खेती बनिज करना वैश्योंका धर्म, और नौकरी चाकरी करना शूद्रों का धर्म)

सं० स्वधा-(स्वद्=स्वाद लेना, या स्व=आप,धा=रखना या धे=पीना) अव्य० पितरों को जब पिंड देते हैं तब यह शब्द बोलकर पिंड देते हैं, २ स्त्री० दुर्गा, देवी, माया ।

सं० स्वप्न-(स्वप्=सोना) पु० सपना, नींद में जो देखा जाय ।

सं० स्वभाव-(स्व+भाव) पु० प्र-कृति, टेंव, बान, सुभाव, आदत, ख़ू ।

सं० स्वयम्-(स्व, या सु=अच्छीतरह से अय्=जाना) अव्य० आप,निज, अपना, आपसे ।

सं० स्वयंवर—(स्वयम्=आपसे, वृ= पसन्द करना) पु० स्त्रीका आपसे पतिको पसन्द करना ।

सं० स्वयम्भु } (स्वयम्=आपसे,
स्वयम्भू } भू=पैदाहोना)पु०

ब्रह्मा, आपसे पैदा होनेवाला ।

सं० स्वयंसिद्ध–(स्वयम्=आपसे, सिद्ध=बनाहुआ) गु० आपही सच, जो आपही से पक्का ठहराया जाय।

सं० स्वर–(स्वृ=शब्द करना) पु० शब्द, आवाज़, २ वे अक्षर जो आपसे बोले जायँ और जिनके मिलने से व्यञ्जन भी बोले जायँ, ३ गानविद्या में तान सुर आदि ।

सं० स्वर–(स्वृ=शब्द करना) पु० स्वर्ग, आकाश ।

सं० स्वरापगा–(स्वः=स्वर्ग,आपगा =नदी) स्त्री० आकाशगंगा ।

सं० स्वरित–गु० उदात्तानुदात्त युक्त अर्थात् स्वरोंकी ऊंचीनीची आवाज़।

सं० स्वरूप–(स्व+रूप) पु० अपना रूप,२ छवि, शोभा,सुन्दरता।

सं० स्वर्ग–(स्वर्, गै=गाना या कहलाना, अर्थात् जो स्वर् कहलाता है,या सु=अच्छी तरह से, ऋज्= जाना अर्थात् जहां अच्छी तरह से जाते हैं या रहते हैं) पु० इन्द्रलोक देवताओंके रहनेकीजगह,आकाश।

सं० स्वर्गीय, स्वर्ग्य (स्वर्ग)गु० स्वर्गका ।

सं० स्वर्ण–(सु=अच्छा, अर्ण या वर्ण रंग, जिस का रंग अच्छा है या सु अच्छी तरहसे, ऋण् या ऋ= जाना) पु० सोना, कंचन, कनक, हेम, बहुत मोल की धातु ।

सं० स्वर्णकार–(स्वर्ण=सोना, कार =करना) पु० सोनेका काम करने वाला, सुनार ।

सं० स्वल्प-(सु=बहुत,अल्प=थोड़ा) गु० बहुत थोड़ा, बहुत छोटा, किञ्चित्, ज़रा ।

सं०स्वस्ति–(सु=अच्छा, भला, अस्=होना) अव्य० कल्याण, मंगल, अच्छा हो, भला हो, २ ऐसाही हो, तथास्तु ।

सं० स्वस्तिवाचन-(स्वस्ति=कल्याण, वाचन=कहना, वच्=कहना) पु० किसी अच्छे काम के शुरूअ में किसी तरह का बिगाड़ न होने के लिये और देवताओं की आशिष पानेके लिये ब्राह्मणों से वेद के मन्त्र पढ़वाना, शान्ति, मंगलाचार ।

सं० स्वस्तिवाचक- (वच्+अक, वच्=कहना) क० पु० मंगलपाठक दुआगो ।

सं० स्वस्त्ययन- (स्वस्ति+अयन) पु० शुभस्थान, शुभ का लाभ, मंगलाचरण ।

सं०स्वस्थ- (स्व=अपने,स्था=रहना) क० सुखसे रहनेवाला, सावधान ।

प्रा० स्वांग-सवांग शब्द को देखो ।

सं० स्वागत-(सु=अच्छी तरह से,

आगत=आया हुआ) पु० आदर, सन्मान, सत्कार, कुशल क्षेम ।

सं० स्वाति-(सु=अच्छी तरह से, अत्=जाना) स्त्री० पन्द्रहवां नक्षत्र, २ चन्द्र की एक स्त्री ।

सं० स्वाद-(स्वद्=या स्वाद्=स्वाद लेना)पु० रस, सवाद, चाट,मजा, लज्जत, २ मिठास, ३ खुशी, प्यार, प्रीति ।

सं० स्वादिष्ठ } गु० मजेदार, जाय
स्वादुयुक्त } केदार ।

सं० स्वादु-(स्वद् या स्वाद्=स्वाद लेना) गु० मीठा, रसीला, सुरस, मजेदार, २ चाहा हुआ ।

सं०स्वाधीन-(स्व+आधीन) गु० अपने वश, स्वतन्त्र ।

सं० स्वाभाविक-(स्वभाव) गु० जो स्वभाव से हो ।

सं० स्वामित्व-(स्वामी)पु० स्वामीपन,मालिकियत,अधिकार,प्रभुता ।

सं० स्वामी-(स्व=धन या आप) पु० मालिक, धनी, प्रभु, २ भर्त्ता, पति, ३ राजा, ४ गुरु,५ परमहंस ।

सं० स्वार्थ-(स्व=अपना,अर्थ=मतलब,अभिप्राय)पु० अपना मतलब, अपना काम, अपने लाभकी चाह ।

सं० स्वार्थी-(स्वार्थ) गु० आप मतलबी, आप काजी, आत्मपालक, खुद गरज ।

सं० स्वास्थ्य-(स्वस्थ) भा० पु० आरोग्य, तन्दुरुस्ती, संतोष, सुख ।

सं० स्वाहा-(सु=अच्छी तरह से, आ=सब ओरसे, ह्वे=बुलाना) अव्य० होम या यज्ञ करते समय जब देवताओं को बलि देते हैं तब यह शब्द बोलते हैं, २ स्त्री० आग की स्त्री, ३ देवी, दुर्गा, माया ।

सं०स्वीकार-(स्व=आप या अपना, कृ=करना) पु० अंगीकार, मानना, हामी, हां मंजूर, कबूल ।

सं० स्वेच्छा-(स्व + इच्छा) स्त्री० अपनी चाह, स्वाधीनता ।

सं० स्वेद-(स्विद्=पसीना होना) पु०पसीना,पसेव,प्रस्वेद,ताप,गर्मी ।

सं० स्वेदज-(स्वेद=पसीना या गर्मी जन्=पैदा होना) पु० चिलुवा, जुई आदि छोटे छोटे जानवर जो पसीने से या भाफ़ अथवा गर्मीसे पैदा हो-जाते हैं ।

सं० स्वैर-(स्व + ईर्=जाना) पु० स्वेच्छा.यथेच्छा,स्वतन्त्र, स्वच्छन्द ।

सं० स्वैरिणी-(स्वैर + इन् + ई) स्त्री० कुलटा, स्वेच्छाचारिणी ।

सं० स्वैरन्ध्री } (स्वैर + न्ध्र + ई)
सैरन्ध्री } क० स्त्री० पराये घर में रहनेवाली २ शिल्पकारिणी ।

सं० स्वैरी-(स्वैर + ई) क० स्त्री० स्वतन्त्र, स्वेच्छाचारिणी ।

सं० ह-(हा=छोड़ना, या जाना)पु० शिव, २ पानी, ३ आकाश, ४

(१) पतिंत्यक्त्वा तु या नारी गृहादन्यत्रगच्छति । अन्येषुरमतेनित्यं स्वैरिणी सा विधीयते ॥

स्वर्ग, ५ मंगल, ६ लोहू, ७ वि० बो० हाय हो, हाहा, ८ पद पूरा करने के लिये, ९ सम्बोधन के लिये, १० नियोग, ११ क्षेप फेंकना, १२ निग्रह, १३ प्रसिद्ध ।

प्रा०हँकाना—(हांकना) क्रि० स० निकाल देना, चलाना, हांकना ।

सं० हङ्कार—(हम्=ऐसा क्रोध का शब्द, कृ=करना) पु० हांक, पुकार, चिल्लाहट, २ निकालना, हांकना ।

प्रा० हंडा—(सं० हण्ड, हन्=मारना) पु० तांबे पीतल का अथवा मिट्टी का बड़ा बरतन, कड़ाह ।

प्रा० हंडा फोड़ना—बोल० भेद खोल देना, राज खोलदेना ।

सं० हंस—(हन=मारना या जाना, अथवा हस्=हंसना) पु० एक तरह के पखेरू जो पानी के सरोवरों में रहते हैं, २ आत्मा, जीव, ३ परमात्मा, ब्रह्म, ४ नृप, ५ योगी, ६ तुरङ्ग, श्वेत, सफ़ेद ।

सं०हंसक—क० पु० पादकटक, बिछुआ, घुंघुरु ।

प्रा० हंसगमनी, हंसगवनी—(सं० हंसगामिनी हंस, गामिनी=चलनेवाली, गम्=जाना चलना) स्त्री० जिस स्त्रीकी चाल हंस की सी हो ।

प्रा० हँसना—(सं० हसन, हस्=हँसना) क्रि० अ० हँसी करना, मुसकुराना, ठट्ठा करना ।

प्रा० हँसमुख—(सं० हास्यमुख) गु० जिस के मुँहपर हँसी खुशी जानी जाय मगन, आनन्दी, हँसनेवाला ।

प्रा० हँसा-पु०, **हँसी**-स्त्री० (सं० हास्य) हांसी, मुसकुराहट, खुशी, खेल, विनोद ।

प्रा० हँसाई—(सं० हास्य) स्त्री० हँसी, ठट्ठा, ठठोली ।

प्रा०हँसिया, हँसुआ पु० दरांती, दांत, दात्र ।

प्रा० हकराना—क्रि० स० बुलाना, पुकारना, बुलवाना, बुलालेना ।

प्रा०हकबकाना—क्रि० अ० घबराना, व्याकुल होना, हड़बड़ाना ।

प्रा० हकला—गु० तोतला, लड़बड़ा, जो तुतला कर बोले ।

प्रा० हकलाना—क्रि० अ० तुतलाना, हिचक २ के बोलना, अटक अटक के बोलना ।

प्रा० हकाबका—गु० घबराया हुआ, परेशान, बेहोश, व्याकुल, अचम्भे में, चकित, विस्मित ।

प्रा० हगना—(सं० हद्=झाड़ा फिरना) क्रि० अ० झाड़ा फिरना जंगलजाना, दिशाजाना, पाखाने जाना ।

प्रा० हचका } पु० धक्का, झोंक,
हचकोला } टक्कर ।

प्रा० हचरमचर—पु० वाद विवाद, झूंठा झगड़ा, २ आगा पीछा, सोच विचार, पसोपेश ।

प्रा०हटकना—क्रि० अ० रुकना, अटकना, छेंकना, क्रि० स० रोकना ।

प्रा० हटताल—(हट=हाट, ताल =ताला) स्त्री० किसी दुःख अथवा अन्याय होनेसेदूकानों को तालालगा देना बाज़ारबन्ध ।

प्रा० हटना—क्रि० अ० पीछे चला-जाना, पीछे फिर जाना, टलना, चला जाना, अलग हो जाना, २ हार जाना ।

प्रा० हटवा—(हाट) पु० तोलने वाला, कयाल, दूकानदार ।

प्रा० हटाना—क्रि० स० दूरकरना, अलग करना, टाल देना, निकाल देना, सरकाना, पीछे खेंच लेना ।

सं० हट्ट—(हट्=चमकना) स्त्री० हाट, दूकान, बाज़ार ।

प्रा० हट्टाकट्टा—पु० बलवान और चालाक, संडमुसंड, पोढ़ा, गाढ़ा, धाकड़, जोरावर ।

सं० हठ—(हठ्=हठ करना) पु० मगराई, मचलाई, अड़, ज़िद, बलात्कार, जबरदस्ती ।

प्रा० हठकरना } बोल० मग-
हठकीटेकपरहोना } राई से किसी बात को नहीं मानना, ज़िदकरना ।

प्रा० हठधर्मी—गु० ज़िद्दी, हठीला ।

सं० हठात्—क्रि० वि० बलात्, बल से, जबरन् ।

प्रा० हठी } (हठ) गु० मगरा,
हठीला } चिड़चिड़ा ।

प्रा० हड़गिल्ला } (सं० हड्ड=हड्डी, गृ=निगलना)
हड़गीला } पु० एक पखेरूका नाम जो पांच फुट ऊंचा होता है और उसके पंख फैलने से पन्द्रह फटतक नापा गया है ।

प्रा० हड़फूटन-पु० हड्डियों में दर्द ।

प्रा० हड़बड़ाना-क्रि० अ० घबराना, व्याकुलहोना, हकबकाना, जल्दी करना ।

प्रा० हड़बड़ी—स्त्री० खलबली, हुल्लड़, बलवा, दौरा ।

प्रा० हड़हड़ाना-क्रि० अ० काँपना, थरथराना, २ खड़खड़ाना, धड़धड़ाना, आंव ज़्होना । [हट, आवाज़ ।

प्रा० हड़हड़ाहट- स्त्री० खड़खड़ा-

प्रा० हड्डी-(सं० हड्ड) स्त्री० हाड़ ।

प्रा० हत्-वि० बो० दुर, दुत ।

प्रा० हतना } (सं० हनन, हन्=
हनना } मारना) क्रि० स० मारना, मारडालना ।

सं० हत—(हन्=मारना) म्र्मि० मारा हुआ, नष्ट ।

सं० हति-(हन्=मारना) स्त्री० मारना हनना, गुणना ।

सं० हत्या-(हन्=मारना) स्त्री० मारना, हिंसा, खून, पाप ।

सं० हताशा—(हत+आशा) गु० छिन्नाशा, नाउम्मैद ।

फ़ा० हत्तुल-इम्कान=इच्छापूर्वक, यथासाध्य ।

प्रा० हत्यारा-(सं० हत्याकार , क० पु० हत्याकरनेवाला, हिंसक, पापी, दुष्टी ।

प्रा० हथ-(सं० हस्त) पु० हाथ ।

प्रा० हथकड़ी-स्त्री० हाथकी बेड़ी, एक बड़ा भारी लोहेका कड़ा जो क़ैदियोंकेहाथमें डालदिया जाताहै ।

प्रा० हथखण्डा-(हथ=हाथ, खण्डा =ढब) पु० ढब, टेंव, अभ्यास, करतब, चाल, बान, हथौटी ।

प्रा० हथनी-(सं० हस्तिनी) स्त्री० हस्तिनी ।

प्रा० हथफेर-बोल० अदला बदली, एरा फेरी, २ छल,फ़रेब, खोटे रुपये को चालाकी से अच्छे रुपये से बदल लेना ।

प्रा० हथलेवा-(हथ=हाथ, लेवा= लेना) पु० ब्याह में दुलहा दुलहिन का हाथ मिला देना, ब्याहकी एकरीति ।

प्रा० हथबासना-क्रि० स० हाथ में लेना, हाथमें पकड़ना ।

प्रा० हथवासे-क्रि० वि० हाथमें अपने अधिकार में ।

प्रा० हथा } हत्था } (सं० हस्त) पु० बेंट, कवजा, २ बेलचा, खोदनी ।

प्रा० हथिया—(सं०हस्त) पु० ज्योतिष में तेरहवां नक्षत्र ।

प्रा० हथियाना—(हाथ) क्रि० स० पकड़ना, हाथ में लेलेना ।

प्रा० हथियार—(हाथ) पु० शस्त्र, २ कलकांटा, औज़ार ।

प्रा० हथेली-(हाथ) स्त्री० हाथ में बीचकी जगह ।

प्रा० हथौटी-(हाथ) स्त्री० चतुराई, प्रवीणता, होशियारी, गुण, हुनर ।

प्रा० हथौड़ा-पु०घन, बड़ा मार्तोल ।

प्रा० हथौड़ी-स्त्री० छोटा हथौड़ा ।

सं० हनन-(हन्+अन, हन्=मारना) भा०पु०मारना, घात, हिंसा ।

सं० हननीय- (हन्+अनीय, हन् =मारना) म्र्मि० मारनेयोग्य ।

सं० हनुमान्- (हनु=ठुड्डी, (हन्= नाश करना) मत्=वाला) पु० श्रीरामचन्द्र का दूत, पवनका पूत, हनुमन्त, महावीर ।

सं० हन्तव्य- (हन्+तव्य) म्र्मि० मारने के लायक़, हनने योग्य ।

सं० हन्ता — क० पु० मारनेवाला, घातक।

सं० हन्यमान—(हन्=मान, हन्=मारना) क० वध्यमान,मारनेवाला।

सं० हय—(हय् या हि=जाना) पु० घोड़ा, अश्व, तुरंग।

सं० हर—(हृ=लेना) पु० शिव, महादेव, २ आग, अग्नि, ३ गणित विद्या में भाजक, भिन्नगणित में वह अंक जो जतलाता है कि एक पूरी चीज के कितने टुकड़े किये गये हैं, नसबनुमा।

प्रा० हर—(सं० हल) पु० हल शब्द को देखो।

प्रा० हरख / हरष — (सं० हर्ष) पु० आनन्द सुख,खुशी, प्रसन्नता।

प्रा० हरखना / हरषना — (सं० हर्षण, हृष=खुश होना) क्रि० अ० प्रसन्न होना,खुश होना, फूलना, खिलना, सुखी होना, आनन्दित होना।

सं० हरगिरि—(हर+गिरि) पु० महादेव का पहाड़, कैलास पहाड़।

सं० हरण—(हृ=लेना)भा०पु०जबरदस्ती से किसीकी चीज लेलेना, लूट, चोरी।

प्रा० हरता—(सं०हर्ता, क० पु०लेनेवाला, हरनेवाला, दूरकरनेवाला, २ चोर, लुटेरा, ठग।

प्रा० हरना—(हरण) क्रि० स० लेलेना, जबरदस्ती से लेना,लूटना, चुराना।

सं० हरणीय—(हृ + अनीय, हृ=हरना) कर्म० हार्य्य, हरणयोग्य।

प्रा० हरनौटा / हिरनौटा — (हरिण) पु० हरिण का बच्चा

प्रा० हरमुश्टा—गु० बली, बलवान, हट्टा कट्टा।

प्रा० हरा—(सं०हरित) गु० सबज सबुज रंग, २ ताजा, नया।

प्रा० हराना—(हारना) क्रि० स० थकाना, शिकस्त देना, हरा देना जीतना, जीतपाना।

प्रा० हरावल—पु० स्त्री० आगे की सेना, (यह शब्द तुर्की है) २ अगाड़ी, आगा।

प्रा० हरास—(सं० ह्रास) पु० दुःख, [शोक।

सं० हरि —(हृ=लेना, दूर करना) पु० विष्णु, २ इन्द्र, ३ सांप, ४ मेंडक, ५ सिंह, ६ घोड़ा, ७ सूर्य, ८ चांद, ९ सूगा, सूवा, तोता, १० बानर, ११ यमराज, १२ हवा,—

("हरिर्विष्णावहाविन्द्रे,
भेकेसिंहेहयेरवौ।
चंद्रे कीरेप्लवङ्गे च,
यमेवाते च कीर्तितः")

१३ ब्रह्मा, १४ शिव, १५ किरण, १६ मोर, १७ कोयल, कोकिला, १८

हंस, १९ आग, २० धनुष, २१ पर्वत, २२ गज, २३ कामदेव गु० हरा रंग।

प्रा० हरिअरे—गु० हराहरा, २ हरि को अरे=शत्रु समझना।

सं० हरिचन्दन—पु० देववृक्ष, गोरोचन, मलयागिरिचन्दन, सफ़ेद चन्दन, ज्योत्स्ना, केशर।

प्रा० हरिचन्द
सं० हरिचन्द्र
सं० हरिश्चन्द्र — (हरि=विष्णु, चन्द्र=चांद) पु० एक बड़े दानी राजा का नाम जो अपना सत और धर्म निबाहने के लिये एक चंडाल के घर दासहोकर रहाथा।

सं० हरिजन—(हरि=विष्णु, जन=भक्त) पु० विष्णुका भक्त, भगवान् का भक्त, २ प्रह्लाद, हिरण्यकशिपु का बेटा।

सं० हरिण—(हृ=लेना) पु० एक जानवर का नाम, मृग, मृगा, कुरंग, गु० हरा।

सं० हरिणी—स्त्री० मृगी, २ सुवर्ण की प्रतिमा, हरे रङ्ग की।

सं० हरित्—(हृ=लेना मनको) गु० हरा, सब्ज़, हरियर, पीला, पु० हरारंग, २ सूर्य का घोड़ा, ३ सिंह, ४ सूर्य, ५ विष्णु।

सं० हरिताल—(हरित्) स्त्री० पीले रंग की एक धातु।

सं० हरितालक—(हरित्) पु० हरित कपोत, हरा कबूतर, शुक, सुग्गा, नाटक, हरताल।

सं० हरितालिका—स्त्री० भादों सुदीतीज का स्त्रियोंका व्रत दूर्वा, दूब।

सं० हरिद्रा—(हरित्=हरा, या पीला रंग, द्रु=जाना) स्त्री० हल्दी।

सं० हरिद्वार—(हरि=विष्णु, द्वार=दरवाज़ा, अर्थात् जहां गंगा में न्हाने से वैकुंठ मिलता है) पु० एक शहर का नाम जो गंगा के तीरपर है वहां गंगा में न्हाने का बहुत फल है।

प्रा० हरिपैड़ी—(सं० हरिपंक्ति) स्त्री० हरिघाट, विष्णुघाट, विष्णु पैड़ी।

सं० हरिप्रिया—(हरि+प्रिया) स्त्री० लक्ष्मी, तुलसी, द्वादशी।

सं० हरिभक्त-(हरि+भक्त) पु० विष्णु का भक्त, विष्णुउपासक, वैष्णव।

प्रा० हरिभजन—(हरि+भजन) पु० विष्णु का भजन।

प्रा० हरियल—(हरा) पु० एक तरह का हरा कबूतर।

सं० हरियान—(हरि=विष्णु, यान=वाहन) पु० गरुड़, विष्णु का वाहन।

प्रा० हरियाली—(हरा) स्त्री० हराई, हरआरी, सब्ज़ी।

सं० हरिवाहन—(हरि+वाहन) पु०

(१) चन्द टरै सूरज टरै टरै जगत व्योहार। पै दृढ़श्रीहरिचन्दको टरै न सत्यविचार॥

विष्णु की सवारी, गरुड़ ।

सं० हरीश-(हरि=वानर, ईश=मालिक) पु० वानरोंका राजा सुग्रीव।

प्रा० हरु / हरुअ } गु० हलका । [कांपन ।

प्रा० हरुआई-स्त्री० हलकाई, हल-

प्रा० हर्ड़ा / हर्ड़े / हर्रा / हर्रे } (सं० हरीतकी हरिहरावा पीलारंग, इण=पाना) स्त्री० एकदवाईका नाम।

सं० हर्त्तव्य-(हृ+तव्य, हृ=लेना) कर्म० लेनेयोग्य ।

सं० हर्त्ता-(हृ=लेना) क० पु० लेने वाला, हरनेवाला, दूर करनेवाला, पु० चोर।

सं० हर्म्य-पु० अट्टालिका, अटारी, प्रासाद, अंटा, ऊपर का कोठा ।

सं० हर्ष-(हृष्=प्रसन्न होना) पु० आनन्द, सुख, प्रसन्नता, खुशी ।

सं० हर्षण-(हृष्+अन, हृष्=प्रसन्न होना) भा० पु० आनन्द, ज्योतिषका एक योग ।

सं० हर्षित-(हर्ष ; क० आनंदित, प्रसन्न, खुश, मगन, प्रफुल्लित, आह्लादित ।

सं० हल-(हल्=हल चलना) पु० हर, नांगल, लांगल, एक चीज जिससे किसान बीज बोते समय धरती को साफ़ करते हैं २ व्यञ्जन अक्षर । [का धंधा ।

सं०हलभूति-स्त्री० कृषिवृत्ति, खेती

प्रा० हलका-गु० हौला, हलुक, फुलका, २ सस्ता, ३ ओछा, नीच, अधम, तुच्छ ।

प्रा०हलकाकरना-बोल०बोझ उतारना, घटाना, कम करना, ३ बेआबरू करना, हेठा करना, पानी उतारना, लतारना, बेइज़्ज़त करना ।

प्रा० हलकाजानना-बोल० तुच्छ समझना, अयोग्य जानना ।

प्रा० हलकाना-क्रि० स० सहारा देना, उकसाना ।

प्रा० हलकोरना-क्रि० स० इकट्ठा करना, बटोरना, समेटना, २ लहराना, फहराना, मौजमारना ।

प्रा०हलचल-पु० खलबली, हड़बड़ी, घबराहट, डर, हुल्लड़, बलवा।

प्रा०हलचलमचना-बोल० हुल्लड़ होजाना, ग़दर होना ।

प्रा० हलदिया-(हल्दी) पु० एक तरह का ज़हर, २ कँवल रोग या पांडुरोग जिसमें सारा शरीर पीला पड़जाता है पीलियारोग, २ गु० पीला रंग, हल्दी सा रंग ।

प्रा० हल्दी-(सं० हरिद्रा) स्त्री० एक तरह का मसाला ।

सं० हलधर–(हल, धृ=रखना) पु० बलदेव, बलराम।

प्रा० हलपना–क्रि० अ० तड़फड़ाना, तड़फना, लोट पोट होना, २ जाड़े की तपसे कांपना।

प्रा० हलफल–स्त्री० शिष्टाचार, सन्मान, आदर, २ हड़बड़ी, हलचल।

प्रा० हलरावना–क्रि० स० बहलाना, बच्चे को खेलाना।

प्रा० हलवाहा–(हल) क० पु० जोता, हल जोतने वाला।

प्रा० हलहलाहट–स्त्री० जर से या डर से कांपना।

सं० हलायुध–(हल+आयुध) पु० बलराम जिनका हथियार हल है, बलदेव, हलधर।

सं० हलाहल–पु० विष, जहर, माहुर, बड़ा जहर।

सं० हली–(हल+अ+इन्, हल् =जोतना) क० पु० बलराम।

प्रा० हलोरा, हिलोरा –(सं० हिल्लोल, हिल्लो-लू=डोलना, हिलना) पु० लहर, मौज, तरंग।

प्रा० हल्ला–(अ० हमला) पु० धावा, चढ़ाई रोला, हुल्लड़।

सं० हवन–(हु=होम करना) पु० होम, यज्ञ, आहुति।

सं० हविः, हविष्य –(हु=होमना) पु० स्त्री० घी तिल चावल आदि होम की सामग्री।

सं० हव्य–(हु=होमना) पु० देवता को बलि या भेंट, नैवेद्य।

सं० हविष्यान्न–(हविष्य+अन्न) पु० तिल, चावल, जवादि।

सं० हविर्भुज्–पु० देवता, अग्नि।

सं० हस्त–(हस्=हँसना) पु० हाथ २ हाथी की सूंड़, ३ तेरहवां नक्षत्र, ४ कोहनी से लेकर बीचकी अंगुली के शिरे तक का नाम।

सं० हस्तगत–म्प० हाथ में आया।

सं० हस्तामलक–(हस्त=हाथ आमलक=आंवला, हाथ में आंवले के ऐसे अर्थात् बहुत सहज या हस्त हाथ, अमल=निर्मल, क=पानी अर्थात् हाथमें निर्मल पानी की बूंद की तरह) गु० सहज, सुगम, बेमिहनत, २ पु० एक ग्रन्थ का नाम। [हाथीदांत।

सं० हस्तिदन्त–(हस्ती+दन्त) पु०

सं० हस्तिनापुर–(हस्तिन्=एक राजा, पुर=नगर) पु० पुरानी दिल्ली जिसको हस्तिन् नाम राजाने बसाई थी और जो राजा युधिष्ठिर और उसके भाइयों की राजधानी थी, उसके खंडहर और चिह्न दिल्ली से ५७ मील ईशान कोनको गंगा की पुरानी नहर पर अबतक हैं।

सं०हस्तिनी-(हस्तिन्)स्त्री०हथिनी।

सं०हस्ती—(हस्तिन्, हस्त=सूंड़) पु० हाथी, गज, मतंग, नाग।

सं०हस्र—(हस+र, हस=हंसना) क० मूर्ख, अज्ञ।

प्रा०हस्ली—स्त्री० गले की हड्डी, २ गले में पहनने का सोना या चांदी का एक गहना।

सं०हा—(हा=छोड़ना, या जाना) वि० बो० हाय, आह, ओह, दुःख, शोक, पीड़ा, विषाद, प्रसिद्ध, पाद पूरणम्, विस्मय, कुत्सा, निन्दा, यथा हाहातिकष्टः सुवीरप्रवासः वीरों में बसना अतिकष्ट है।

अं०हाईकोर्ट—(हाई=बड़ी, कोर्ट=कचहरी) बृहन्न्यायालय।

अं०हाउसआफलार्ड=मजमा मुदब्बिरान आला, महान्, राज्यप्रबन्धकों की सभा।

अं०हाउसआफकामन=मजमा मुतब्बिरान आम, सर्वसाधारणराज्य प्रबन्धकों की सभा।

प्रा०हां—(सं० आं अम्=जाना) क्रि० वि० मान लेनेका शब्द स्वीकार, अंगीकार, अंगेज़, ठीक।

प्रा०हांक—(सं० हंकार) स्त्री० पुकार, जोर से पुकारना, ललकार, किलकारी, चिल्लाहट, गूंज, गर्ज, २ निकालना।

प्रा०हांकमारना—बोल० जोर से पुकारना, चिल्लाना, ललकारना।

प्रा०हांकना—(हङ्कार) क्रि० स० पुकारना, ललकारना, २निकालना।

सं०हाङ्गर—(हा=दुःख, अङ्ग=शरीर, रा=लेना अर्थात् जो दुःख देने के लिये आदमीको ले लेता या पकड़ लेता) पु० मगरमच्छ।

प्रा०हांड़ी, हांडी—(सं० हण्डी, हन्=मारना या फोड़ना) स्त्री० एकतरहका मिट्टी का बरतन।

प्रा०हांपना, हाफना—क्रि० अ० हफहफाना, हौंकना, ऊंची सांस लेना।

प्रा०हांस—(सं० हंस) पु० हंस।

प्रा०हांसी—(सं० हास्य) स्त्री० हँसी, मसखरी, ठट्ठा।

प्रा०हांहीं, हांहूं—क्रि० वि० हां, ठीक, सच, सही।

अ०हाकिम—प्रशास्ता, हुक्म करने वाला।

प्रा०हाट, हाठ—(सं० हट्ट) स्त्री० दूकान, लेनदेन की जगह, बाज़ार, चौक, कटरा।

सं०हाटक—(हट्=चमकना) पु० सोना, कंचन, धतूरा, गु०सोने का बनाहुआ, सोने का।

सं०हाटकपुर—(हाटक+पुर) पु० सोने का नगर, लंका।

सं०हाड़—(सं० हड्ड) पु० हड्डी।

प्रा०हात } (सं० हस्त) पु० शरीर
हाथ } का एक अंग, हस्त, कर, २ कोहनी से लेकर बीचकी अंगुली के शिरे तकका नाप, ३ अधिकार, वश, क़बज़ा।

प्रा०हाथआना } बोल० अपने अ-
हाथमेंआना } धिकार में आना, क़बजे में आना, मिलना, हाथ लगना, मिलजाना।

प्रा०हाथउठाना—बोल० छोड़देना, किसी काम के करने से रुकजाना, २ हाथ शिरपर लगा के सलाम करना, ३ मारना, ४ भीख देना, खैरात बांटना।

प्रा० हाथकमरपररखना—बोल० बहुत निबल होना, बहुत कमज़ोर होना।

प्रा०हाथकानोंपररखना—बोल० अचम्भेमें होना, २ झटपट इनकार कर जाना।

प्रा०हाथखैंचना—बोल० छोड़ना, मुंह फेरना, दूर भागना, किनारे होना, अलग होना।

प्रा० हाथचाटना—बोल० किसी अच्छे खाने का बहुत स्वाद लेना, या अच्छे खाने को बहुत खुशी से खाना।

प्रा०हाथजोड़ना—बोल० बिनती करना, घिघियाना।

प्रा०हाथडालना—बोल० किसीकाम में अपनाअधिकारकरना, दस्तअंदाज़ी करना, दखल करना, दबाना।

प्रा०हाथधोना—बोल० निराशहोना, नाउम्मैद होना।

प्रा०हाथपड़ना—बोल० अपने अधिकार में आना, क़बजे में आना, हाथ लगना।

प्रा० हाथपत्थरतलेदबना—बोल० बेबश होना, कुछ नहीं करसकना।

प्रा०हाथपसारना—बोल० मांगना, चाहना।

प्रा० हाथपांवफूलजाना—बोल० घबराजाना, काम करने से हिचकिचाना।

प्रा०हाथपांवमारना—बोल० मिहनतकरना, कोशिशकरना, २ घबरा जाना, वृथा परिश्रम करना।

प्रा०हाथफेंकना—बोल० पटा या लकड़ी चलाना, २ मुफ़तका माल लेना।

प्रा०हाथफेरना—बोल० प्यार करना, दुलार करना, छोहकरना, गले लगाना, फुसलाना, शाबाशीदेना।

प्रा०हाथबन्दहोना—बोल० काम में बहुतलगा रहना, कुछ फुर्सत नहीं पाना, २ ग़रीब होना, खाली हाथ होना, तिहीदस्तहोना।

प्रा० हाथबढ़ाना—बोल० किसी चीज़के मिलनेके लिये कोशिशकरना, २ दूसरे आदमी के माल असबाब पर दखल करना ।

प्रा०हाथबांधना—बोल० हाथ जोड़ना, बिनती करना ।

प्रा०हाथबैठना—बोल० जमना, किसी हुनर में खूबअभ्यास होना ।

प्रा०हाथभरना—बोल० हाथथकजाना।

प्रा०हाथमलना—बोल० पछतावा करना, सोचकरना, फ़िक्रकरना ।

प्रा०हाथमारना—बोल० वचनदेना, ताली मारना, २ पाना, लेलेना, छीन लेना, लूटलेना, ३ तलवार से घायलकरना, वारकरना ।

प्रा०हाथमिलाना—बोल० बराबरी का दावा करना, २ कुश्ती लड़ने को तैयार होना ।

प्रा०हाथमेंरखना—बोल० अपने अधिकार में रखना, अपने अख़तियार में रखना, वश में होना ।

प्रा० हाथलगना—बोल० हाथआना, मिलना, पाना, हासिलहोना ।

प्रा०हाथलगाना—बोल० हाथरखना, छूना, २ झिड़कना, सज़ादेना, ३ किसी काम में लगना, किसीकाम को शुरूअ करना ।

प्रा०हाथसमेटना—बोल० देने से हाथको रोक लेना ।

प्रा०हाथपाईकरना } बोल० धक्कम
हाथबाहीकरना } धक्का करना, धौलधप्पा चलाना, लात मुक्की मारना, आपस में लड़ना ।

प्रा०हाथोहाथकरना—बोल० सब मिलके करना ।

प्रा०हाथोंहाथ—बोल० तुरन्त, झटपट, तुरत, फुरत ।

प्रा०हाथोंहाथलेजाना—बोल० झटपट लेजाना, तुर्तफुर्त झपटलेना ।

प्रा०हाथा—(सं० हस्त) पु० हाथ, २ अधिकार, वश । [का नाम ।

प्रा०हाथाजोड़ी—स्त्री० एक पौधे

प्रा०हाथी—(सं० हस्ती) पु० एक जानवर का नाममतंग, गज ।

प्रा०हाथीदांत—(सं०=हस्तीदन्त) पु० हाथी का दांत ।

प्रा०हाथीवान्—पु० महावत ।

प्रा०हान } (हा=त्यागना, छोड़ना)
सं०हानि } स्त्री० घटी, टोटा, नुक़सान।

प्रा०हाय } (सं० हाहा) त्रि० बो०
हायहाय } आह, ओह, २ स्त्री० दुःख, पछतावा ।

सं०हायन—पु० स्त्री० वर्ष, वत्सर, वर्ष का दिन ।

प्रा०हायमारना—बोल० पछताना, दुःख करना, आह मारना, आह

भरना, किसी की उन्नति देखकर कुढ़ना ।

प्रा०हायहायकरना—बोल० रोना, पीटना, दुःख से रोना ।

सं०हार—(हृ=लेना) पु० मोती अथवा फूलों की माला ।

प्रा०हार—(सं० हारि, हृ=लेना) स्त्री० शिकस्त, पराजय, घटी, २ पु० बेलों का झुण्ड, ३ चरने की जगह, चरी, चरागाह ।

सं०हारक—(हृ+अक, हृ=लेना) क० पु० कितव, चोर, भाजकांक, चुरानेवाला ।

प्रा०हारना—(सं० हरण, हृ=लेना या पकड़ना, क्रि० अ० थकना, शिकस्त खाना, पराजितहोना, २ खेलखोना, खेल में मात होना ।

प्रा०हारमानना } बोल० निराश
हारमानलेना } होके छोड़देना ।

सं०हारित—र्म० हरणया, छीना गया, जबरदस्ती से लिया गया ।

सं०हार्दिक दुःख—भा० पु० चित्त ताप, दिली सदमा ।

सं०हारी—क० पु० चोर, ठग ।

सं०हार्य्य—र्म० हर्तव्य, चुरानेलायक़ ।

सं०हाव—(ह्वे=बुलाना, या कामदेव को उठाना) पु० नखरा, चोंचला तावभाव, हावभाव, रावचाव ।

सं०हावभाव—(हाव+भाव) पु० रावचाव, रंगरस, दुलारप्यार, नखरा, चोंचला ।

सं०हास्य—(हस्=हंसना) पु० हंसी, हांसी, खुशी, कौतुक, खेल, ठट्ठा ।

सं०हाहा—(हा=छोड़ना सुख को) क्रि० वि० हायहाय, आह, ओह, २ अचम्भा, वाह, वाहवाह ।

सं०हाहाकार—(हाहा=हायहाय कृ=करना) पु० हाय हाय करना, घबराहट, २ लड़ाईका शब्द, हुल्लड़, कोलाहल, शोक का शब्द ।

प्रा०हाहाहीही—स्त्री० हंसी, हंसना ।

प्रा०हाहाहीहीकरना—बोल० हंसना, दांतनिकालना ।

प्रा०हि—अव्य० हेतु, निश्चय, अवधारण, निकालना, विशेष, प्रश्न, सम्भ्रम, हेतु, उपदेश, शोक, असूया, निन्दा, अवश्य ।

प्रा०हिंडोल—(सं० हिन्दोल, हिल्लोल्=हिलना) स्त्री० एक रागका नाम जो बसन्त ऋतु में भोर के समय गायाजाता है ।

प्रा०हिंडोला—(सं० हिन्दोल, हिल्लोल्=हिलना) पु० पलना, झूला, २ गीत जो झूलते समय गायाजाता है ।

सं०हिंसक } (हिंस्+अक, हिंस्=
हिंस्रक } मारना) क० पु०

मारने वाला, हिंसा करने वाला, घातक, वधिक, दुर्जन, दुष्ट, पापी, ३ जंगली जानवर जैसे बाघ भेड़िए, या, चीता आदि । [मारना ।

सं०हिंसन—भा० स्त्री० वध करना,

सं०हिंसा—(हिंस्=मारना) स्त्री० मारना, वध, घात, २ नुकसान ।

सं०हिक्का—स्त्री० हेचकी, हिचकी, रोगभेद ।

सं०हिंगु—पु०रामठ, हींग ।

सं०हिंगुल—(हिंगु एक लालचीज ला=लेना) पु० सिन्दूर ऐसी लालचीज, शिंगरफ़ ।

प्रा०हिचकना—क्रि० अ० आगा पीछा करना, रुकना, दबना, झझकना, हटना, टलना, ठिठकना।

प्रा०हिचकाना—क्रि० स० धक्का देना, झोंका देना, दिल छोटा करना, हिम्मत पस्त करना ।

प्रा०हिचकिचाना—बोल०संदेह में पड़ना, दुविधामें होना, आगापीछा करना, २ हकलाना, लड़बड़ाना ।

प्रा०हिचकी—(सं० हिक्का, हिक्=हिचकी लेना) स्त्री० हिच ऐसा शब्द जो गले में से निकलता है ।

प्रा०हिजड़ा—पु० नपुंसक, नामर्द ।

सं०हित—(हि=जाना, या बढ़ना, अथवा धा=रखना) पु० प्यार, मित्राई, २ उपकार, भलाई, ३ गु० उचित, ठीक, योग्य, भला ।

सं०हितकार, हितकारी—(हित=भला, कार या कारी=करनेवाला, कृ=करना) क० भला करनेवाला, मित्र, सज्जन, उपकारी, हितू ।

प्रा०हितू—(हित)क०मित्र,हितकारी ।

सं०हितैषी—(हित=भला, इष्=चाहना) गु० दूसरे का भला चाहनेवाला, परोपकारी, हितकारी ।

सं०हितोपदेश—(हित=भला,उप-देश=शिक्षा) पु० भली शिक्षा, अच्छी सीख, २ संस्कृत में विष्णुशर्म्माकी बनाई हुई एकपुस्तक जिसमें राजनीति की बातें लिखी हैं ।

प्रा०हिनहिनाना—क्रि०अ० घोड़े का बोलना, हींसना ।

प्रा०हिन्द—(यह शब्द हिंधु से निकला है क्योंकि पश्चिमी देशों के लोग स की जगह ह बोलते हैं और जब सिकन्दर यहां आया तो उसने सिन्धु नदी के इस पार के देश को हिन्द कहा और आजतक यूनान वाले इसे 'इन्द' कहते हैं उसी से 'इण्डिया' शब्द बना है जिस नाम से अंगरेज़ हिन्दुस्तान को पुकारते हैं) पु० भरतखण्ड हिन्दुस्तान ।

प्रा०हिन्दी–(हिन्द)गु० हिन्दुस्तान का, हिन्दुस्तानी, २ स्त्री० हिन्दुस्तान की बोली ।

प्रा०हिन्दू–(हिन्द)पु० हिन्दुस्तान का वासी जो वेदकेमतको मानतेहैं ।

सं०हिम–(हि=जाना, या बढ़ना) पु० पाला, बर्फ, शीत, तुषार, गु० ठण्ढा, जमाहुआ ।

सं०हिमऋतु–(हिम+ऋतु) स्त्री० जाड़ा, जाड़े की ऋतु, शीतकाल, सर्दी की ऋतु ।

सं०हिमकर–(हिम=ठण्ढी, कर=किरण) पु० चांद, २ कपूर ।

सं०हिमकूट–पु०शिशिरऋतु, जाड़ा।

सं०हिमगिरि–(हिम+गिरि) पु० हिमालय पहाड़ ।

सं०हिमवत्–(हिम्=बर्फ, वत्=वाला) पु० हिमालय पहाड़, गु० बर्फवाला, बहुत ठंढा ।

सं०हिमांशु–(हिम=ठण्ढी, अंशु=किरण) पु० चांद, २ कपूर ।

सं०हिमाद्रि–(हिम=बर्फ अद्रि=पहाड़) हिमालय पहाड़ ।

सं०हिमालय–(हिम=बर्फ, आलय=जगह) पु० हिन्दुस्तानका एक पहाड़ जो उत्तर में है और संसार के सारे पहाड़ों से ऊंचा है और जिसको हिमाचल, हिमाद्रि, हिम गिरि भी कहते हैं ।

प्रा०हिय, हिया, हियो–(सं० हृद् या हृदय)पु० हिरदा, मन, हृदय ।

प्रा०हियाव–(सं० हृदय) भा०पु० शूरमापन, शूरवीरता, हिम्मत, साहस।

प्रा०हियो=जब गाय गोरू को बुलाते हैं तब यह शब्द बोलते हैं ।

सं०हिरण, हिरण्य–(हृ=लेना, मनको) पु० सोना, सुवर्ण ।

सं०हिरण्यकशिपु–(हिरण्य=सोना, कशिपु=कपड़ा, कश्=शब्द करना) पु० एक दैत्यका नाम जो प्रह्लाद का बाप था जिस को विष्णु ने नृसिंह अवतारलेकेमारा।

सं०हिरण्यगर्भ–(हिरण्य=सोना, गर्भ=पेट) पु०जिसके पेटमें सुवर्ण हो, शालग्राम की मूर्ति, २ ब्रह्मा ।

सं०हिरण्याक्ष–(हिरण्य=सोना, अक्ष=आंख जिसकी आंखें सोने सी लाल चमकती हों) पु० हिरण्यकशिपु का भाई जो फिर कुम्भकरण और दन्तवक्र हुआथा ।

प्रा०हिरद, हिरदा–(सं० हृद्, वा हृदय, पु० हिया, हृदय, छाती, मन, अन्तःकरण ।

प्रा०हिरन–(सं० हरिण) पु० एक जानवर का नाम, मृग, मृगा ।

प्रा०हिराना—क्रि० स० खोना, रख कर भूलजाना। [ऐंठना।

प्रा०हिलकना—क्रि० अ० दर्द से

प्रा०हिलकोर स्त्री० } (सं० हि-
हिलकोरा पु० } ल्लोल) ल-
हर, तरंग, मौज, २हिलाव, लहराव।

प्रा०हिलकोरना—(हिलकोर) क्रि० अ० लहराना, मौजमारना, हिलाना।

प्रा०हिलना—(हिल्लोल) क्रि० अ० डोलना, कांपना, २ मिलजुल जाना, वश होजाना।

प्रा०हिलमिलजाना—बोल० मिला जुला रहना, मिलजुल जाना।

प्रा०हिलामिला—बोल० मिलाजुला।

प्रा०हिलोरना—(हिल्लोल) क्रि० अ० लहराना, मौजमारना, हिलकोरना।

प्रा०हिलोरा—(हिल्लोल) पु० लहर, तरंग, मौज, हिलकोरा।

प्रा०हिस्का—पु० बराबरी, देखादेखी, बदाबदी, लाग।

प्रा०हींग—(सं० हिंगु हिम=ठंढा, गम्=जाना) स्त्री० एक सुगन्धित चीज जिसको घीमें गर्मकरके दाल आदि तरकारी में बघार देते हैं।

प्रा०हींसना—क्रि० अ० हिनहिनाना।

प्रा०हीक—स्त्री० उबकाई, मतलाई।

सं०हीन—(हा=छोड़ना) गु० बिन, छोड़ा हुआ, रहित, कम, २नीच, अधम, ३ गरीब, दीन।

सं०हीनजाति—(हीन=नीच, जाति =जात) गु० नीच जात का, २ स्त्री० गणित में बड़े नामके अंकको छोटेनाम के अंकमें लाना जैसे रुपये को आने के रूपमें लाना आदि।

सं०हीनवर्ण—(हीन+वर्ण) गु० नीच जाति का, अधम, नीच।

सं०हीर—(हृ=लेना)पु० सार, गूदा, २ वज्र, ३ हीरा, ४ शिव, ५ सांप ६ हार, ७ सिंह।

प्रा०हीर—स्त्री० एक स्त्री का नाम जो रांझाको बहुत प्यारी थी।

प्रा०हीरा—(सं० हीर) पु० एक रत्न का नाम।

प्रा०हीरामन—पु० एक तरह का तोता, एकतरह का सुआ।

प्रा०हीरावल } (सं० हरि+आ
हीरावली } वली, अर्थात् जिस
पर हरि हरि ऐसा लिखाहो या हीर=हीरा, अवली=पांत) स्त्री० एक तरहका कम्बल जिसको योगी ओढते हैं।

प्रा०हीही—वि० बो० हँसनेकाशब्द, हाहा हीही, २ अचम्भे का शब्द, आहा वाहवाह।

सं०हुङ्कार—(हुम् ऐसा शब्द, कृ=

करना) स्त्री० पुकार,गर्जन, डराने का शब्द । [उपद्रवी ।
प्रा० हुड़दंगा-पु० दंगैत, लड़ाका,
प्रा० हुंडवी } स्त्री० रुपये के पहुँ-
हुंडी } चाने की चिट्ठी ।
प्रा० हुंडाभाड़ा-पु० बीमा, जोखिम, पहुँचावर, किसी चीज या सोने चांदी आदिके जेवर को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचा देनेके लिये जो कुछ ठहरे ।
प्रा० हुंडार-पु० भेड़िया ।
प्रा० हुंडावन } स्त्री० हुण्डी का
हुंडियावन } बट्टा, हुण्डी के लिये जो कुछ दियाजाय ।
प्रा० हुंडीवाल-पु० कोठीवाल, वह महाजन जिस के हुण्डीका व्यवहार होता है ।
सं० हुत-(हु=होमना) म्भ० होमी हुई,पु०होमनेकीचीज जैसे घीआदि।
सं० हुतभुक्-पु० अग्निदेवता ।
सं० हुताश } (हुत+अश्=भक्षण
हुताशन } करना) अग्नि, वह्नि ।
प्रा० हुमकना-क्रि०अ० उछलना ।
प्रा० हुलसना-(सं० उल्लसन उत्, लस्=खेलना,आनंद करना) क्रि० अ० खुश होना, प्रसन्न होना, आनन्दित होना ।
प्रा० हुलसी-स्त्री० सुखी, खुशी, तुलसीदास की माता का नाम ।
प्रा० हुलास-(सं० उल्लास) पु० आनंद, हर्ष, खुशी, प्रसन्नता ।
प्रा० हुल्लड़-पु० रौला, बखेड़ा, हलचल, हौड़ा ।
प्रा० हूं-क्रि० वि० हां, भी, सही, भला, ठीक, अच्छा, २वर्त्तमानकाल में एक वचन उत्तमपुरुष का चिह्न ।
प्रा० हूंहां-पु० धूमधाम हुल्लड़ ।
प्रा० हूक-स्त्री० पीड़ा, ठसक ।
प्रा० हूकहूककेरोना-बोल० सिसकी भरके रोना,ठसकरके रोना ।
सं० हूति-(ह्वे=बुलाना) स्त्री० आह्वान, बुलावा । [सिक्का ।
प्रा० हून-पु०मदरास का सोने का
प्रा० हूलना-क्रि० स० पेलदेना, (जैसे हाथी को) चलना, २ चुभाना, खींचना, आंकुस मारना ।
सं० हृत-(हृ=लेना)म्भ०लियाहुआ।
सं० हृद } (हृ=लेना) पु० मन,
हृदय } दिल, २ कुण्ड, हिरदा, हिया, छाती ।
सं०हृषीकेश-(हृषीक=इन्द्रिय(हृष्=प्रसन्न होना) और ईश=मालिक) पु० विष्णु, भगवान्, नारायण ।
सं० हृष्ट-(हृष्=प्रसन्न होना) क० प्रसन्न, हर्षित, आनंदित, मग्न ।
सं० हृष्टपुष्ट-(हृष्ट=प्रसन्न, पुष्ट=मो-

टा ताज़ा) क०मोटा ताज़ा, मसन्न, संडमुसंड, मुटकड़ ।

सं०हे-अव्य० सम्बोधन, बुलाना, आह्वान करना, असूया करना, निन्दा करना ।

प्रा०हेठ-क्रि० वि० नीचे, तले, हेठे ।

प्रा० हेठा-(सं० हेड्=रोकना) गु० डरपोकना, २ ढीला, आसकती, आलसी, ३ नीच । [ज्वाला ।

सं०हेति-सूर्यका तेज, शस्त्र, अग्निकी

सं०हेतु-(हि=जाना, या बढ़ना) पु० कारण, सबब, अर्थ, अभिप्राय, मतलब, फल ।

सं० हेम-(हि=बढ़ना) पु० सोना, सुवर्ण, कंचन ।

सं०हेममाली-पु०सूर्य, स्वर्णमाली ।

सं०हेमन्त-(हि=जाना, या बढ़ना)पु० जाड़े की ऋतु, एक ऋतु जो अगहन और पूसके महीनोंमें रहती है, सर्दी ।

सं०हेय-(हा=छोड़ना) गु०त्याज्य, छोड़ने योग्य ।

प्रा०हेरना-क्रि० स०खोजना, ढूंढ़ना, २ देखना, ३ रगेदना, खदेड़ना ।

सं०हेरम्ब-(हे=शिव, रेबि=जाना) पु० गणेश ।

प्रा० हेलना-क्रि० अ० पैरना, तैरना, पार होना ।

सं०हेला-(हेल्=अवज्ञा करना) स्त्री० खेल, क्रीड़ा, २ अवज्ञा, अनादर ।

प्रा० हौंकना-क्रि० अ० हांपना, हफहफाना, ऊँचा सांस लेना ।

प्रा० होंठ } (सं० ओष्ठ)पु० मुँहके
होठ } बाहरका हिस्सा, ओष्ठ ।

प्रा० होड़-स्त्री० पण, वचन, दांव, पेच, शर्त ।

प्रा०होड़बदना-बोल०शर्तलगाना ।

प्रा० होड़लगाना-बोल० शर्त लगाना, बचनकरना, पणकरना, बाजी लगाना ।

प्रा०होड़हारना-बोल०बाजीहारना ।

प्रा० होत-(होना) स्त्री० बश, शक्ति, सामर्थ्य, पहुँच ।

प्रा० होतब-(सं० भवितव्य) पु० भाग, क़िस्मत, प्रारब्ध ।

प्रा० होतव्यता-(सं० भवितव्यता) स्त्री० होनहार, संयोग, भाग, प्रारब्ध ।

सं० होता-(हु=होमना) क० पु० होम करनेवाला ।

प्रा० होना-(सं० भवन, भू=होना) क्रि० अ० रहना, विद्यमान रहना ।

प्रा० होआना-बोल० जाके चला आना ।

प्रा०होचुकना } बोल० पूराहोना ।
होलेना }

प्रा० होजाना-बोल० आपड़ना, संयोग बनना ।

प्रा० होतेहोते-बोल० धीरे धीरे, क्रम क्रम से ।

प्रा० होन्हार } (होना) गु० होने
होनहार } वाला, संभव, जो होगा ।

सं० होम-(हु=होमना) पु० हवन, यज्ञ, वेद के मंत्रों से देवताओं को बलि देने के लिये घी आदि को आग में डालना ।

सं० होमकुण्ड-(होम=कुण्ड) पु० होम करने के लिये आग रखने का गढ़ा ।

प्रा० होमना-(होम) क्रि० स० होम करना, घीआदि होम की चीजको आग में डालना ।

सं० होमी-(हु=होम)क० पु० होम करनेवाला ।

प्रा० होला (सं०होलका,हु=खाना) पु० कच्चे चने, या आग में सेंके हुए कच्चे चने, छोला, बूट ।

प्रा० होला-पु० एकतरह की नाव।

प्रा० होली-(सं० होला, अथवा होलिका, हु=होमकरना या खाना) स्त्री० हिंदुओं का एकबड़ा तिहवार जो फागुन के महीने में होता है ।

प्रा० हौंस-(अ० 'हवस') स्त्री० चाह, चोप, इच्छा, उमंग, बढ़ने की चाह ।

प्रा० हौले-क्रि० वि० धीरे, धीमे ।

सं० ह्यस्-अव्य० गत दिन ।

सं० ह्रद-(ह्राद्=शब्द करना) पु० गहरी झील, सरोवर, दह, कुण्ड ।

सं० ह्रस्व-(ह्रस्=छोटा होना)पु० एक मात्रा का स्वर, लघु, २ गु० छोटा, नाटा, बावना ।

सं० ह्रास-(ह्रस=छोटा होना, या शब्द करना) पु० घटी, कमी, क्षय, २ शब्द, आवाज़ ।

सं० ह्री-(ह्री=लजाना) स्त्री० लाज, लज्जा, शर्म ।

सं० ह्लाद-(ह्लाद्=प्रसन्नहोना) पु० आनंद, हर्ष, संतोष, सुख ।

सं० ह्लादित-क० पु० आनन्दित, प्रसन्न, हर्षित ।

सं० ह्लादिनी-स्त्री० बिजली, वज्र, ईश्वरी शक्ति, गु० आनन्दयुक्त ।

सं० ह्ललन-(ह्लल्=जाना)पु०चलना, महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, गणेश, स्त्री० सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मी ।

सम्पूर्णम् ॥

कवियों का जीवनचरित्र

कबीरदास—संवत् १६१० में उत्पन्न हुआ एक जुलाहे का लड़का था स्वामी रामानन्द के खड़ाऊं की ठोकर खाकर आह का शब्द किया इस को सुन स्वामीजी ने राम राम कहा इस ने उनको अपना गुरु मान लिया इन के कबीर की साखी आदि कई ग्रंथ हैं ॥

केशवदास—सनाढ्य ब्राह्मण देहली के महाप्रतापी अकबर बादशाह के समय में संवत् १६२४ में उत्पन्न हुये थे उस समय से अबतक के और किसी कविने गुरु आशय की जमकदार काव्य की रचना नहीं की है ओरछा के राजा इन्द्रजीत के यहां ये कवि जी रहा करते थे वहां उन्हीं राजा के नाम से चार पुस्तकें अर्थात् रामचन्द्रिका, रसिकप्रिया, कविप्रिया, विज्ञानगीता की रचना की थी जिसमें विज्ञानगीता तो ज्ञान के विषय में और शेष तीनों रस के काव्य हैं जिनका आशय कहना बहुत कठिन है इस से जाना जाताहै कि केशवदास जी पिङ्गल नायिका भेद अलंकार लक्षणा व्यञ्जना कोष आदि जो काव्य के अंगहैं इन में बहुत विज्ञ थे प्राचीनलोग कहते चले आते हैं कि रसिकप्रिया के एक कवित्त का एक चरण (मखतूलके झूल झुलावत केशव भानु मनो शनि अंक लिये) ऐसा लिखा है जिस में असम्भव उपमा होगई है जिस से स्वप्न में श्रीराधा महारानीजी ने कहा कि तुम्हारी प्रेतों की सी बुद्धि है तुम प्रेत होगे तिस पीछे कुछ काल व्यतीत कर ओरछामें प्रेत यज्ञ करके केशवदासजी ने अपना शरीर त्याग किया और प्रेत हुये ॥

क्षेमकरण—सरवरिया ब्राह्मण गाँव धनौली जिला बारहबंकी के वासी संवत् १८३५ में पैदा हुये ये संस्कृत और भाषा दोनों की कविता में बड़े विज्ञ थे इन्हों ने श्रीरामरत्नाकर संस्कृत में रामगीतमाला आदि भाषा के ग्रन्थ बनाये संवत् १९१८ में स्वर्गवासी हुये ॥

खानखाना नव्वाब अबदुलरहीम-जिनका छाप अर्थात् तखल्लुस् रहीम और रहमन है संवत् १५८० में उत्पन्न हुये थे यामिनी भाषा तथा संस्कृत और ब्रज-भाषा के बड़े पण्डित इनकी सभा रात दिन पण्डित जनों से भरीपुरी रहती थी संस्कृत में इनके बनाये हुये श्लोक बहुत कठिन हैं और भाषा में नवो रस के कवित्त दोहा बहुत सुन्दर हैं संवत् १६५२ में इनका देहान्त हुआ ॥

गिरिधर—कविराय अन्तरबेद के रहनेवाले संवत् १७७० में उत्पन्न हुये इन की नीति सामयिक सम्बन्धी कुण्डलिया विख्यात हैं ये जयपुर के जयसिंह सवाई की सभा में थे उक्त महाराजा ने इनको कविराय की पदवी दी थी ये एक कुण्डलियों का ग्रंथ बना रहे थे पर पूरा न हुआ मृत्युवश हुये पश्चात् उन की स्त्री ने उसे पूरा किया जिन कुण्डलियों में साईं का पद पड़ा है लोग कहते हैं कि उनकी स्त्री की कही हैं ॥

देवकीनंदन, शिवनाथ, गुरुदत्त शुक्ल—ये तीन भाई कान्यकुब्ज ब्राह्मण कन्नौज के समीप मकरन्द नगर के वासी हिंदी में बहुत अच्छे कवि थे इन्होंने फुटकर काव्य तो बहुत की है परन्तु पक्षीविलास नामक एक पुस्तक कही है जिसमें सब पक्षियों का जुदा २ रंग ढंग स्वभाव आदिका वर्णन किया है जिन दिनों पक्षीविलास की रचना करते थे तब कबूतर पक्षी के वर्णन में (गुरुदत्त तुम्हें यह छाँड़बे टोला) यह पद अंत में कह गये जब पीछे को सोचा तो जाना कि यह काव्यागण पड़ गया है सो मिथ्या न होगा अब अवश्य करके यहां का वास छूटैगा दैवयोग से गोरखपुर की ओर किसी राजा के यहाँ गये वहाँ बहुत मान से ठहराये गये दो ग्राम राजा ने नानकार दिये वहाँ गुरुदत्त जी रहने लगे और विक्रम के संवत् १८६४ में उत्पन्न हुये मैं (पण्डित श्रीधर त्रिपाठि) इनके नाव्यों में हूं ॥

गंगकवि—एकनौरगांव जिला इटावा के वासी थे संवत् १५९५ में उत्पन्न हुये ये बड़े कवि थे राजा बीरबर ने इनको छप्पै में एकलाख रुपये इनाम दिये इसी प्रकार से अकबर जहांगीर खानखाना मानसिंह सवाई आदि सबों ने इनका बहुत मान किया और दान दिया ॥

घाघकवि—कान्यकुब्ज अन्तरवेदनिवासी संवत् १७५३ में उत्पन्न हुये इनके दोहा छप्पय लोकोक्ति अर्थात् जर्बुलमसल तथा नीतिसम्बन्धी सामयिक ग्रामीण बोल चाल में विख्यात हैं ॥

चन्द्रकवि—प्राचीन बन्दीजन सम्भलनिवासी सन् ११९८ में उत्पन्न हुये ये चन्द्रकवि महाराजा बीसलदेव चौहान रणथम्भौरवाले के प्राचीन कवीश्वर के औलाद में थे संवत् ११२० में राजा पृथ्वीराज चौहान के पास आय मंत्री औ कवीश्वर दोनों पदों को प्राप्तहुआ औ पृथ्वीराज रायसा नाम एक ग्रन्थ एक लक्ष श्लोक संस्कृत भाषा में रचे जिस में ६९ खण्ड हैं और पुरानी बोली हिन्दुओं की है । इस ग्रन्थ में चन्द्रकवि ने संवत् ११७० से संवत् ११४९ तक पृथ्वीराज का जीवन चरित्र महाकविताई के साथ बहुत छन्दों में वर्णन किया है छप्पय छन्द तौ मानों इसी कवि के भाग में थे जैसा चौपाई छन्द श्रीगुसाईं तुलसीदास के हिस्से में पड़ी थी इस ग्रन्थ में क्षत्रियों की वंशावली और अनेक युद्ध औ आबू पहाड़ का माहात्म्य औ दिल्ली इत्यादि राजधानियों की शोभा औ क्षत्रियों के सुभाव चाल चलन व्यवहार बहुत विस्तारपूर्वक वर्णन किये हैं ये कवि केवल कवीश्वरही नहीं थे वरन नीति शास्त्र औ चारन के काम काज में महाशूरवीर थे संवत् ११४६ में साथ पृथ्वी राज के येभी मारेगये इन्हीं की औलाद में शारंगधर कवि थे जिन्हों ने हमीरगयरा और हमीर काव्य भाषा में बनाया है ॥

चिन्तामणि त्रिपाठी—टिकमापुर जिले कानपुरवाले संवत् १७२९ में उत्पन्न हुये ये महाराज भाषा साहित्य के आचार्यों में गिने जाते हैं अन्तरवेद में विदित है कि इन के पिता दुर्गापाठ करने नित्य देवीजी के स्थान में जाते थे वे देवी जी वन की भुइयां कहाती हैं टिकमापुर से एक मील के अन्तर पर हैं एक दिन महाराज राजेश्वरी भगवती प्रसन्न है चारि मुण्ड दिखाय बोली यही चारो तेरे पुत्र होंगे निदान ऐसाही हुआ कि चिन्तामणि १ भूषण २ मतिराम ३ जटाशङ्कर या नीलकण्ठ ४ चारि पुत्र उत्पन्नहुये इन में केवल नीलकण्ठ महाराज तो एक सिद्ध के आशीर्वाद से कवि हुये शेष तीनों भाई संस्कृत काव्य को पढ़ि ऐसे पण्डित हुये कि उनका नाम प्रलयतक बाकी रहैगा इन्हीं के वंश में शीतल औ बिहारीलाल कवि जिनका लाल भोग है संवत् १९०१ तक विद्यमान थे निदान चिन्तामणि महाराज बहुत दिनतक नागपुर में सूर्यवंशी भोसला मकरन्द शाह के यहां रहे और उन्हीं के

नाम छन्दविचार नाम पिंगल १ एक बहुत भारी ग्रन्थ बनाया और काव्यविवेक २ कविकुलकल्पतरु ३ काव्यप्रकाश ४ रामायण ५ ये पांच ग्रन्थ इन के बनाये हुये हैं ॥

तानसेन कवि—ग्वालियर निवासी संवत् १५८८ में उत्पन्न हुये ये कवि मकरन्द पांडे गौड़ ब्राह्मण के पुत्र थे प्रथम श्रीगोसाईं स्वामी हरिदासजू गोकुलस्थ के शिष्य हुये काव्य विद्याको यथावत् सीख तत्पश्चात् शेख मोहम्मद गौस गवालियरवासी के पास जाय संगीत विद्या के लिये प्रार्थना करी शाह साहब तन्त्र विद्या में अद्वितीय थे वरन मुसल्मानों में इन्हीं को इस विद्याका आचार्य्य सब इतिहासों में लिखा है शाह साहब ने अपनी जीभ तानसेनकीजीभ में लगायदी उसी समयसे तानसेन गान विद्या में महानिपुण होगये इनकी प्रशंसा आईन अकबरी में ग्रन्थकर्ता फ़हीम ने लिखी है कि ऐसा गानेवाला पिछले हज़ारा में कोई नहीं हुआ निदान तानसेन दौलतखां शेरखां बादशाह के पुत्र पर आशिक़ है उनके ऊपर बहुत सी कबिता करी तेहिपीछे दौलतखां के मरने पर श्रीबांधवनरेश रामसिंह बघेले के यहां गये और वहां से अकबर बादशाह ने अपने यहां बुला लिया तानसेन और सूरदासजी से बहुत मित्रताथी तानसेन जीने सूरदास की तारीफ़ में यह दोहा बनाया ॥

दो० किधौं सूरको शर लग्यो किधौं सूर की पीर ।
किधौंसूरको पदलग्यो तन मन धुनत शरीर ॥ १ ॥

तब सूरदासजीने यह दोहा कहा ॥

दो० बिधना यह जिय जानिकै शेष न दीन्हे कान ।
धरा मेरु सब डोलते तानसेन की तान ॥ २ ॥

इनके ग्रन्थ रागमाला इत्यादि महाकाव्य उत्तम के ग्रन्थ हैं ॥

तुलसीदास संवत् १६०१ में उत्पन्न हुये सरयूपारीण अर्थात् सरवरिया ब्राह्मण चित्रकूट के इलाके में राजापुर नामक ग्राम के रहनेवाले थे प्रथम तो पाण्डित्यके द्वारा अपना निर्वाह करते थे परन्तु अन्त को अपनी स्त्री के उपदेश से संन्यास धारण करके अयोध्यापुरी चित्रकूट काशी जी आदि तीर्थों में रहते रहे श्रीरामोपासक इन्हों ने इसी संन्यास धर्म्म में रामायण की रचना की है सात प्रकार से रामायण कवित्तावली दोहावली और विनय-

पत्रिका आदि बहुत अन्य काव्य कह मरण समय से पहले तुलसीदास को यह ज्ञान होगया था कि मैं अमुक दिन इस संसार से पधारूंगा तब यह दोहा लिख अपने मित्रों को दिखा दिया ॥ दो० ॥ संवत सोरहसै असी असी वरुण के तीर । श्रावणशुक्ला सप्तमी तुलसी तजे शरीर ॥ उसके लिखने के अनुसार उनका देहान्त हुआ ये षट्शास्त्री पण्डित थे ॥

द्विजदेव—महाराजा मानसिंह शाकद्वीपीय अवधनरेश संवत् १८८० के लगभग उत्पन्न हुये ये महाराज संस्कृत भाषा फ़ारसी अंगरेजी इत्यादि विद्या में महानिपुण थे प्रथम संवत् १९०७ के क़रीब इनको भाषा काव्य करने की बहुत रुचि थी इसी कारण शृंगारलतिका नाम एक ग्रंथ बहुत सुन्दर टीका सहित बनाया इनके यहां ठाकुरप्रसाद, जगन्नाथ, बलदेवसिंह इत्यादि महान् कवि थे अंत में इन दिनों अब क़ानून अंगरेजी का शौक़ हुआ था संवत् १९३० में देहान्त हुआ और इस देश के रईसों के भाग फूटगये ॥

पण्डित पुत्तीलाल त्रिपाठी तिरवानिवासी जिला फ़र्रुखाबाद के जो अष्टादश पुराण और कोष काव्यादि में अतिप्रवीण समस्या और कवित्तादि की रचना में अतिनिपुण हैं इन्होंने सामयिक कवित्त व दोहादि बनाये जो कि हिन्दी समाचारपत्रों में बहुधा देखने में आये हैं ये इस ग्रन्थकर्त्ता के ज्येष्ठभ्राता पण्डित बद्रीनाथजी के पुत्र हैं ॥

पद्माकर भट्ट—बांदावाले मोहन भट्ट के पुत्र संवत् १८३८ में उत्पन्न हुये ये कवि प्रथम आपा साहब अर्थात् रघुनाथ राव पेशवा के यहां थे जब पद्माकर जी ने यह कवित्त (गिरत गरेते निज गोदते उतारे ना) बनाया तो पेशवाने एक लक्ष मुद्रा पद्माकर को इनाम दिया तत्पश्चात् पीछे पद्माकर जी जयपुर में जाय सवाई जगत्सिंह के नाम जगद्विनोद नाम ग्रंथ बनाय बहुत रुपया हाथी घोड़े रथ पालकी लाय गंगासेवन में शेष काल व्यतीत किया गंगालहरी नाम ग्रन्थ इनका है ॥

ब्रह्मकवि राजा बीरबर का भोग है—ये महाराज कान्यकुब्ज द्विवेदी ब्राह्मण कानपुर से दक्षिण ओर यमुनाजी के समीप बारा अकबरपुर के रहने वाले थे अकबर शाह बादशाह के बड़े नामी मुसाहबों में शिरोमणि थे शास्त्र-विद्या में पण्डित दान में कर्ण शील का समुद्र धर्म्म कर्म्म में जमदग्नि बुद्धि में बृहस्पति सम सत्य पूंछिये तो राजा बीरबर जी को विप्रवंशावतंसशिरो-

मणि कहना चाहिये तो थोड़ा है क्योंकि उस समय से अब तक कोई और दूसरा ब्राह्मण ऐसे दर्जे को नहीं पहुँचा और न नाम चलाया जो आज तक कहावत चली जाती है कि उस मनुष्य वा उस लड़के का अथवा उस राजाकी बुद्धि को क्या कहना है वे तो मानों दूसरे बीरबर हैं उन्होंने जो काव्य भाषा में की है वह बहुत मनोरंजन है ॥

भूषण त्रिपाठी—टिकमापुर जिले कानपुर संवत् १७३८ में उत्पन्न हुये, रौद्र, वीर, भयानक ये तीनों रस जैसे इनकी काव्य में हैं ऐसे और कविलोगों की कविता में नहीं पाये जाते ये महाराज प्रथम राजा छत्रशाल परना नरेश के यहां छह महीने तक रहे तेहि पीछे महाराज शिवराज सुलंकी सितारा गढ़वाले के यहां जाय बड़ा मान पाया और जब यह कवित्त भूषणजी ने पढ़ा (इंद्र जिमि जम्भपर) तब शिवराज ने पांच हाथी और पचीस हज़ार रुपया इनाम दिया इसी प्रकार से भूषण ने बहुत बार बहुत २ रुपया हाथी, घोड़ा, पालकी इत्यादि दान में पाये ऐसे २ शिवराज के कवित्त बनाये हैं जिनकी बराबर किसी कवि ने वीर यश नहीं बनाय पाया निदान जब भूषण अपने घर को चले तो परना होकर राजा छत्रशाल से मिले छत्रशाल ने विचारा अबतो शिवराज ने इनको ऐसा कुछ धन धान्य दिया है कि हम उनका दशवां हिस्सा भी नहीं देसक्के ऐसा शोच विचार कर चलते समय भूषण की पालकी का बाँस अपने कन्धे पर धरलिया ब्राह्मण कोमल हृदय तो होतेही हैं भूषणजी ने बहुत प्रसन्न है यह कवित्त पढ़ा ॥

साहू को सराहौं की सराहौं छत्रशाल को ॥ और दूसरा यह कवित्त बनाया ॥ तेरी बरछी ने बरछीने है खलनके ॥ और दो दोहा बनाय छत्रशाल को दे घर में आये ॥

दो० एक हाड़ा बूंदी धनी मरद महेवावाल ।
शालत औरंगजेब के ये दोनों छत्रशाल १ ॥
ये देखो छत्ता पता ये देखो छत्रशाल ।
पे दिल्ली की ढाल ये दिल्ली ढाहनवाल २ ॥

भूषणजी थोड़े दिन घरमें रह बहुत देशान्तरों में घूम २ रजवाड़ों में शिवराज का यश प्रकट करते रहे जब कुमाऊं में जाय राजा कुमाऊं के यश में यह कवित्त पढ़ा (उलदत्त मद अनुमद ज्यों जलद जल) तब राजा ने शोचा कि ये कुछ दान लेने आये हैं और जो हमने सुना था कि शिवराज ने लाखों

रुपया इन को दिया सो सब झूठ है ऐसा विचार हाथी घोड़े मुद्रा बहुत कुछ भूषणके आगे किया भूषण जी बोले इसकी अब भूख नहीं इसलिये यहां आये थे कि देखैं शिवराज का यश यहांतक फैला है या नहीं--इन के बनाये हुये ग्रन्थ शिवराजभूषण १ भूषणहजारा २ भूषणउल्लास ३ दूषणउल्लास४ ये चारग्रन्थ सुने जाते हैं कालिदासजी ने अपने ग्रन्थ हजारा की आदि में ७० कवित्त नौरस के इन्हीं महाराज के बनायेहुये लिखे हैं ॥

मदनगोपाल--ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण फतूहाबाद के निवासी थे इन्हों ने संवत् १८७६ में बलिराम पुर के महाराज दिग्विजयसिंहजीके पिता अर्ज्जुनसिंहके नाम से अर्ज्जुनविलास नामक ग्रन्थ बनाया ये अच्छे कवि थे उस ग्रन्थ में इन्हों ने सब पदार्थों का वर्णन संक्षेप से किया है और ग्रन्थ बनाने के पश्चात् थोड़ेही दिनों में इस असार संसार को छोड़ दिया ॥

मतिराम--ये महाराज भाषाकाव्य के आचार्यों में गिने जाते हैं हिन्दुस्तान में बहुधा बड़े राजों महाराजों के यहां थोड़े थोड़े दिन रहे और राजा उदान्तचन्द्र कुमाऊं नरेश और भाऊसिंह हाड़ा छत्रशाल राजा कोटाबूंदी और शंभुनाथ सुलंकी इत्यादि के यहां बहुत दिनों तक रहे ललितानाम अलंकार ग्रन्थ राव भाऊसिंह कोटावाले केनामसे बनाया और छन्दसार पिंगल फतेशाह बुंदेला श्रीनगर के नाम से रचा और रसराजग्रन्थ नायिकाभेद का बहुतसुंदर बनाया है ॥

यशवन्तसिंह--बघेले क्षत्रिय तिरवानामक ग्राम कान्यकुब्जनगरसे छहकोस दक्षिणके राजा थे संस्कृत में पण्डित काव्यरचना में बड़े कवि समर में शूर योग तप में योगी पण्डित कवि गुणी लोगों का आदर सत्कार बहुत करते थे संस्कृत के १८ हों पुराण उन्हों ने अपने पुस्तकालय में रक्खे थे वे अब तक उनके पौत्र राजा उदितनारायणजी के यहां विद्यमान हैं भाषाकाव्य की रचना करने में बड़े कुशल थे शृंगारशिरोमणि शालहोत्र दो पुस्तकों की रचना की जिनमें अपना सम्भोग यशवन्त कहा है इन महाराज के कोई पुत्र न था इस कारण अपने भाई का पुत्र गोद लिया था और तालाब और श्रीअन्नपूर्णाजी का मन्दिर बनवाने के मनोरथ से तीन लक्ष रुपये खर्च करनेका संकल्प करके काशीजी से बहुत उत्तम पाषाण का मन्दिर और तालाब का चित्र मँगवाकर ताल और मन्दिर बनवाने का प्रारम्भ किया परन्तु तालाब तो महाराजजी के मनमाना बनचुका और मन्दिर पनियां सोत से जुड़कर पृथ्वीतल तक आने पाया था कि एक दिन रात्रिसमय महाराजको कुछ ज्वर आया दो चार दिन

ज्यों त्यों कर बीते अन्तको अवश होकर विक्रम के संवत् १८७१ में स्वर्गवासी हुये उनके पश्चात् छोटे भाई पीतमसिंहजी जो उनके स्थानाधिपहुये उस मन्दिर को पूर्ण किया जिन्हों ने देखा है वह कहते हैं कि गंगा यमुना के मध्य में ऐसा दूसरा मन्दिर नहीं है ॥

लालकवि लल्लू लालजी—गुजराती आगरावाले संवत् १८९२ में उत्पन्न हुये महाराज वार्तिक भाषा की बोलचाल में प्रथम आचार्य्य हैं इनका बनाया हुआ प्रेमसागर ग्रन्थ इस बात का साक्षी है और दोहा चौपाई इत्यादि सीधे २ छन्दों के बनाने में भी निपुण थे सभाविलास २ माधवविलास ३ वार्तिक राजनीति ४ इत्यादि इनके ग्रन्थ बहुत सुन्दर हैं ॥

बन्दीदीन दीक्षित—ग्राम दसवासीनिवासी ज़िला उन्नाम जो कि संवत् १९२० में उत्पन्न हुये जिन्हों ने महाभारत भारतखण्ड भाषा आल्हा छन्द में बनाया उक्त पण्डित भाषा काव्यादि में बड़े प्रवीण हैं सूरसागर रामायणादि भाषा के ग्रन्थों में बड़े विद्वान् हैं महाभारत आल्हखण्ड के अवलोकन करने से उनका विद्वत्त्व प्रकट होता है कथनकी कोई आवश्यकता नहीं है ॥

बिहारीलाल चौबे ब्रजवासी सं० १६०२ में उ० ये कवि जयसिंह कछवाहे महाराजा अजमेर के यहां थे जयपुरकी तारीफ़ देखनेसे प्रकट है कि ये महाराजा मानसिंह से जो संवत् १६०३ विद्यमान थे संवत् १८७६ तक तीनि जयसिंह होगये हैं पर हमको निश्चयहै कि ये कवि महाराजा मानसिंह के पुत्र जयसिंह के पास थे जो महागुणग्राहक थे और दूसरे सवाई जयसिंह इन जयसिंह के प्रपौत्र संवत् १७५५ में थे यह बात प्रकट है कि जब महाराजा जयसिंह किसी एक थोरी अवस्थावाली रानी पर मोहित है रात दिन राजमन्दिर में रहने लगे राज्य के सम्पूर्ण काज काम बन्दहोगये तब बिहारीलाल ने यह दोहा बनाय राजा के पासतक किसी उपाय से पहुँचाया ॥ दोहा ॥ नहिं पराग नहिं मधुररस नहिं विकाश यहि काल । अली कलीही सों बिंध्यो आगे कौन हवाल १ ॥ इस दोहापर राजा अत्यन्त प्रसन्न है १०० मोहर इनाम दै कहा इसीप्रकार के और दोहा बनावो बिहारीलाल ने ७०० दोहा बनाये और ७०० अशरफ़ी इनाम में पाईं यह सतसई ग्रन्थ अद्वितीय है बहुत कवि लोगों ने इसके ढंगपर सतसई बनाकर अपनी कविता का रंग जमाना चाहा पर किसी कविको सुर्खरुई प्राप्त नहीं हुई यह ग्रन्थ ऐसा अद्भुत है कि हमने १८ तिलक तक इसके देखे हैं और आजतक तृप्ति नहीं है लोग कहते हैं कि अक्षर कामधेनु होते हैं सो

वास्तवमें इसीग्रंथके अक्षर कामधेनु दिखाई देते हैं सब तिलकोंमें सूरतिमिश्र आगरे वाले का तिलक विचित्र है औ सब शतसैयोंमें विक्रम शतसई औ चन्दनशतसई इसके लगभग हैं ॥

सुखदेवमिश्र—ये कवि भाषा साहित्य के आचार्योंमें गिनेजाते हैं प्रथम राजा अर्जुनसिंह के पुत्र राजाराजसिंह गौरके यहां जाय कविराजकी पदवी पाय वृत्त विचार नाम पिंगल सब पिंगलोंमें उत्तम ग्रन्थको रचा तत्पश्चात् राजाहिम्मतसिंह बंधलगोती अमेठी के यहां आय छंदविचार नाम पिंगल बनाया फिर नव्वाब फ़ाज़िलअलीखां मंत्री औरंगज़ेब बादशाह के नाम भाषा साहित्य में फ़ाज़िल-अली प्रकाशनाम ग्रंथ महाअद्भुत रचा इन तीनों ग्रंथों के सिवाय हमने वहीं लिखा देखा है कि अध्यात्मप्रकाश १ दशरथराय २ ये दो ग्रंथ और भी इन्हीं महाराज के किये हुये हैं ॥

सुन्दरकवि—ब्राह्मण ग्वालियरनिवासी संवत् १६८८ में उत्पन्न हुये ये महाराज शाहजहां बादशाहके कविथे पहिले कविराय का पदपाय पीछे महाक-विराय की पदवी पाई इनका बनाया हुआ सुन्दरशृङ्गार नामग्रन्थ भाषा साहित्य में बहुत सुन्दर है इन्हीं कवि के पदमें यह अगन पड़ाथा (सुन्दर कोप नहीं सपने) यह कवित्त इस ग्रन्थ में है ॥

सबलसिंह—चौहान क्षत्री चन्द्रगढ़ के राजा थे इन महाराज के कोई पुत्र न था इसलिये बहुतसे सज्जन तांत्रिक मांत्रिक पण्डित बुलाकर पुत्रोत्पन्न होने के हेतु देवपूजनका आरंभ कराया बहुत दिनोंतक पूजन होतारहा परन्तु पुत्र होने की कुछ आश न हुई जब इस बात से राजा और पण्डित सब निराशहुये तब सब पण्डितों ने एक मत होकर कहा कि आपका नाम चलता यदि आपके पुत्र होता सो उस नाम के टूट जानेका संदेह था तिससे उत्तम यहहै कि हम सब लोग मिलकर आपके नाम से एक पुस्तक की रचना करें जिससे हजारों वर्ष आपका नाम इस भूमण्डल पर बना रहै इस बात को राजाने स्वीकार किया और आज्ञादी कि महाभारत जो संस्कृत में है उसको भाषाकाव्य में कहो तब सब पण्डितों ने विक्रमकेसंवत् १८२७ में महाभारतको भाषा छन्दप्रबन्धमें कहने का आरंभ किया और कुछ कालमें सम्पूर्ण भारत को भाषाकाव्य में सबलसिंह जी के नाम से कहा है ॥

सूरदास ब्राह्मण—ब्रजवासी बाबा रामदासके पुत्र बल्लभाचार्य्यके शिष्य संवत् १६४० में उत्पन्न हुये इन महाराज के जीवनचरित्रों से सब छोटे बड़े आगाह

हैं भक्तिमाल इत्यादि में इनकी कथा विस्तारपूर्वक है सूरसागर इनका बनाया ग्रंथ विख्यात है हमने इनके पद साठहज़ार तक देखे हैं समस्त ग्रंथ कहीं नहीं देखा इनकी गिनती अष्ट छाप अर्थात् व्रजके आठ महाकवीश्वरों में है ॥

सहजराम-ये सनाढ्य ब्राह्मण पञ्जाब के रहने वाले थे और यहां सुलतांपुर के ज़िले में जो बंधुवा ग्राम है वहां के रहनेहारे एक नानकसाही ब्राह्मण के शिष्य हुये ये भी बड़े महात्मा हुये हैं और सहजराम रामायण प्रह्लादचरित ये दो ग्रन्थ इन्होंने रचित किये और संवत् १२०५ में इस संसार से निराश हो स्वर्गवास किया ॥

नन्ददास ब्राह्मण-रामपुरनिवासी विट्ठलनाथजी के शिष्य संवत् १५८५ में उत्पन्न हुये इनकी गणना अष्ट छाप में है अर्थात् व्रजभूमिके आठ महानन्द कवि सूर १ कृष्णदास २ परमानन्द ३ कुंभनदास ४ चतुर्भुज ५ छीत ६ नंददास ७ गोविन्ददास ८ में ये भी एक हैं इनकी बाबत यह मसल है (और सब गढ़िया नंददास जड़िया) इनके बनाये हुये ग्रन्थों के नाम ये हैं नाममाला १ अनेकार्थ २ पंचाध्यायी ३ रुक्मिणीमंगल ४ दशमस्कन्ध ५ दानलीला ६ मानलीला ७ और इन ग्रन्थों के सिवाय हज़ारों पद इनके हैं इन आठों महाकवीश्वरों के रचे अनेक ग्रन्थ आजतक व्रज में मिलते हैं ।

हुलासराम-ये शाकद्वीपीय ब्राह्मण ज़िले बारहबंकी तहसील फतेपुर ग्राम रामनगर के रहनेवाले थे इनके पिताका नाम प्रयागदत्त था इन्होंने बुद्धिप्रकाश बेतालपंचविंशतिका लंकाकाण्डआदि ग्रन्थ निर्मित किये १८४५ संवत्‌में उत्पन्न हुये और १९१२ में मृत्युवश हुये ॥